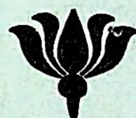
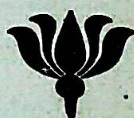


# विपत्ति नाशक टोटके



## (गंडे ताबीजों द्वारा)




—: तांत्रिक :—

पंडित वाई. एन. झा "तूफान"



प्रकाशक

© 212696

**अमित पाकेट बुक्स**

ज्ञान मार्किट, नज़दीक चौंक अड्डा टांडा

जालन्धर-8

मूल्य 40/-

*प्रकाशकः*
**अमित पाकेट बुक्स**
चौंक अड्डा टांडा, जालन्धर।

**चेतावनी**– इस पुस्तक का उद्देश्य केवल प्रस्तुत विषय सें संबधित जानकारी प्रदान करना है। पुस्तक को पढ़कर यदि कोई व्यक्ति किसी टोने-टोटके, गण्डे, तावीज अथवा नक्श आदि का प्रयोग करता है और उससे उसे कोई लाभ नहीं होता या फिर किसी वजह से नुकसान होता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक, लेखक या मुद्रक की कतई नहीं होगी क्योंकि हमारा उद्देश्य केवल विषय से परिचित कराना है। किसी गंभीर रोग अथवा उसके निदान की दशा में अपने योग्य विशेषज्ञ से अवश्य परामर्श लें।

*लेखकः-*
सिद्ध तांत्रिक
पंडित वाई. एन. झा "तूफान"
टांडा रोड़, टोवरी मुहल्ला, मकान न. 61
जालन्धर शहर – 144 004 पंजाब (भारत)
फोन : 0181-490311

*मुद्रक*
योजना प्रिंटिंग प्रैस, जालन्धर।

# भूमिका

पाठको !

आपके कमल रूपी करों में–यह पतित पावन पवित्र– ''गंडे–ताबीज, टोटके, यंत्र--मंत्र शास्त्र'' समर्पित करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि इसमें वर्णित समस्त गंडे–ताबीज यंत्र–मंत्र, टोटके आदि प्रामणिक हैं, शोधित हैं.......और कई वर्षों के अध्ययन–रिसर्च, सिद्धि साधना से संतुष्ट होकर उद्धत कर रहा हूं। जो अन्य पुस्तकों में उपलब्ध नहीं है।

''वर्तमान कलिकाल में''–धर्म–कर्म व मानवता से विमुख मानव अनेकानेक रोगों, ब्याधियों, दुखों, ग्रह अनिष्टों एवं विभिन्न समस्याओं से ग्रसित होकर त्राहि–त्राहि कर रहा है। डाक्टरों–वैद्यों–हकीमों के पास भटक रहा है परन्तु–''लाभ शून्य,'' क्योंकि एक रोग समाप्त होता है तो दो उत्पन्न हो जाते हैं, एक समस्या निपटती है, तो तीन मुँह बाए सामने खड़ी हो जाती हैं, मन की कामना–हृदय का सुख जहां का तहां ही धरा रहा जाता है और व्यक्ति–''कि कर्त्तव्य मूढ़'' बनकर अपने भाग्य पर रोता रहता है।

मानवता के माप दण्ड को देखते हुए–इन्हीं समस्यावों के निवारण हेतु, पूर्व भी मैंने–यंत्र–मंत्र, रत्न, टोने टोटके पर आधारित कई पुस्तकों का लेखन कर चुका हूँ, जो कृत्तियां ''अमित पाकेट बुक्स'' से प्रकाशित हैं और देश–विदेश के हज़ारों–लाखों व्यक्ति लाभन्वित हो रहे हैं, परन्तु इस शास्त्र की उपयोगिता व प्रयोग–अद्वितीय है, क्योंकि इनमें वर्णित सभी प्रयोग प्रामाणिक एवं शोधित–रिसर्च किया हुआ है, जो अत्यन्त ही सरल प्रयोग है। यंत्र साधना हेतु जो भी ''मंत्र का प्रयोग किया गया है, उन मंत्रों की सिद्धि साधारण जप से सहज ही हो जाती है, जिसे सभी गृहस्थ कर सकते हैं।

इस पवित्र पावन ग्रन्थ में गंडे व टोटकों ने तो चार चांद लगा दिए हैं, क्योंकि इनके उपयोग में सिद्धि साधना–जप–तप–मंत्र आदि की कोई आवश्यकता नहीं होती। केवल विधि अपनायिए और चमत्कारिक लाभ पायिए। इसमें वर्णित गंडे–ताबीज के द्वारा आप किसी भी दुःखों

से, रोगों से, अनिष्टों से निपटने में तुरन्त कामयाबी ले सकते हैं और सभी कामना पूर्ण कर सकते हैं।

यह तो आज "विज्ञान" और वैज्ञानिकों ने भी मान लिए, कि नवराहों के प्रभावों से मानव प्रभावित होता है। जी हाँ ! वैज्ञानिकों ने तो आज माना है, परन्तु सृष्टि–ब्रह्माण्ड के रचयिता आदि देव महा देव ने सृष्टि काल में ही अपनी वाणी से प्राणी को शास्त्रों द्वारा संदेश दिए हैं, कि–"नवग्रह" मेरे गण हैं और मेरे आदेशानुसार वे जीवों को दुःख सुख पहुंचाते हैं। अतः हमारी पूजा अराधना में इनकी पूजा भी होनी चाहिए–हमारे जो भक्तगण–नवग्रह व उनकी माता की अराधना करेंगे, उन्हें "नवग्रह" अनिष्ट नहीं प्रदान करेगा।

अतः नवग्रह अनिष्ट निवारण हेतु मैंने एक अत्यन्त ही गोपनीय यंत्र साधना विधि का वर्णन इस पुस्तक में किए हैं, जो अन्य पुस्तकों में उपलब्ध नहीं है। "नवग्रह सप्त माता यंत्र"–द्वारा नवग्रहों के अनिवष्ट निवारण विधि, एवं शनि–साढ़े साती निवारण यंत्र, शनि यंत्र साधना एक–नवीन विधि द्वारा वर्णित है, सरल व प्रामाणिक है, जिसे 30 वर्ष के गहन अध्ययन–परिक्षण के पश्चात् ही, आपके कल्याण हेतु वर्णित कर रहा हूं, जिसे जीवन में अपना कर ग्रह अनिष्टों को तूफानी गति से दूर भगावें और जीवन सफल बनावें।

आपको, रोगों के निवारण हेतु, ग्रह–अनिष्टों के निवारण हेतु, मनोकामना पूर्ति–हेतु, किसी प्रकार का सिद्ध यंत्र, गंडे, असली रत्न आदि की आवश्यकता हो, तो नीचे लिखे पते पर पत्राचार करके हमसे लाभ उठा सकते हैं, मैं आपके समस्त पत्रों का उत्तर देने हेतु–"कृत संकल्ति हूँ"। आप इस पुस्तक में वर्णित प्रयोगों को जीवन में अपना कर लाभ उठावें, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ–

सिद्ध तांत्रिक
पंडित वाई. एन, झा "तूफान"
टांडा रोड़, टोवरी मुहल्ला, H.No-61,
जालन्धर शहर–144 004
पंजाब–भारत

# विषय सूची

## धन प्रदायक, सफलतादायक, प्रगतिदायक विभिन्न टोटके खण्ड

| क्रम नं० | टोटके | पेज नं० |
|---|---|---|



## नवग्रहों की अनिष्टता शांत करने हेतु महान चमत्कारिक टोटके



## वनस्पतियों द्वारा अलग–अलग ग्रहों की अनिष्टता शांत करने हेतु विविध तेजस्वी टोटके



## बालक की नाल के गुण

| क्रम नं० | टोटके | पेज नं० |
|---|---|---|

## ताबीजों द्वारा कष्ट निवारण खण्ड



## महाशक्ति यन्त्र खण्ड

| क्रम नं० | टोटके | पेज नं० |
|---|---|---|

## असाध्य रोग व विभिन्न प्रकार की बिमारियों से मुक्त होने का विभिन्न यन्त्र खण्ड

## गंडे, ताबीज, टोने-टोटके और यंत्र-मंत्र का उद्भव काल

गंड़े, ताबीज, टोने–टोटके और मंत्रों का उद्भव काल अज्ञात है। यूं तो "ऋग्वेद" में वर्णित है कि ये सभी "त्रिलोकेश्वर महादेव शिव के मुख" से उत्पन्न हुए हैं पन्तु उद्भव काल अज्ञात है। इसका प्रचल कब से हुआ तथा गंड़े–ताबीज टोने–टोटके को सृष्टि में सर्वप्रथम आरम्भ किसने दिया यह वेदों में भी वर्णित नहीं हैं। क्योंकि ऋग्वेद आर्य जाति का विश्व भाषा का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है और उपरोक्त समस्त महाशक्तियों का उसमें अतिविकसित वर्णन है। अतः निश्चित है कि इससे पूर्व उपरोक्त तत्वों की उत्पत्ति हो चुकी है।

गंडे तीबीज टोने–टोटके व मंत्रों के ज्ञान विश्व के सभी जातियों में किसी न किसी रूप में विद्यमान था और है तथा रहेगा भी। कलियुग के प्रारम्भ में यह विद्या अपने चरम विकाश पर था। उतना तो अब नहीं है, परन्तु उसका अस्तित्व आज भी सशक्त व विद्यमान है जितना कि पौराणिक काल में था। अंतर मात्र इतना ही है कि पूर्व में प्रायः समस्त ऋषि–महर्षि इस विद्या के ज्ञाता थे और अब यह विद्या उंगली पर गिनने लायक सिद्ध प्राप्त मर्मज्ञों के पास ही तक सीमित रह गया है।

गंड़े, ताबीज, टोने–टोटके, मंत्र व रत्न की शक्ति को आप देख नहीं सकते, केवल उसका अनुभव कर सकते हैं। इसका निर्दोष प्रयोग अद्भुत प्रभावशाली और चमत्कार पूर्ण होता है। इनमें निहित अदृश्य शक्ति अपने चमत्कार से उन अजेय रहस्य की सृष्टि करती है, जिसकी व्याख्या कर पाने में, "वर्तमान विश्व" प्रगति के चरम शिखर पर आसीन होने के बावजूद भी परास्त हो जाता है।

## गंड़े, ताबीज, टोने-टोटके, मंत्र-यंत्र रत्न आदि की, मानव को आवश्यकता क्यों?

मानव प्राणी अनिष्ट ग्रहों से फली भूत होकर, दुश्मनों द्वारा कराए गये जादू टोने के प्रभावों से एवं प्रकृत्ति प्रदत्त शारीरिक व्याधियों से पीड़ित होकर नाना प्रकार के दुख भोग रहे हैं। रोगी व्यक्ति को अनेकों उपचार करवाने के बाद भी यदि स्वास्थ्य लाभ न मिलता हो, सांसारिक सुख समृद्धि प्राप्त करने में यदि आप पिछड़े हुए हैं तो ऐसी अवस्था में गंड़े, ताबीज, टोने–टोटके, मंत्र व रत्न द्वारा आप लाभ उठा सकते हैं क्योंकि उनके अन्दर परमात्मा की शक्तियों का निवास होता है। ये महाशक्तियां रोग, शोक व कष्ट आदि से छुटकारा तो दिलाती ही हैं, साथ ही साथ सुख समृद्धि सन्तान और समस्त सफलताएं भी हासिल कराती हैं।

# गंड़े, ताबीज, टोने-टोटके, मंत्र आदि का परिचय

## "गंडा" निर्माण विधि

सर्वप्रथम हरे, लाल या काले धागों को हथेलियों में बंटकर तैयार किया जाता है और उस बंटे धागों (डोरा) में – "विविध उपचार के नियमानुसार" जो "गांठ" बाधें जाते हैं, उसे गंडा कहा जाता है।

## "गंडों के प्रकार"

"गंडे" कई प्रकार के होते है :–

1. साधारण गंडा (गांठ अथवा गिरह)
2. जड़ी–बुटी बांधकर तैयार किया गया गंडा
3. तीसरे प्रकार का वह गंडा होता है, जिसमें गिरह लगाते समय मंत्र आदि पढ़े जाते हैं।
4. चौथे प्रकार का गंडा वह होता है जिसमें ताबीज आदि लिखकर बांधे जाते हैं।
5. पांचवे प्रकार का वह गंडा होता है जो कुराण की आयतों को पढ़कर या लिखकर, – लिखे हुए पत्र को हरे डोरे में बांधकर तैयार किया जाता है।
6. छठे प्रकार का गंडा वह होता है जो वेदों से प्राप्त मंत्रों व यंत्रों को भोजपत्र या कागज पर लिखकर उसे काले या लाल रंग के डोरे से गांठकर तैयार किए जाते हैं।
7. सातवें प्रकार का गंडा टोटकों पर आधारित है।

कुछ "गंडे" जैन धर्म व बौद्ध धर्म के विधि अनुसार भी बनाए जाते हैं और इन समस्त गंडे का उपयोग मानव कल्याण के लिए होता है।

# "ताबीज" का "परिचय" व "निर्माण विधि"

"ताबीज" उर्दू भाषा का शब्द है जिसे हिन्दी व वैदिक भाषा में – "यंत्र" (जंत्र) कहते हैं। फारसी भाषा में इसी यंत्र को "नक्स" कहते हैं और अंग्रेजी नाम यंत्र का "एम्यूलेट" है।

सिद्ध किए हुए हुए मंत्रों से अभिमंत्रित भोजपत्र या कागज के टुकड़े पर विशिष्ठ प्रकार के निर्धारित शब्दों, अंकों व आकृतियों को लिखकर, उसे किसी विशेष धातु के बने खोल में बंद कर दिया जाता है; जिसे ताबीज या जंत्र कहते हैं।

"ताबीज" विशिष्ठ प्रकार के (सोना, चांदी, तांबा आदि) धातुपत्रों में खुदवाकर भी तैयार किये जाते है। जिसमें अमोध शक्ति छिपी होती है। आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से "ताबिज्तव विकाश अर्थात् यांत्रिक विकाश" की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है। इस

यांत्रिक शक्तियों का निर्माण "देवासुर संग्राम" से पूर्व ही हो चुका था। उस समय देवी–देवताओं ने ऐसे स्वचालित यंत्रों का निर्माण किया जो शत्रुवों पर प्रहार करके पुनः पूर्व स्थान पर लौट आता था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण सुदर्शन–चक्र, अग्नि बाण, ब्रह्म शक्ति आदि हैं।

पूर्व काल के यांत्रिक परिभाषावों को लेकर ही आज के वैज्ञानिक ने परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, नेपाम बम आदि विश्व संघारक यंत्र तैयार किया है, जो छोटा आकार का होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखता है।

इन यंत्रों को हम भौतिक यंत्रों के नाम से जानते हैं। परन्तु आज इस परम पुस्तक में जिन यंत्रों या ताबीजों का वर्णन करने जा रहा हूं उसका नाम "सिद्धि यंत्र" है, जो आड़ी–तिरछी रेखावों, बिन्दुओं, अंकों, चतुर्भुजों आदि से सज्जित होकर संचालित होते हैं। भौतिक यंत्र दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत प्रभावित होता है, किन्तु उसकी अपेक्षा सिद्ध यंत्र मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

इन यंत्रों में इतनी शक्तियां छिपी हुई हैं जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव में बदल सकता है।

ये "ताबीज" (जंत्र) जो इतनी विस्फोटक उर्जा अपने गर्भ में छुपाए हैं, आखिर क्या रहस्य है इसका?

## "ताबीज" का रहस्य व "मंत्र संसार"

ताबीज के रहस्यों को समझाने हेतु सर्वप्रथम हमें मंत्र संसार में पर्दापण करना होगा, तभी हम इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझा सकेंगे।

यह सम्पूर्ण विश्व परमात्मा का स्वरूप है–साक्षात परमात्मा है। उसी प्रकार शब्द मात्र भगवन्नाम है। जगत का मूल कारण शब्द है – यह बात "स्फोट वाद" प्रतिपादित करता है।

प्रत्येक शब्द एक कंपन उत्पन्न करता है और प्रत्येक कंपन–एक "रूप" व्यक्त करता है। ग्रामोफोन के रेकार्ड पर कुछ रेखाएं मात्र होती हैं, जो आंखों से नहीं दिखती। इन्ही रेखावों पर सूई घूमती है जो "शब्द" उत्पन्न होता है। ये रेखाएं गाने वाले के शब्द के कम्पन से रेकार्ड पर बनी हैं। वर्षों पहले फ्रांस में किसी ने एक ऐसा यन्त्र (ताबीज) बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने पर यन्त्र में लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछलकर एक "आकृति" बना देते थे। एक भारतीय सज्जन ने जब उस यंत्र के सम्मुख "काल भैरव" की स्तुति गायी तो यन्त्र के पर्दे पर रेत के कणों से काल भैरव का रूप बन गया।

मन्त्र शब्दों का समूह है। मंत्र ईश्वरीय शक्ति है, यह निर्माण का मार्ग है, यह शिव और शक्ति का प्रतीक है और साक्षात देवता है, गॉड व अल्लाह है। मंत्र बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षातकार करते हैं। शब्दों के समूह मंत्रों की अपनी ही भाषा है, अपना ही स्वर है – सुर है और अपना ही ताल

है। जो मानव इस महान सुर–ताल को समझ लेता है, जान लेता है, वह अपने परमेश्वर के समीप हो जाता है, क्योंकि हर मंत्र का यंत्र का देवता होता है। जब मंत्र को अति श्रद्धापूर्वक सुर व ताल में लयवद्ध होकर बोला जाता है तो यंत्र व मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उनकी सम्पूर्ण कामनावों की पूर्ति करते हैं।

"शब्दों" से कम्पन होता है। सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है। इसलिए मंत्रों की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किन्तु शब्दों में क्या शक्ति है यह सर्वज्ञ ऋषि महर्षि ही जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की रचना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके।

इन्हीं विचारधारा को लेकर अनेक तांत्रिक ग्रन्थों की रचना ऋषि–महर्षियों ने की। युग का परिवर्तन होता गया। युग परिवर्तन के प्रभाव से मन्त्रों का प्रभाव घटा। क्योंकि इन शक्तियों को प्राप्त करके जीव गलत कार्य करने लगे। अतः ऋषि–महर्षियों ने मंत्र को गुप्त रखने की विधि अपनायी। इन विद्या को जीवित रखने के लिए उन्होंने मंत्र की ऐसी गुप्त विधि का निर्माण किया, जिसे यंत्र (ताबीज) कहा गया।

## "तंत्र" किसे कहते हैं?

"यंत्र" (ताबीज) का शब्दार्थ है – संयमित करना, केन्द्रित करना। ताबीज धारण करने से मंत्र के अधिंष्ठात देवता से जातक का सम्बन्ध स्थापित होता है। उसका मन संयमित और केन्द्रित हो जाता है। मंत्र देवता की शक्ति यंत्र में प्रवेश कर यंत्र को चैतन्य और जाग्रत करती है। इसी कारण यंत्र धारण करने पर यंत्र में भरी चैतन्य शक्ति यंत्र से निकलकर तुरन्त कार्य करना प्रारम्भ कर देती है। इसके अन्दर जो भक्ति–भाव से प्रतिक्रिया होती है उसे ही हम "तंत्र" कहते हैं और इसके बारे में पूर्ण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को "तांत्रिक" की संज्ञा दी गई है।

## टोने-टोटके किसे कहते हैं?

किसी का अनिष्ट करने हेतु – सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित जल, कच्ची लस्सी, मांस के टुकड़े, सिन्दूर, सूई, लड्डु, लोंग, इलायची, ताबीज आदि विभिन्न वस्तुएं किसी के घर–आंगन में फेंक देना या किसी व्यक्ति को धोखे से खिला देने की कर्मा को – "टोना" कहते हैं। टोना निवारण हेतु, भला हेतु जिस विधि का उपयोग किया जाता है, उसे "टोटका" कहते हैं। टोटका द्वारा उपाय करने पर मंत्र सिद्धि–साधना की आवश्यकता नहीं होती केवल प्रयोग विधि, टोटके हेतु वस्तुएं प्राप्त करने की विधियों का पालन सही ढंग से करना पड़ता है, तभी सफलता मिलती है।

# प्रथम खण्ड

## गंडे द्वारा कष्ट निवारण के उपाय

### *यंत्र व गंडे तैयार करने वाले तांत्रिकों व मौलवियों के लिए निर्देश*

1. '''श्रद्धा'' गंडे या ताबीज का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर गंडे का निर्माण करना जीवन है।

2. गंडे या ताबीज के प्रति सन्देह करने से गंडा या ताबीज शक्तिहीन हो जाता है अर्थात मृत हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती।

3. जिस प्रकार स्त्री अपने पति को परमेश्वर मान कर मोक्ष प्राप्त करती है उसी प्रकार गंड़े या ताबीज को परमेश्वर मानें तभी सफलताएं प्राप्त होती।

4. गंडा (गांठ) बांधने काल व ताबीज सिद्धि करने काल अपने मन को, अपने कर्म को परमात्मा को समर्पित कर दें। वह आपके अन्तः करण में विद्यमान है। यदि आप में उनके प्रति निष्ठा है, प्रेम है, लग्न है – सच्चाई है तो वे आपके सारे कार्यों को अवश्य सम्पन्न करेंगे। गंडा तैयार करने काल अपने इष्टदेवं से उज्ज्वल हृदय से कहें – हे प्रभु ! मैं तो एक कठपुतली मात्र हूं और यह महान ईश्वरीय कार्य कर रहा हूं। हे परमेश्वर ! अब इस पापी को यश, मान व सम्मान देना आपके हाथ में है।

इस प्रकार की भावना पैदा कर गंडे या ताबीजों का निर्माण करें तो देखें सफलता आपकी सहचारी होकर रह जायेगी।

5. परमेश्वर, अल्लाह प्रेम से पाये जाते हैं, तर्क या बुद्धि से ईश्वर कदापि न मिलते। इस लिए तर्क से दूर होकर ताबीज या गंडे का निर्माण करना चाहिए।

6. गंडे के हर गांठों में ताबीज के हर अंक तथा बीजों में देवि–देवता का वाश है, इसलिए सावधानीपूर्वक गंडे या ताबीज का निर्माण करें। जैसे ऋणात्मक तथा धनात्मक विद्युत आपस में मिलकर विस्फोटक रूप धारण कर लेती है, उसीं प्रकार गंडे का गलत गांठ तथा ताबीज में लिखे गलत बीज गलत अंकों की स्थापना आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं।

7. गंडा तैयार करने या ताबीज सिद्ध करने से पूर्व किसी तांत्रिक गुरू या मौलवी से परामर्श कर लें, बिना गुरू का यह कार्य आरम्भ करना लाभदायक नहीं होगा।

8. गंडे निर्माण करने का स्थान एकान्त हो, साफ तथा पवित्र हो। वहां कोई दूसरा न आए जाए और न ही वहां कोई शब्दार्थ हो।

9. गंडे व ताबीज (यंत्र) निर्माण वक्र क्रियाहीनता का अर्थ ही मृत्यु है। इसलिए स्नानादि से पवित्र होकर ही यह पवित्र कार्य आरम्भ करें।

10. ताबीज व गंडे के निर्माण काल कोशिश करें कि आपका मन एकाग्रचित्त तथा शान्त रहें।

11. शुभ मूर्हत व शुभ नक्षत्रों, वारों में ही गंडे व ताबीज का निर्माण करें।

12. ताबीज, गंडे एवं तंत्रों को जितना ही मान कल्याण के लिए लोगों के बीच बाटेंगे, उतना ही आप में अभूतपूर्व शक्ति भरती चली जाएगी।

13. बुरे कार्यों में, किसी का अनिष्ट करने हेतु गंडे, ताबीज व मंत्रों, टोने–टोटके आदि का प्रयोग भूल से भी न करें, वरना इस महापाप का भागीदार आप स्वयं बनेंगे और परमात्मा आपको कदापि न बख्शेंगे।

14. गंडे, ताबीज व मंत्र देवीय शक्तियों से निहित है। बुरे कार्यों में इस्तेमाल करने से इनकी शक्ति क्षीण हो जाती है।

15. यंत्र–मंत्र साधना में कुछ ऐसे भी यंत्र–मंत्र हैं जिनकी साधना हेतु श्मशान में जाना पड़ता है। यदि आपको वहां जाना अच्छा न लगता हो तो श्मशान की मिट्टी लाकर आसन के नीचे रखने पर श्मशान के बराबर सिद्धि प्राप्त होती है।

16. उपरोक्त कार्यों में पूर्ण पारंगत होने हेतु गुरू से परामर्श करते रहना चाहिए।

17. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, हिंसा और असत्य से जहां तक हो सके बचना चाहिए।

18. किसी भी धर्मशास्त्र की अथवा व्यक्ति की निंदा नहीं करनी चाहिए।

## कष्ट निवारण, सर्व मनोकामना पूर्ति हेतु, विभिन्न प्रकार के गंडे निर्माण व प्रयोग विधि

पाठको। गंडे–ताबीज का निर्माण व प्रयोग विधि समझाने से पहले मैं यह बता देना चाहता हूं कि इनमें प्रयोग आने वाले मंत्रों की साधना व सिद्धि बिल्कुल आसान है जो सर्व साधारण मानव भी कर सकते हैं।

### *लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गंडा निर्माण विधि*

पाठको। जब भी आपको समय मिले, उल्लू (चिड़िया) का पंख

घर में लाकर रख दें और दिवाली की रात को उस पंख में लाल डोरे से 5 गांठ (गिरह या गंडा) लगाकर माता लक्ष्मी का पूजन करें। यदि वैदिक पूजन करवाने का सामर्थ्य न हो तो स्वयं ही उल्लू के पंख को प्रतिमा या तस्वीर के नीचे दबाकर धूप–दीप दिखावें, प्रतिमा पर पुष्प व पुष्पमाला चढ़ावें, नैवेध चढ़ावें। तत्पश्चात् नित्य दिन स्नानादि से पवित्र होकर प्रातःकाल धूप दिखावें और संध्या के वक्त दीप जगावें।

उपरोक्त नियम में न तो कोई सिद्धि है न साधना लेकिन ऐसे व्यक्ति के घर में धन का अम्बार लगने लगता है। वह जो भी कार्य करता है उसी में सफलता प्राप्त होती है और लक्ष्मी उनके घर की दासी बनकर रह जाती हैं। यह विधि बड़ी अमोध है, आजमा कर देखें। इस विधि से अनेकानेक साधक लाभान्वित हो रहे हैं।

### *धन सम्पत्तिदायक गंडा*

पाठको। इस गंडे के निर्माण में भी कोई सिद्धि साधना की आवश्यकता नहीं होती।

''अबाबिल'' की दाहिनी आंख निकालकर सुखा लें, तत्पश्चात् उसे स्वर्ण ताबीज (सोने का बना यंत्र भरने हेतु खोल) में डाल उसे काले डोरे में गले में धारण करने से धन–सम्पत्ति व वैभव में पूर्ण वृद्धि होती है।

### *धन-धान्य से परिपूर्ण होने का गंडा*

खच्चर के दाँत का काले धागे से गंडा बनाकर (माला बनाकर) गले में धारण करने से भरपूर सम्पत्ति हासिल होती है।

### *मान-सम्मान पाने या खोयी हुई प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने हेतु गंडा*

पाठको। ''रवि–पुष्य योग'' में – ''मोर पंख का चन्दवा'' अर्थात मोर पंख के चांद के आकार वाला हिस्सा को काले कपड़े में लपेट कर, उसमें काले धागे का (डोरे का) तीन गांठ (गंडा) लगाकर दाहिनी भुजा में धारण करने से मान–सम्मान व पूर्ण प्रतिष्ठा हासिल होती है। यदि आप किसी कारण वश अपनी प्रतिष्ठा खो चुके हैं, या बढ़ाना चाहते हैं तो उपरोक्त प्रयोग कर के देखें। अवश्य सफलता मिलेगी।

### *भय विनाशक गंडा*

ध्यान रहे – ''नक्षत्र अश्लेषा'' हो, रात्रि के समय आंवले के वृक्ष की ''जड़'' – थोड़ा सा हिस्सा काट कर लें आवें, उसे काले रंग के कच्चे डोरे में, ''धारण'' दाहिने बाजू में करें तो चोर और शत्रुवों एवं जंगली जानवरों के भय से सदैव दूर रहेंगे अर्थात इन सबका आक्रमण आपके ऊपर नहीं होगा।

### *मुकद्दमा में जीत हासिल करने का गंडा*

वर्तमान युग में लोगों के साथ किसी न किसी प्रकार के लड़ाई–

झगड़े होते ही रहते हैं। परिणाम स्वरूप अदालत में जाना पड़ता है।

ऐसी परिस्थिति में वह व्यक्ति मार्गशीर्ष की पूर्णिमा के दिन मोर शिखा (एक प्रकार का वृक्ष है) की जड़ ले आवे। तत्पश्चात् रवि पुण्य नक्षत्र के दिन किसी कुमारी लड़की से लाल डोरा बनवावे। उस लाल डोरे से सात लपेटा मोर सिखा की जड़ में लपेटे, फिर उसमें गांठ (गंडा) लगा दे और उसे दायी भुजा पर बांधकर अदालत में जाए तो मुकद्दमे में उसकी जीत होती है। "मोर शिंखा की जड़" यदि आप प्राप्त करना चाहें तो पंडित वाई.एन. झां के कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

## भूत-प्रेत बाधा निवारक गंडा

रविवार के दिन "सहदेवी बुटी की जड़" उखाड़ कर ले आवें। उसे काले कपड़े के टुकड़े पर रखें, उसके साथ आठ काली मिर्च, आठ तुलसी के पत्ते रखकर, लपेटकर काले कच्चे सूत से "गंडा" तैयार करें और उसे रविवार के दिन ही प्रातःकाल (अर्थात दूसरे रविवार को) गले में धारण कर लें तो ऐसे जातक भूत–प्रेत बाधा से सदैव मुंक्ति पा लेते हैं। आजमा कर देखें।

## डाकिनी-पिशाचिनी भगाने का गंडा

रविवार के दिन "काले धथूरे" में सफेद सूत से 3 गांठ डालकर गंडा तैयार करें और उसे उसी दिन दांयी बाजू पर डाकिनी–पिशाचनी से पीड़ित व्यक्ति को बांध दिया जाय तो डाकिनी–पिशाचिनी भाग जाती है और वह जातक सदैव सुखी जीवन जीने लायक बन जाता है।

## "चूड़ैल बाधा" से मुक्ति हेतु गंडा

आए दिन चुड़ैल की चर्चा अखबारों में होती ही रहती है। कुमारी नवयौवना लड़की की यदि "अकाल मृत्यु" हो जाती है तो वह मृत आत्मा यदि किसी व्यक्ति पर प्रभावी हो जाती है तो उसकी मृत्यु तक संभव है।

ऐसी अवस्था में – "सफेद घुंघची की जड़" को काले डोरे से तीन गांठ लगावें और उसे चुड़ैल से प्रभावित व्यक्ति को शनिवार के दिन दाहिने बाजू पर बांध दे तो चूड़ैल भाग जाती है। किसी प्रकार की जड़ी–बुटी या तैयार गंडे प्राप्त करने हेतु पंडित वाई.एन. झा के कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

## "मिरगी रोग" से मुक्त होने का गंडा

"मिरगी" एक भयानक रोग होता है। यदि कोई व्यक्ति इस दुखदायी रोग से पीड़ित हो तो शनिवार के दिन "घोड़ बच" के सात अथवा ग्यारह टुकड़ों में काले डोरे से गांठ देकर माला की भांति तैयार करें और उस माला को मिरगी रोग से पीड़ित व्यक्ति के गले में धारण कराने से मिरगी से सदैव के लिए मुक्त हो जाता है।

### असाध्य मिरगी रोग निवारक गंडा

ताजा ''ब्रह्म बूटी'' की जड़ को उखाड़ लावें, उसमें काले सूत का गांठ लगाकर रोगी के गले में पहना दें तो आसाध्य मिरगी रोग से जातक को मुक्ति मिल जाती है। यह प्रयोग भी शनिवार के दिन ही करना चाहिए।

### पुरानी ''बवासीर रोग'' से मुक्ति पाने का गंडा

''बवासीर रोग'' भी आसाध्य रोग होता है, जिसे पकड़ता है वर्षों तक पीछा नहीं छोड़ता है। ऐसी परिस्थिति में –

''काले धथूरे'' की जड़ (मात्रा लगभग छः भाग) काले डोरे के सहारे कमर पर बांधनें से पुरानी से पुरानी बवासीर रोग ठीक हो जाता है। आज़मा कर देखें, अनेकों को फायदा पहुंचा है।

### ''बवासीर'' निवारक एक और गंडा प्रयोग

पाठको। ''बबूल की वृक्ष'' में कभी–कभी एक ऐसा पौधा उग आता है जिसका पत्ता आम के पत्तों जैसा होता है, जिसे ''बंदा बूटी'' के नाम से जाना जाता है। बवासीर रोग निवारण हेतु उस बूटी के पास शनिवार की रात्रि में जाएं। बूटी के पास धूप और दीप (देशी घी का) जगावें और श्रद्धा भाव से नमस्कार करते हुए कहें – हे बूटी। मैं औषधि रूप में, बवासीर रोग मुक्ति हेतु आपको आमन्त्रित कर रहा हूं। ''फलाने'' जातक का (फलाने की जगह बवासीर से ग्रसित रोगी का नाम लें) बवासीर रोग दूर करें। मैं कल रविवार को सूर्योदयकाल के समय आपको लेने आऊंगा। हमारी कामना सिद्ध करें। यह कहकर शनिवार कीं रात्रि में अपने घर चले जाएं, पीछे मुड़कर न देखें, रास्ते में कोई टोके तो ना बोले। प्रातःकाल सूर्योदय काल में पुनः बूटी के पास धूप जगाकर नमस्कार करें और बूटी काटकर घर ले आवें। बूटी को काले कपड़े में लपेटकर लाल रंग के सूती धागे में रोगी के कमर में बांधे तो कोई भी ''बवासीर रोग'' ठीक हो जायेगा।

### ''पीलिया रोग'' निवारक गंडा

रविवार के दिन ''पूनर्नवा बूटी'' की जड़ लावें। सफेद सूती नौ धागे लेकर एक डोरा तैयार करें। उस डोरे में पुनर्नवा बूटी को 21 छोटे–छोटे टुकड़े करके माला की तरह अलग–अलग बांध दें। तत्पश्चात् हनुमान जी का स्मरण करके रोगी के गले में पहना दें तो पीलिया रोग ठीक हो जाता है। जब रोगी ठीक हो जाये तो बूटी की माला हरे वृक्ष की डाल में लटका कर घर चले आवें।

### सिर दर्द निवारक गंडा

काक जंघा वृक्ष की जड़, मजीठ वृक्ष की जड़ या द्रोणपुष्पी की जड़ को सफेद सूत के डोरे में बांधकर रोगी के सिर में बांध देने से सिर दर्द बिल्कुल ठीक हो जाता है।

### आधी शीशी निवारक गंडा

"आधी शीशी" अर्थात् आधे सिर का दर्द बहुत ही पीड़ादायक होता है। रोगी डाक्टरों वैद्यों से इलाज करके हार जाता है परन्तु शीघ्र यह दर्द ठीक नहीं होता। ऐसे रोगी को रविवार के दिन "हुलहुल बूटी" की जड़ लाकर, सफेद धागे से सात गांठ उसमें लगाकर रोगी के सिर, गला अथवा बाजू में धारण करावें, तो आधी शीशी का दर्द से रोगी बिल्कुल आराम हो जाता है। यह नुक्ता अनेकों बार आजमाया हुआ है, आप भी आजमा कर देखें।

### सर्प भय निवारक गंडा

विषधर सर्प के काटने से शायद ही कोई आदमी बच पाता है। खास कर गांवों में, जंगलों व पहाड़ी क्षेत्रों में अधिक ऐसी घटनाएं होती हैं। ऐसी जगह पर निवास करने वाले व्यक्ति "पुनर्नवा बूटी की जड़" शुभ मुर्हूत व शुभ नक्षत्र में ले आवें। उस बूटी में सफेद सूत के डोरे से बारह गांठ लगाकर दाहिने बाजू पर बांधे तो सर्प ने कभी नहीं डंस मारेगा और सदा के लिए वह व्यक्ति सर्पभय से मुक्त हो जायेगा।

### सर्प भय विनाशक अचूक गंडा

यह "गंडा" तैयार करना कुछ मुश्किल है परन्तु अत्यन्त विश्वसनीय गंडा है। इस गंडे को तैयार करने की विधि निम्न है।

तेंदुआ जाति के बाघ के दांतों से गणेश की प्रतिमा निर्माण करें और उसे दाहिनी भुजा या गले में लाल धागे के साथ लटका लें तो सर्प ने भूल भी काटने की हिम्मत नहीं करेगा, बल्कि सांप आपको देखते ही भाग जायेगा।

### "प्रदर रोग" निवारक गंडा

महिलावों के लिए प्रदर रोग एक भयानक रोग है। इस बिमारी से ग्रसित महिला को सन्तानोत्पत्ति में बाधा आती है। ऐसी महिला को निम्न गंडा धारण करने से बिमारी से छुटकारा मिल जाता है। गंडा इस विधि से तैयार करें –

जब "उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र" हो उस दिन उत्तर दिशा की ओर से "व्याध्र बूटी" की जड़ उखाड़ कर लें आवें। उस बूटी में सफेद सूत के डोरे से पांच गांठ लगाकर पीडित महिला के कमर में बांध दें, इससे प्रदर रोग से मुक्ति मिल जायेगी।

### बुरी नजरों से बचाने वाला गंडा

कभी–कभी बुरे लोगों की तो क्या अच्छे लोगों का भी नजर अबोध शिशु को लग जाती है, जिसके कारण बच्चा बीमार हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में "सफेद आक की जड़" रविवार के दिन ले आवें। उसमें छिद्र करके काले कच्चे सूत का डोरा पिरोकर गंडा तैयार

करें और बच्चे के गले में पहना दें। इससे बच्चों का बुरी दृष्टि से बिल्कुल बचाव हो जायेगा।

### दाद-खाज, फोड़ा-फुन्सी निवारक गंडा

"वाकुची" के बीजों को काले धागे में पिरोकर गंडा तैयार करें और रोगी के गले में धारण कर दें तो समस्त त्वचा रोग व फोड़े-फुन्सियों से मुक्ति मिल जायेगी।

### सड़े गले घावों को मिटाने वाला गंडा

"विठकदिर" की जड़ पांच अंगूल के परिणाम में शुभ नक्षत्र के रविवार को ले आवें उसमें सफेद कच्चे धागे के डोरे से ग्यारह गांठ लगाकर गले में धारण कर लें तो सड़ा-गला घाव भी भर जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

### बच्चों का सूखा रोग निवारक गंडा

सूखा रोग बच्चों के लिए अति हानिकारक होता है। ऐसे बच्चे के शरीर का मास सूख जाता है और शरीर का रंग पीला पड़ जाता है।

ऐसी परिस्थिति में "मजीठ की लकड़ी" में छिद्र करके लाल या सफेद कच्चे धागे के डोरे को पिरोकर गंडा तैयार करें और सूखा रोग से पीड़ित बच्चे के गले में पहना दें तो बच्चा सूखा रोग से बिल्कुल स्वस्थ हो जायेगा।

### खांसी निवारक गंडा

यदि कोई खांसी रोग से पीड़ित हो और दवाईयों से लाभ नहीं होता हो तो – ऐसी परिस्थिति में सफेद कपड़े में (नया कपड़ा) कौवे का ब्रीट सफेद सूत लपेट कर बांध दे और रोगी के गले में पहना दें तो पुरानी खांसी भी दूर हो जाती है।

### बच्चों की खासी निवारक गंडा

"लजालू बूटी" की जड़ रविवार के दिन उखाड़कर ले आवें, उसमें काला धागा बांधकर रोगी के गले में लटका दें तो खांसी से बच्चों को पूर्ण राहत मिलेगी।

### स्वप्न दोष निवारक गंडा

नौजवानों में "स्वप्न दोष का रोग" आजकल अत्यधिक पाए जाते है। परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य कमजोर रहता है। ऐसी परिस्थिति में काले धथूरे की जड़ ताबीज में भरकर काले कच्चे धागे के डोरे में कमर में बांधे, तो "स्वप्न दोष" जैसी बिमारी से पूर्ण राहत मिल जाती है।

### "कंठमाला रोग" निवारक गंडा

लाल अपामार्ग नामक बूटी की हरी पत्तियों को काले धागे से गंडा

तैयार कर धारण गले में करने से कंठमाला रोग दूर हो जाता है। परन्तु यह माला नित्य 21 दिन लगातार बनाकर धारण करना चाहिए।

### शरीर की हड्डी टूटने पर या मोच आने पर दर्द निवारक गंडा

एक्सिडेंट के कारण या गिर जाने के कारण यदि शरीर की हड्डियां टूट गई हों या सूजन आया हो तो ऐसी परिस्थिति में "हरजोड़ लकड़ी" के टुकड़े को सफेद कच्चे धागे के डोरे से गंडा तैयार करें और रोगी के पीड़ा बाले स्थान में बांध दें तो हड्डियों का दर्द, सूजन, मोच आदि ठीक हो जाते हैं और स्नेह–स्नेह टूटी हड्डी भी जुड़ जाती है।

### बच्चों का दांत आसानी से निकालने वाला गंडा

छोटे बच्चों को जब दांत निकलना शुरू होता है तो अनेकों कष्ट का उसे सामना करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में "सीरस" के 21 बीजों में छिद्र करके सफेद सूती धागे में पिरोकर माला तैयार कर बच्चे के गले में पहना दें, तो उसके सभी दांत आसानी से निकल आयेंगे।

### अतिसार रोग विनाशक गंडा

"सहदोई बूटी" रविवार को उखाड़कर लावें, उसे सात टुकड़े में विभक्त कर लाल धागे से गंडा तैयार करें और रोगी के गले में धारण करावे तो रोगी स्वस्थ हो जायेगा।

### ज्वर (बुखार) निवारक गंडा

रविवार के दिन प्रातःकाल "अपमार्ग की जड़" उखाड़कर ले आवें और सफेद सूत के सात धागों से जड़ को लपेट कर गंडा तैयार करें और रोगी के गले में धारण करा दें तो ज्वर उतर जायेगा और व्यक्ति स्वस्थ हो जायेगा।

### "शीत ज्वर" निवारक गंडा

रविवार के दिन प्रातःकाल सफेद धथूरे की जड़ ले आवें उसे सफेद धागे में पिरोकर तीन गांठ (गिरह) बांधे और रोगी के दाएं बाजू पर बांध दे तो शीत ज्वर से मुक्ति मिल जायेगी।

### "विषम ज्वर" नाशक गंडा

इस ज्वर में पहले तो सर्दी (जाड़ा) लगता है फिर तेज बुखार हो जाता है। ऐसी परिस्थिति में रविवार के दिन "चिरचिरी" का जड़ उखाड़कर ले आवें। उस जड़ में काले धागे लपेट कर सात गांठ (गिरह) बांधे और रोगी के गले में पहना दें तो विषम ज्वर से राहत मिल जायेगी।

### साधारण ज्वर (बुखार) नाशक गंडा

"काली तुलसी" की आठ पत्तियां तोड़कर काले धागे से गंडा

तैयार करें। आठों पत्तियों में आठ जगह धागे में माला की तरह बांधे और रोगी के गले में धारण करा दें, तो साधारण ज्वर शीघ्र उतर जायेगा।

### "भूत ज्वर" नाशक गंडा

यदि किसी व्यक्ति को भूत–प्रेत के भय से "ज्वर" आया हो तो लहसून की सात कलियां छिलकर उसमें पीले धागे पिरोकर माला तैयार करें, और रोगी के गले में पहना दें, तो भूत ज्वर उतर जायेगा।

चिड़चिड़ी की जड़, लाल पलाश की जड़ भी पीले धागे में पिरोकर रोगी के दाहिने बाजू में बांधने से भी भूत ज्वर शान्त हो जाता है।

### "चेचक रोग" निवारक गंडा

यदि किसी को चेचक (शीतला) हो गया हो तो बहेड़े की गुठली को सफेद डोरे में पिरोकर रोगी के गले में धारण करावें तो "चेचक रोग" शान्त हो जाता है।

### कान दर्द विनाशक गंडा

यदि किसी के कान में दर्द होता हो तो उसके लिए काले रंग का डोरा हाथ में ले और "ॐ द्वां द्वारवासनिभ्यां नमः" मंत्र पढ़कर डोरे में एक गांठ लगावें। इस प्रकार मंत्र पढ़ते हुए एक–एक कर ग्यारह गांठ लगावें और रोगी के गले में वह डोरा पहना दें तो कान से सम्बन्धित सभी रोग नष्ट हो जाते है।

### प्रसव वेदना नाशक गंडा

"प्रसव वेदना" से छटपटाती हुई स्त्री की कमर में नीम वृक्ष की जड़ (पतली शिरा) को काले धागे में बाधने से प्रसव पीड़ा दूर हो जाती है।

### नींद आने हेतु गंडा

"काका जंघा" की जड़ में (पलती शिरा) काला धागा लपेट कर गांठ लगा दे और उसे सिर में बांध लें तो खूब नींद आएगी।

### गर्भ रक्षक गंडा

यह प्रयोग इस प्रकार करें, रविवार के दिन कुंवारी कन्या से लाल डोंरा (धागे से) तैयार करावें, उस डोरे में "काले धथूरे की जड़" सात टुकड़े करके सात जगह बांधे और गर्भवती स्त्री के कमर में धारण करावें तो गर्भपात नहीं होगा।

### आसानी से प्रसव होने का गंडा

नीम की जड़ या केले की जड़, हुलहुल की जड़, सूर्यमुखी की जड़ अथवा कलिहारी की जड़ उखाड़कर अथवा काटकर ले आवें, उसमें काले धागे लपेटकर एक गांठ लगा दें, तत्पश्चात् गर्भिणी स्त्री के कमर

में धारण करा दें तो सुख से प्रसव होता है अर्थात् आसानी से स्त्री बच्चे को जन्म देती है।

### गर्भपात कराने हेतु गंडा

"काली मूसली" की जड़, या ब्राह्मणी बूटी की जड़ काट कर ले आवें, उसमें काले धागे लपेट कर तीन गांठ लगा दें, तत्पश्चात् गर्भिणी स्त्री की कमर में धारण करा दें, तो गर्भपात हो जाता है।

### पागलपन विनाशक गंडा

कौवे व कुत्ते का नाखून और बिच्छू का डंक इन तीनों वस्तुओं को ऊंट के चमड़े में रखकर काले धागे से सिलाई करवा कर धारण करने पर पागलपन दूर हो जाता है।

## कष्ट निवारण हेतु विभिन्न प्रकार के टोटके

(इसे अजमाइये – लाभ उठाइए)

### सर्प विष निवारक टोटके

1. "नये कमल गट्टे की मिंगी" को बहुत महीन पीस कर आंखों में आंजन अर्थात सुरमा के समान लगाने से सर्प का विष उतर जाता है।

2. नीले थोथे को अत्यन्त महीन पीसकर रोगी के नाक में फूंक देने से भी सर्प का विष समाप्त हो जाता है।

3. कच्चे आम के गूदे को महीन पीस छान कर रोगी को पिलाने से भी सर्प विष दूर हो जाता है।

### बिच्छू विष निवारक टोटके

1. आक के जड़ में लगी हुई "कीड़ा" (किटाणु), छिपकली की बीठ, बड़ी हर्रा और मैनसिल–इन सबको महीन पीसकर छोटी–छोटी गोली बनाकर रख लें। बिच्छू के काटे हुए स्थान पर इस गोली को पानी में घिसकर लगा देने से विष उतर जाता है।

2. मेर, पलाश और पावड़ा – इन सबको महीन पीस कर आक के दूध में मिलाकर गोली बनाकर रख लें। जिस स्थान पर बिच्छू ने काटा हो, वहां गोली को घिसकर लगाने से विष उतर जाता है।

3. अंकोल के तेल में सम भाग जामुन और अनार के फूल को डालकर भिगो दें। इस तेल को बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाने से जहर उतर जाता है।

### पागल कुत्ते के काटने पर विष उतारने का टोटका

चूहे की बीठ को पागल कुत्ते के काटे हुए स्थान पर सूखी ही बांध दें तो पागल कुत्ते का विष दूर हो जाता है। अच्छे हो जाने पर चूहों को रेवड़ी खिलाना चाहिए।

### "धथूरा का विष" उतारने का टोटका

पंवार के पेड़ के गूदे को चार माशे की मात्रा में पानी में पीस कर, छान कर पिला देने से धथूरे का विष (नशा) उतर जाता है।

### बच्चों के दांत सुख पूर्वक निकलने का टोटका

सिरस के बीजों की माला बनाकर बच्चे के गले में धारण कराने से उसके दांत बिना तकलीफ के निकल आते हैं।

### आँखों की धुन्ध दूर करने का टोटका

सफेद चिरमिठी और पान का रस—इन दोनों को पीसकर आंख में आंजने से (लगाने से) आंखों का धुन्ध दूर हो जाता है तथा दृष्टि बढ़ती है।

### सर्दी लगकर बुखार दूर करने का टोटका

आधी काली मिर्च, एक मक्खी तथा थोड़ी सी हींग—इन तीनों को पानी में पीस कर आंखों में आंजने से (लगाने से) सर्दी वाला बुखार ठीक हो जाता है।

### चौथेया बुखार दूर करने का टोटका

उल्लू के पंख और गूगल को काले नये वस्त्र में लपेट कर बत्ती बनावें। उस बत्ती को दीपक में डालकर जलायें तथा काजल पार लें। उस काजल को चौथेया बुखार के रोगी के आंखों में आँजने (लगाने) से दुबारा बुखार नहीं आता।

### एक दिन में बुखार दूर करने का टोटका

रविवार के दिन सफेद धथूरे को लाकर पुरूष के दांये और स्त्री के बांये हाथ में बांध देने से एक ही दिन में बुखार दूर हो जाता है।

### शराब का नशा उतारने का टोटका

मूली और फिटकरी को पानी में घिसकर – वह पानी शराब पिए हुए व्यक्ति को पिला देने से शराब का नशा उतर जाता है।

### धरण ठिकाने आने का टोटका

"धरन" पड़ जाने के बाद आदमी को हिलना—डुलना भी मुश्किल सा महसूस होता है और आदमी बेचैन रहता है। ऐसी परिस्थिति में शनिवार के दिन— "अंधा हुलि बूटी" को एक पान, सुपारी और एक रूपये का सिक्का से न्यौता दे आवें। उसकी डाली पर लाल डोरा बांधकर गुड़ और गूगल की धूनी दें (धूप दिखावें)। तत्पश्चात् वहां से चले आवें। फिर रविवार के दिन जाकर उस की जड़ को उखाड़ लावें। उखाड़ते समय उस पर अपनी छाया न गिरने दें। जड़ को घर में लाकर पुनः धूप दिखावें। उसके उपरान्त जिसे धरन पड़ गई हो, उसकी कमर पर उक्त जड़ को काले धागे से बांध दें तो धरन ठिकाने आ जाता है

और पीड़ा दूर हो जाती है। परन्तु इस विधि को करते समय, या बूटी लाते समय कोई टोल–चाल न करे और न तो पीछे मुड़कर देखें।

जड़ को घर में लाकर धूप देते समय निम्नलिखित मंत्र का 21 बार जप अवश्य करना चाहिए।

"ॐ नमो रूद्राय सवां दृष्टा बिनाया स्वाहा"

### स्त्री के मासिक धर्म में आने वाले अधिक लहू (खून) रोकने का टोटका

रविवार के दिन "सफेद धुंधची की जड़" को लाकर स्त्री की कमर में काले धागे से बंधवा देने से मासिक धर्म के समय अधिक खून आना बन्द हो जाता है।

### आधा शीशी का दर्द दूर करने का टोटका

रविवार के दिन "सफेद धुंधची की जड़" को लाकर रोगी के कान में काले धागे से बांध दें तो आधा शीशी का दर्द दूर हो जाता है।

### सिर-दर्द निवारक टोटका

"आरना कंडे" को लाकर जलायें। फिर उसकी भस्म को आक के दूध में भिगोकर छाया में सुखा लें, सूख जाने पर भली–भांति पीस कर रख लें। जिस व्यक्ति के सिर में पीड़ा हो, वह व्यक्ति इस चूर्ण की "नस्य" ले अर्थात चूर्ण चुटकी में भरकर नाक से ऊपर की ओर खींचे तो कई छींके आती हैं तथा बहुत सा बलगम निकल जाता है, जिसके कारण उसका सिर दर्द दूर हो जाता है। सिर दर्द के पुराने रोगी के लिए यह उपाय श्रेष्ठ कहा गया है।

### साधारण सिर दर्द का टोटका

घोड़े की लीद का रस निकालकर, उसे अग्नि पर चढ़ाकर गर्म कर लें। फिर रस ठंडा होने पर उस रस की बूंदों को कान में टपकाने से अर्थात कान में दो तीन बूंदे डालने से साधारण सिर दर्द मिट जाता है।

### मस्तक के कीड़ा निवारक टोटका

यदि किसी व्यक्ति को किसी भी कारण वश मस्तक में कीड़ा हो गया हो तो – ऊंट के मूत्र में रूई भिगोकर कीड़े वाले स्थान पर रखने से, उसकी गंध के कारण मस्तक के कीड़े मर जाते है।

### सोते हुए बालक का मूत्र न करने तथा भय छुड़ाने का टोटका

सफ़ेद मुर्गे की कलगी (ताज) खिलाने से बालक का सोते समय पेशाब करना बन्द हो जाता है। इस कलगी को तेल या घी में तलकर खिलावें। इससे बच्चे का भय भी समाप्त हो जाता है।

### आंखों से बहता हुआ पानी रोकने का टोटका

जिसकी आँखों से दिन–रात पानी बहता हो, उसकी आँखों में

अबोध बालक के नख को धीरे से फेरने पर पानी बहना बन्द हो जाता है।

### नाक के नासूर को बन्द करने का टोटका

जिसकी नाक में नासूर हो, उसे दिन में भोजन कराने के बाद, सर्प की केंचुल (केंचुवा) को पानी में घिसकर नासूर वाले स्थान पर लगा दें। जब वह सूख जाय, तब दोबारा लगा दें। इस प्रकार पांच–सात बार लगाने से ही रोग जड़ से दूर हो जाता है। आजमा कर देखें।

### नाक से खून बहना बन्द करने का टोटका

गाय के सूखे गोबर को पीस कर सुंघाने मात्रा से ही नाक से खून बहना बन्द हो जाता है।

### दांत का दर्द दूर करने का टोटका

गाय के सूखे गोबर को दांतों पर तथा मसूड़ों पर मलने से दांत का दर्द दूर हो जाता है।

### बुखार उतारने का टोटका

जिस स्थान पर कुत्ते ने पेशाब किया हो, उस स्थान की गीली मिट्टी लाकर, गोली बनाकर धूप में सुखा लें। फिर जिस रोगी को बुखार आता हो, उसके गले में, कपड़े में लपेट कर काले धागे से बांध दिया जाए तो बुखार उतर आता है।

### कान दर्द निवारक टोटका

1. आक के पत्ते पर घी चुपड़ कर अग्नि पर तपावें, फिर उसका रस निकाल कर कान में डालें तो कान का दर्द दूर हो जाता है।

2. आक के जड़ को सरसों तेल में पकाकर (जलाकर) सुसुम तेल दो बूंद कान में टपकाने से कान का दर्द मिट जाता है।

### गंजे सिर पे बाल उगाने का टोटका

''जोंक'' (बरसात के समय निकलता है एक प्रकार का लम्बे आकार का कीड़ा है जो आधा फूट लम्बा कत्थई रंग का होता है) को सरसों तेल में पकाकर, जलाकर राख कर दें और उस तेल को ठंडा करके, जिस स्थान पर बाल न उगते हों, वहां लगाने से बाल उग आते हैं।

### बाल बढ़ाने वाला टोटका

घोड़े की लीद को अग्नि में जलाकर राख कर लें फिर तिल के तेल में उक्त राख को मिलाकर बालों पर लगाएं तो बाल शीघ्रता से बढ़ते हैं।

### उड़े हुए स्थान पर दुबारा बाल उगाने के टोटके

सिर में जिस स्थान के बाल उड़ गये हों उस स्थान पर दुबारा बाल

उगाने के लिए निम्नलिखित प्रयोग करने चाहिए –

1. हाथी के दांत को जलाकर महीन पीस लें। फिर उस राख को भेड़ के दूध में मिला दें। साथ ही "चनेभर रसौत" भी पीसकर उसमें मिला दें। इस लेप को लगाने से उड़े हुए बालों के स्थानों पर दुबारा बाल जम जाते हैं।

2. मक्खी की बीट और काली मिर्च दोनों को एक साथ पीस कर बाल उड़े स्थान पर दिन में कई बार लगाने से (दो तीन बार) से कुछ ही दिनों मैं उस स्थान पर दुबारा बाल उंग आते हैं।

3. शहद और चिरमिटी के बीजों को पीसकर गंज वाले स्थान पर सात दिन तक लेप करने से वहां बाल उगना आरम्भ हो जाते हैं। अजमा कर देखें।

### दांत के कीड़े मारने का टोटका

हरड़ के चूर्ण को शहद में मिलाकर, तांबे के पात्र में भूनकर गुटका बनाकर दांतों के नीचे रखने से दांत के कीड़े मर जाते है।

### हूक दूर करने का टोटका

चने का खार (भस्म) एक चने भर लेकर उसे खांड में मिलाकर गोली बना लें। सोते समय एक गोली खाने से सुबह तक हूक दूर हो जाती है।

### शरीर की दुर्गन्ध दूर करने का टोटका

कदम्ब के पत्ते, अर्जुन के फूल तथा लोध की जड़ – इन तीनों को पीसकर शरीर पर उबटन (लेंप) करने से शरीर की दुर्गन्ध दूर होती है।

### आंखों से पानी टपकना दूर करने का टोटका

"सफेद सोंठ" की जड़ को घी में पीसकर आंखों में अंजन (लगाने से) करने से पानी टपकना बन्द हो जाता है।

### स्वर मधुर (आवाज) करने का विभिन्न टोटके

गाने वाले कलाकारों के लिए निम्नलिखित टोटके अत्यन्त ही लाभदायक हैं, आजमा कर देखें –

1. "निर्गुनी बूटी" की जड़ को सुखा कर चूर्ण करके तिल के तेल में पका लें। इस औषधि को चाटने से कण्ठ स्वर कोकिल (कोयल) के समान हो जाता है।

2. पीपल, सोंठ, बहेड़ा, त्वक और सेंधा नामक इन सबको गाय के मूत्र के साथ पीस कर पीने से कण्ठ स्वर अत्यन्त मधुर हो जाता है।

3. मिश्री, सोंठ और शहद – इन तीनों को मिलाकर चाटने से स्वर अत्यन्त मधुर हो जाता है।

## स्त्री के मसान रोग नाशक टोटका

जिस स्त्री को मसान का रोग हो और उसकी सन्तान जीवित न रहता हो, उसे चाहिए कि जब वह गर्भवती हो तब बंदर की बीट (बिष्टा) लाकर रख ले तथा पके हुए पानी में रत्ती भर बीट रखकर, इक्कीस दिन तक खाये। जब बालक का जन्म हो तब उसकी घुट्टी में एक चावल भर उक्त बीट मिलाकर, घुट्टी को रख ले तथा प्रतिदिन बालक को पिलाती रहे। इस विधि से माँ भी ठीक रहती है और उसका बालक भी स्वस्थ बना रहता है।

## बालक के मसान रोग निवारक टोटका

जिस बालक को मशान का रोग हो, उसके लिए यह उपाय करना चाहिए –

शनिवार के दिन जंगल में जाकर या घर में ही गिरगिट को मार कर रख ले। रविवार के दिन उसे जलाकर राख कर ले तथा उस राख को गूगल की धूनी देकर रख दे। जब कोई मशान का रोगी आवे, तब उसे वह राख एक रत्ती भर खिला दे तो उसका रोग तुरन्त दूर हो जाता है। और दुबारा फिर नहीं होता।

## बालक का पल्ला रोग निवारक टोटका

पल्ला पड़ने से बालक को बहुत दुःख उठाना पड़ता है, वह दिन प्रतिदिन सूखता चला जाता है। उसके लिए निम्नलिखित टोटका करना चाहिए –

किसी भी मंगलवार के दिन धोबी की शिला (कपड़े पीटने के पत्थर, पाट) को पान, सुपारी पैसा रख कर न्यौता दे आवें। दूसरे मंगलवार के दिन बालक को ले जाकर उसी शिला पर बैठा दें तथा उसके सब कपड़ों को उतार कर डरायें। साथ में थोड़ी सी चने की दाल भी ले जाएं, उसे शिला के नीचे ढुलका दें। फिर बालक को उसी शिला पर बैठाकर स्नान करायें तथा नए कपड़े पहना कर घर ले आवें। शिला के नीचे पड़ी हुई दाल ज्यों–ज्यों फूलेगी त्यों–त्यों बालक का शरीर भी स्वस्थ होकर फूलने लगेगा–खिलने लगेगा तथा उसका रोग दूर हो जायेगा।

## स्त्री को रूक-रूक कर होने वाला या बन्द मासिक धर्म खोलने का टोटका

जिस स्त्री को ''मासिंक धर्म'' रूक गया हो या कुसमय होता हो वह यदि नीचे लिखे टोटका प्रयोग करे तो उसका रूका मासिक धर्म पुनः चालू हो जाता है –

गाय के गोबर के रस में कपूर, रोगन, बनपसा मिलाकर कान में एक बूंद टपका देने मात्र से रूका हुआ मासिक धर्म चालू हो जाता है।

## स्त्री का मासिक धर्म रोकने और खोलने का टोटका

कौए की चोंच को रविवार के दिन लाकर गूगल की धूप दें। फिर उस चोंच से मार्ग में एक लकीर खींच दें, जो स्त्री उस लकीर को लांघेगी उसका मासिक धर्म चालू हो जायेगा। जब उसी चोंच को धोकर पिला दिया जायेगा तो मासिक धर्म रूक जायेगा।

## स्त्री को गर्भ ठहरने का टोटका

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में धथूरे की जड़ को सफेद धागे से कमर में बांध कर सहवास (मैथुन) करने पर गर्भ ठहर जाता है।

## अफीम का नशा उतारने का टोटका

''सीता फल'' के पत्तों का रस निकालकर पिलाने से अफीम का नशा उतर जाता है।

## शराब का नशा उतारने हेतु अति लाभदायक टोटके

1. मूली और फिटकरी को पानी में घिसकर पिलाने से शराब का नशा उतर जाता है।

2. नारियल की गिरी और दूध खिलाने–पिलाने से भी शराब का नशा उतर जाता है।

## मक्खी भगाने के टोटके

1. नरगिस की जड़, अकरकरा और गंधक इन तीनों को पानी में पीसकर, उस पानी को जहां छिड़का जायेगा, वहां से मक्खियां भाग जायेंगी।

2. गाय के दांत को छाछ में पीसकर जिस स्थान में गाड़ दिया जाय, वहां मक्खी नहीं रहती।

## चूहे भगाने का टोटका

1. ऊँट के दांये पैर के नख को जिस घर में जलाया जाय, वहां से चूहे भाग जाते हैं।

2. ''समुद्र खार'' को आटे में मिलाकर घर में रखने से चूहे भाग जाते हैं।

## खटमल भगाने का टोटका

रविवार व शनिवार के दिन लोबिया की धूनी देने तथा उसे चारपाई में बांध देने से खटमल भाग जाते हैं। गंधक की धूनी देने से खटमल भाग जाते हैं, मर जातें हैं।

## कीड़े-पतंगे भगाने का टोटका

प्याज के टुकड़े को दीपक में रख देने से उस दीपक के पास पंतगें नहीं आते।

## धन प्रदायक, सफलतादायक, प्रगतिदायक विभिन्न टोटके

### भण्डार में वृद्धि होने के टोटके

1. जिस स्थान पर होली बहुत वर्षों से जलाई जाती रही हो, वहां पर होली जलने से एक दिन पहले की रात्रि में एक मिट्टी की मटकी में गाय का घी, गेहूं और ज्वार तथा एक रूपये का सिक्का रखकर, मटकी का मुँह बन्द करके गाड़ आवें। यह कार्य गुप्त रूप से करना चाहिए। दूसरी रात्रि में जब होली जल जाय, तब दूसरे दिन सुबह उसे उखाड़ लावें।

गाड़ने तथा उखाड़ने की क्रिया गुप्त रूप से करनी चाहिए। कोई देख न सके।

फिर सब वस्तुओं को पोटली में बांधकर, अनाज का ठेक, कोठी या तिजौरी में रख दिया जाय, तो वह वस्तु खर्च करने पर भी घट नहीं पायगी अर्थात् निरन्तर उस धन की वृद्धि होती रहेगी।

2. काली चिड़िया जिस घोंसले में अण्डा रखें वहां पर गुप्त रूप से "सतनजा" अर्थात् सात तरह के अनाज घोंसले में रख आवें। जब चिड़िया के बच्चे उड़ जाय तब "सतनजे" को घोंसले में से चुनकर ले आवें तथा पोटली में बांधकर अनाज के भण्डार में रख दें तो वह भंडार कभी कम नहीं होगा, निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। आजमा कर देखें।

### धन वृद्धि का टोटका

"काली चिड़ियां" जिस स्थान पर घोंसला रखे, वहां की नीचे धरती खोदकर एक अठन्नी या रूपये का सिक्का रख दें, उस पर ईंट रख कर मिट्टी भर दें। यदि चिड़िया उस सिक्का को निकालकर अपने घोंसले में ले आवे तो उसे घोंसले में से लाकर, गूगल का धूप दिखाकर, उस जगह रख दें, जहां अपने रूपये-पैसे रखे रहते हों तो उस सिक्का के प्रभाव से रूपये के भण्डार में कभी कमी नहीं आती है।

### ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति व अन्नपूर्णा देवी को प्रसन्न करने का टोटका

भाद्र मास के कृष्णपक्ष में जब भरणी नक्षत्र आवे, उस दिन चार घड़े में पानी भरकर किसी एकान्त कमरे में रख दें। दूसरे दिन जो घड़ा ख़ाली दिखाई दे अर्थात् जिस घड़े में जल कुछ कम हो गया हो, उसे किसी एकान्त पवित्र स्थान में रख कर, उसमें अन्न भर दें। शेष घड़ों के पानी को घर-आँगन और खेतों में छिड़क दें। (यदि अपना खेत हो तो, वरना खेत में छिड़कने की जरूरत नहीं) जिस घड़े में अन्न भरे हों, उसका प्रतिदिन पूजन करने से "अन्नपूर्णा" देवी प्रसन्न होती हैं तथा घर में ऋद्धि-सिद्धि गुलाम होकर रह जाती हैं।

### बुद्धि और ज्ञान बढ़ाने वाला टोटका

कार्तिक मास के शुक्लपक्ष चर्तुदशी के दिन-"शंखाहुलि" बूटी

को एक पान, सुपारी और एक सिक्का लेकर न्यौता दे आवें, तथा हस्त नक्षत्र में उस बूटी को उखाड़ कर अपने घर ले आवें और कूट–पीस कर गोली बनाकर रख लें।

फिर जब सावन के महीने में ''श्रवण नक्षत्र'' आए, तब वह गोली जिस व्यक्ति को खिलाई जाएगी, उसे अधिक बुद्धि तथा ज्ञान प्राप्त होता है।

### *बुद्धि और पराक्रम प्राप्त करने का टोटका*

जोगी, जंगम, शैव और ''सन्यासी''–इनके पांव के नीचे की धूली लाकर, धूप–दीप दिखाकर पवित्र ह्रदय से मस्तक पे चन्दन स्वरूप लगाने से बुद्धि बल व पराक्रम में वृद्धि होती है।

### *गाँव की विपत्ति टालने व सुखी होने का टोटका*

बन्दर की हड्डियाँ लाकर, उस धूप–दीप दिखाकर, गांव के चारों सीमा (चारों दिशा की सीमा) पर गाड़ देने से सम्पूर्ण गांव की विपत्ति टल जाती हैं और सब लोग सुखी रहते हैं।

### *किसी को अपना बनाने का टोटका*

ब्राह्मण की पग धूलि, गाय के खुर के नीचे की धूलि, गदहे के पांव के नीचे की धूलि तथा कुत्ते के पांव के नीचे की धूलि–इन चारों को–''पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र'' के रविवार को एकत्र करें। इस संयुक्त धूलि को जिस व्यक्ति के मस्तक पर डालेंगे, वह आपका अपना बन जायगा।

### *अधिक बिक्री बढ़ाने वाला तथा शत्रुवों को दबाने वाला अचूक टोटका*

जिस वृक्ष पर ''बागल (बंझौड़ी) हो, उसे शनिवार के दिन पान–सूपारी, एक रूपये का सिक्का उस वृक्ष के पास रखकर न्यौता (निमत्रण) दे आवें। रविवार के दिन प्रातः काल जाकर उसकी एक डाली तोड़ लावें। पीछे मुड़कर न देखें। उस डाली को घर लाकर धूप–दीप दिखावें और धूप दिखाते वक्त निम्नलिखित मंत्र का 108 बार जप करें। मंत्र का जप करने के बाद डाली को नित्य अपने दाँए पांव के नीचे दबा कर रखने से अथवा बैठने की गद्दी पर दाहिने तरफ़ रखकर बैठने से दुकान पर बिक्री अधिक होने लगती है।

उक्त अभिमंत्रित डाली के पत्ते को दुश्मन के सिर पर रख देने से वह सदैव उसके समक्ष दबा हुआ रहता है।

**मंत्र :–''ॐ नमो चण्ड अलसुर स्वाहा।।''**

### अपार विद्या बुद्धि प्राप्ति हेतु टोटका

माघ मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को जब ''पूर्वाषाढ़ नक्षत्र'' आवे, उस दिन अर्द्धरात्रि के समय पर—रक्त चन्दन की स्याही से और अनार की कलम से मंत्र ''ॐ ह्रीं'' भोजपत्र पर लिखाकर पूजा करने से, फिर नित्य उस भोजपत्र की पूजन करने से आपार विद्या बुद्धि की प्राप्ति होती है।

### रोजी-रोटी हाशिल करने हेतु चमत्कारिक टोटका

जुमेरात के दिन एक कौवे को पकड़कर घर ले आवें तथा पिंजरे में बंद कर दें। खाने के लिए दाना पानी देते रहें। रविवार को प्रातःकाल उसे दही चीनी मिलाकर खिलाएं तथा दोपहर के समय चावलों के भात में दूध मिलाकर चीनी डालकर खाने को रखें। संध्या के समय कच्चे नारियल की गिरी पानी में भिगोया हुआ बाजरा तथा ज्वार खाने के लिए दें।

उसके पश्चात् वीरवार के दिन जहां काम करने की इच्छा हो वहां जायें। उस स्थान पर प्रवेश द्वार में प्रवेश करते समय दाएं पैर को आगे करके घुसें तो वहां नौकरी अवश्य मिलेगी। इन्टरव्यू में पास होने हेतु भी यह उपयोग अति लाभदायक है।

### राज सभा व प्रतियोगिता जीतने का टोटका

''अंकोल का पक्का फल'' और ''मैन फल'' दोनों को लाकर, गाय के दूध में पीस कर जामुन की बराबर गोली बना लें, तथा छाया में सुखा कर रख लें। फिर गाय के पीले सींग को लाकर गाय के दूध में पकावें और उसमें उक्त गोली को भरकर सात दिनों तक रखा रहने दें। तदुपरान्त उस गोली को घिसकर, अपने मस्तक पर तिलक लगाकर राज सभा में जाएं, या प्रतियोगिता में सम्मिलित हों तो वहां विजय प्राप्त होती है, आजमा कर देखें।

### भूख प्यास न लगने का टोटका

''लटजीरा'' के चावलों को रविवार के दिन गाय के दूध में पकाकर खीर बनावें और उसमें औंगा के बीज, सोंठ, और पारा मिलाकर, हांडी में भरकर, हांडी के मुंह इस प्रकार से बंद कर दें कि उसमें हवा का प्रवेश न हो सके। फिर जितने दिन भूख–प्यास न लगाना चाहें, उतने दिन का संकल्प करके उस हांडी को पानी के भीतर गाड़ दें।

जब संकल्प की अवधि बीत जाए, तब हाँडी को बाहर निकाल लें। इस विधि से संकल्प की अवधि तक भूख–प्यास नहीं लगेगी।

### भूत उतारने का टोटका

रविवार के दिन धथूरे की जड़ लाकर भुजा में बांधने से भूत उतर जाते हैं और रोगी को पुनः कभी परेशान नहीं करता।

# अचूक वशीकरण टोटके

1. रविवार के दिन "पुष्य नक्षत्र" में जब अमावास्वया हो उस दिन अपना वीर्य किसी अच्छी मिठाई में मिलाकर जिस स्त्री को खिला दिया जाय, वही वश में हो जाती है।

2. करवीर (कनेर) पुष्प व गोघृत दोनों मिलाकर जिस किसी स्त्री का नाम लेकर हवन किया जाय और यह क्रम प्रतिदिन सात दिन लगातार 108 बार हवन किया जाय तो सात दिन के अन्दर वह स्त्री वश में हो जाती है।

3. उल्लू पक्षी की रीढ़ की हड्डी, केसर, कस्तूरी और कुंकुम सबको एक साथ घिसकर ललाट पर तिलक लगाकर जिस भी स्त्री के सामने जाय वही वशीभूत हो जाती है।

4. "पुष्य नक्षत्र" में धोबी कै पैर की धूल जिस किसी सुन्दरी के सिर पे डाल दी जाय, वही वशीभूत हो जाती है।

5. शनिवार के पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर लाल चन्दन से शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा देना चाहिए। यह जब तक वह शहद में डूबा रहेगा, तब तक शत्रु वश में रहेगा।

6. उल्लू पक्षी का सूखा विष्ठा पान में रखकर यदि शत्रु को खिला दी जावे तो शत्रु शत्रुता छोड़कर वशीभूत हो जाता है।

7. "सहदेवी" और अपामार्ग बूटी के रस को लोहे के पात्र में अच्छी तरह घोंटकर, उसका तिलक लगाकर शत्रु के सामने जाने से शत्रु आत्म समर्पित करता है।

8. "ब्रह्म दंडी", "वच", और "कूट" इन तीनों के चूर्ण को पान में रखकर जिसको खिला दिया जाय वह सदा के लिए वशीभूत हो जाता है।

# अद्‌भुत चमत्कारी टोटके

## नजर उतारने के टोटके

पाठको! अड़ोस–पड़ोस में रहने वाली महिला सुन्दर बालक को देखकर कभी–कभी कह देती है कि ''हाय–हाय यह बालक कितना सुन्दर है कितने सुन्दर कपड़े पहने हैं या कितना शरारती है तो ऐसी महिला की नजर उस अबोध नादान बच्चे पर अनिष्ट प्रभाव डालती है।'' सुन्दर व स्वस्थ बालक बीमार हो जाते हैं, रोने लगते हैं। नजर लगने से गाय–भैंस का दूध कम हो जाता है, सुन्दर मूर्ति या वस्तु भंग हो जाती है।

प्रस्तुत है नजर उतारने सम्बन्धी अति सरल टोटके :–

1. श्री हनुमान जी मूर्ति के सिर में लगा सिन्दूर, एक लाल मिर्च, एक लोहे की कील, 50 ग्राम काले माह (काले उड़द) के दाने सफेद वस्त्र में बांधें और उस पोटली में पूर्ण रूपेण काला धागा लपेटकर बालक की मंजी (खाट), पलंग या पालने (झूले) में बांध दें। यह प्रयोग मंगलवार के दिन करें। यह प्रयोग करने से बालक को भूत–प्रेत या पिशाच बाधा नहीं लगेगी और किसी की नजर भी नहीं लगेगी।

2. सात सूखी हुई मिर्च, राई, नमक, पाँच दाने लहुसन, कुछ प्याज के सूखे छिलके, सूखे गोबर (गाय या भैंस का गोबर) की पाथी को अंगारे पर डालकर, अंगारे को किसी थाली में रखकर आरती की भांति – नजर लगे बालक के सिर से पैर तक सात बार दिखाकर अंगारे बाहर फैंक दें। इससे बालक के ऊपर से बुरी नजर उतर जाएगी।

3. शनिवार के दिन श्री हनुमान जी की मूर्ति के कंधों पर लगा थोड़ा सा सिन्दूर ले आवें। (मात्र तिलक लगाने योग्य सिन्दूर लावें) और बालक के मस्तक पर पांच दिन लगातार तिलक लगावें तो बुरी दृष्टि का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

4. यदि किसी की दुकान में या व्यापारिक प्रतिष्ठान में किसी की बुरी नजर लग गई हो तो रविवार या मंगलवार के दिन सात सूखे लाल मिर्च बीच में निंबू काले धागे में पिरोकर दुकान के मुख्य द्वार पर लगाने से नजर दूर हो जाती है। यदि मिर्चे काली हो जाये और निंबू का रस सूख जाय तो समझें बुरी नजर लगी थी और उसका असर अब समाप्त हो गया।

5. गेहूँ के आटे गूंथकर एक दीपक बनायें। उस दीप में काले धागे की बत्ती डालकर, सरसों के तेल से दीप को जलाकर आरती की भांति बच्चे के ऊपर से सात बार उबारें तो अनिष्ट दृष्टि दोष दूर हो जाता है। दीपक में दो लाल मिर्च रखक़र ही उबारें।

6. नजर लगे बालक को कमरे के दरवाजे के चौखट पर बैठाकर, फिर उसके ऊपर से सेंधा नमक और मिट्टी सात बार उबारकर बाहर फेंक दें।

7. भोजन को नजर लग जाए तो भोजन में से प्रत्येक पदार्थ थोड़ा–थोड़ा लेकर एक पत्ते पर रख दें, उस पर थोड़ा सा लाल गुलाल बिखेंरे और पत्ते उठाकर कुत्ते के आगे डाल दें, इसके बाद ही भोजन करें।

### *भूत प्रेत बाधा से बचने हेतु टोटका*

"कृतिका नक्षत्र" में लोहे की अंगूठी बनवाकर कृतिका नक्षत्र में ही दाहिने हाथ में अंगूठे से तीसरी ऊँगली में धारण करने से भूत–प्रेत या पिशाच की बाधाएँ नहीं लगती है।

### *अफीम का नशा उतारने का टोटका*

अरहर की हरी पत्तियों का रस निचोड़कर पिलाने से अफीम का नशा उतर जाता है।

### *भांग का नशा उतारने का टोटका*

50 ग्राम अरहर की दाल पानी में अच्छी तरह उबालकर, कोशा ठंडा दाल बनाकर पिलाने से भांग का नशा उतर जाता है।

### *सम्मान प्राप्त करने हेतु टोटका*

मोर का पंख सदैव अपने पास रखने से सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है।

### *मिरगी के दौरे शान्त करने का टोटका*

मिरगी के दौरे के कारण बेहोश पड़े व्यक्ति का स्पर्श यदि "रजस्वला स्त्री" कर दें तो वह उठकर बैठ जाता है।

### *पित्त रोग शान्त करने का टोटका*

"मूल नक्षत्र" में ताड़ वृक्ष के जड़ का एक छोटा टुकड़ा लाकर काले धागे में बांधकर गले में धारण करने से पित्त रोग शान्त हो जाता है।

### तिजोरी द्रव्यों से सदैव भरा रखने हेतु टोटका

"पुष्य नक्षत्र" में शंखपुष्पी की जड़ लाकर चांदी की डब्बी में बंदकर तिजोरी में कायम रखने से द्रव्यों से तिजोरी भरी रहती है।

### अन्न का भंडार भरा रहने हेतु टोटका

"आश्लेषा नक्षत्र" में बरगद का पत्ता लाकर अन्न भंडार में रखने से अन्न की कमी नहीं होती।

### हकलाना मिटाने हेतु टोटका

साबुत सुपारी रक्त चन्दन में सात दिन तक डुबोए रखें। आठवें दिन से सुपारी काट–काट कर चूसने से हकलाना मिट जाता है और व्यक्ति साफ–साफ कोई बातें बोलने में सक्षम हो जाता है।

### खांसी रोग से छुटकारा पाने का टोटका

सफेद घुंघची को पीसकर, उसमें गुड़ मिलाकर खाने से खांसी से छुटकारा मिल जाता हैं।

### आधा शीशी (अधकपारी) रोग नष्ट करने का टोटका

प्रातःकाल सूर्योदय से पहले घर से एक गुड़ का टुकड़ा लेकर निकलें। चौराहे पर आकर पश्चिम दिशा की ओर मुख करके गुड़ के टुकड़े को दांत से काट–काट कर कई टुकड़े बनाकर वहीं फेंक कर वापस घर आ जावें तो आधी शीशी का दर्द समाप्त हो जायेगा।

### मर्दानगी जोश प्राप्त करने का टोटका

नित्य प्रातः काल बरगद वृक्ष का दस–दस बूंद दूध बताशे में डालकर खायें और उपर से गाय का दूध पियें। इससे जिस्म की कमजोरी दूर होकर मर्दानगी जोश बढ़ता है, पेशाब का जलन एवं रूक–रूक कर पेशाब आने वाली बिमारियों से छुटकारा मिल जाता है।

### औरतों का मासिक धर्म (माहवारी) ठीक करने के अनुभूत टोटके

(क) मजीठ को कूट छानकर मासिक धर्म की तारीख से चार दिन पहले से रोज डेढ़–डेढ़ चम्मच मजीठ का चूर्ण गाय के दूध के साथ पीने से रूक–रूक कर होने वाली महावारी का रक्तस्राव खुलकर आने लगती है और मासिक धर्म की समस्त रूकावट दूर हो जाता है। यह उपयोग चार महीने तक करें। ध्यान रहे, दवा मासिक धर्म आने की

तिथि से चार दिन पूर्व से रोज एक ही खुराक इस्तेमाल करे। यह हमारा आजमाया हुआ टोटका है जो रांमबाण का काम करता है।

(ख) इंद्रायण बुटी की जड़ आग पर जलाकर उसका धुआं सेवन करने से भी रूक–रूक कर आने वाली महावारी ठीक हो जाती है।

### फाइलेरिया रोग से मुक्त होने का टोटका

यह टोटका पाँव में होने वाली फाइलेरिया (फीलपांव) के लिए लाभदायक है। मदार पौधा की एक छोटी सी लकड़ी काले धागे के साथ पीड़ित के पांव में बांध देने से फीलपांव का बढ़ना रूक जाता है।

### अफरा रोग दूर करने का टोटका

कभी–कभी अधिक भोजन कर लेने के कारण पेट अफ़रने लगता है, इस अवस्था में निम्नलिखित उपाय करें–

(क) अधिक खाना खा लेने पर आधा निंबू जल में निचोड़ कर उसमें काला नमक डालकर एक ग्लास पी लें।

(ख) केले अधिक खा लेने पर छोटी इलायची (एक) खा लें।

(ग) अधिक आम खा लेने पर उपर से चार–पाँच जामुन खा लें।

### धतूरे का नशा उतारने वाला टोटका

यदि किसी ने धतूरे का बीज खा लिया हो तो उसे कोसे गर्म पानी में आधा चम्चम (छोटा चम्मच) नमक घोलकर पिलावें।

### शराब का नशा उतारने का टोटका

अगर किसी व्यक्ति ने शराब अधिक पी लिया हो तो 6 (छः) मासे फिटकिरी का चूर्ण कोशे दूध या पानी में पिलावें अथवा सेब का रस निकालकर पिलावें।

### बराबर बुखार पीड़ित रहने पर स्वस्थ होने हेतु टोटका

जो व्यक्ति बराबर ही बुखार से पीड़ित रहता हो वह आदमी किसी भी शनिवार या रविवार कों सूर्योदय से पूर्व चावल के सात दाने लेकर घर से चलें और आक की झाड़ी के पास चला जाये। आक की झाड़ के पास पूरब मुख खड़े होकर एक चावल का दाना आक के जड़ के पास रखकर बोले कि "हे ज्वर आपको शनिवार का निमंत्रण है, किन्तु बिना बुलाए नहीं आना।" दूसरा चावल रखकर कहे–हे ज्वर, आपको रविवार का निमंत्रण है, किन्तु बिना बुलाए नहीं आना। यही क्रम सप्ताह के दिनों का नाम लेकर कहें, तत्पश्चात् घर चले आयें।

ध्यान रहे घर से निकलते समय या राह में जाते समय आपको कोई टोके नहीं और आक के जड़ के पास से वापस आते समय आप पीछे मुड़कर न देखें। यह क्रिया करने से बराबर आने वाले बुखार से रोगी स्वस्थ होकर जीवन यापन करने लगता है।

### स्वप्न दोष दूर करने का टोटका

रात्रि के समय सोते समय हाथ–पांव अच्छी तरह से धोकर सोएं तो गहरी नींद आएगी और स्वप्नदोष नहीं होगा।

### उच्च पदाधिकारियों की कृपा प्राप्त कराने वाला टोटका

यदि आप नौकरी करते हैं और चाहते हैं कि उच्च पदाधिकारी आपके अनुकूल बना रहे और उनकी कृपा आप पर सदैव होती रहे, तो लक्ष्मण बुटी की जड़ को सिंदूर के साथ घिसकर नित्य ही तिलक लगावें।

### मनचाहे स्थान पर तबादला कराने वाला टोटका

यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं और मनचाहे स्थान पर बदली कराना चाहते हैं, तो सूर्योदय के समय 21 दिन लगातार लाल मिर्च के 21 बीज सूर्यदेव को अर्ध्यस्वरूप चढ़ावें तो मनचाहे स्थान पर आपकी बदली हो सकती है।

### उल्टी और दस्त बंद कराने वाला टोटका

यदि किसी व्यक्ति को उल्टी और दस्त हो रहा हो, तो दो तोला आम वृक्ष के मुलायम पत्ते कुचलकर आधा किलो पानी में उबालें। जब आधा पानी रह जाय तो उसे छानकर कोसे गर्म पानी रोगी को दो बार पिलावें। यह जल प्रथम बार पीने के दो घंटे बाद पुनः पिएं।

### गर्भपात रोकने वाला टोटका

जिन महिलाओं का बराबर गर्भपात हो जाया करता हो या जिनके गर्भ में बच्चा ऐंठ कर मर जाते हैं, उन्हें चाहिए कि सात कुओं का जल एक बाल्टी या घड़े में भरकर, उसमें पीपल के पत्ते, अरण्डी, बेरी, आक, बबूल और नीम के पत्ते डालकर सात चौराहे की एक–एक चुटकी मिट्टी डालें। फिर वह बर्तन उठाकर बेरी के वृक्ष के जड़ के पास ले जाकर स्नान कर ले, तो गर्भपात रोग से मुक्ति मिल जायेगी और स्वस्थ सन्तान उत्पन्न होगी। ध्यान रहे, यह प्रयोग किसी भी महीने के शुक्लपक्ष के रविवार को करें।

### पक्षाघात रोग से मुक्त होने का टोटका

नीम और अदरक के पत्ते को देशी घी में भूनकर 24 घंटे में 3 बार रोगी को छोटे चम्मच से एक-एक चम्मच पिलावें और वही घी शरीर में मालिश करें तो पक्षाघात रोग से मुक्ति मिल जाएगी।

### पीलिया रोग से मुक्त होने का टोटका

अदरक, चिरायता दोनों को समान भाग लेकर पीसकर मटर समान गोली बना लें। प्रतिदिन सुबह एक सप्ताह तक एक-एक गोली खाएं, तो पीलिया रोग से मुक्ति मिल जायेगी।

### वमन (कै) बंद करने का टोटका

नारियल की जटा को जलाकर, उसकी राख में थोड़ा सफेद नमक मिलाकर, उसे आधा ग्लास पानी में घोलकर, बच्चे को दिन में तीन बार एक-एक चम्मच पिलाने से वमन रोग दूर हो जाता है और बच्चा आराम से सोता है।

### सफेद कोढ़ से बचने हेतु टोटका

सावधान! मछली खाने के बाद दूध भूल से भी न पिएं, वरना सफेद कोढ़ हो जायेगा।

### गर्भ नहीं ठहरने वाला टोटका

यदि आपके एक-दो बच्चे हो गए हों और चाहते हों कि आपकी पत्नी को अब गर्भ नहीं ठहरे, तो 2 माशा हल्दी का चूर्ण माहवारी होने के पांच दिन बाद तीन दिन तक ताजे पानी के साथ पिएं। इससे गर्भ नहीं ठहरेगा।

### पांव का पकूहा रोग ठीक होने का टोटका

बरसात के समय कीचड़ और पानी में नंगे पांव चलने पर कई लोगों को पांव में "पकूहा रोग" लग जाता है, जिससे पांव की उंगलियां गलने लगती है। इस अवस्था में रात को सोते समय पीड़ित उँगलियों में सरसों का तेल मलकर उपर से मेंहदी का चूर्ण छिड़क दें। यह क्रिया एक सप्ताह तक दुहरावें।

### हिचकी रोग से मुक्त होने का टोटका

मूली के पत्ते (एक या दो मुलायम पत्ते) चबाकर खाने से हिचकी रूक जाती है।

### बिच्छू का जहर उतारने हेतु टोटका

यदि किसी व्यक्ति को बिच्छू ने काट लिया हो, तो बेर के पत्ते को पानी में पीसकर काटे हुए स्थान पर लेप करें। इस क्रिया से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

### चेचक रोग से मुक्त होने का टोटका

पांच तोला नीम की पत्तियों के रस में पांच काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर पीने से चेचक रोग से व्यक्ति स्वस्थ हो जाता है। परन्तु यह प्रयोग एक सप्ताह तक नित्य ही एक बार करें।

### हैजा रोग से मुक्ति पाने का टोटका

यदि कोई व्यक्ति हैजा रोग से पीड़ित हो और उल्टी–दस्त हो रहा हो तो निंबू का रस और प्याज का रस सम भाग में मिलाकर एक तोला प्रति घंटा पीने से हैजा रोग ठीक हो जाता है। यह क्रिया 5 से 7 बार दुहरावें।

### बच्चों के लिए बलवर्द्धक टोटका

यदि आपका शिशु (बच्चा) कमजोर है तो 5 से 10 बूंद तक तुलसी पत्ते का रस एक चम्मच पानी में मिलाकर नित्य ही प्रातःकाल पिलावें।

## नवग्रहों की अनिष्टता शांत करने हेतु महान चमत्कारिक टोटके

पाठको! कुछ लोगों को जन्म तारीख या जन्म समय का ज्ञान नहीं होता है, जिसके कारण उनकी जन्म पत्रिका नहीं बन सकती। ऐसे व्यक्ति जब किसी भयानक उपद्रव में फंस जाते हैं, रोग ग्रस्त हो जाते हैं या विपत्तियों से घिर जाते हैं तो उन्हें यह पता नहीं लगता कि किस ग्रहों की अनिष्टता से यह दुर्दशा हो रही है ? ऐसे दुखी लोग निम्न तांत्रिक प्रयोग द्वारा अनिष्ट ग्रहों को प्रसन्न कर जीवन सुखमय बना सकते हैं।

परन्तु ध्यान रहें तंत्र क्रिया में किसी बात का भी हेर–फेर करना या क्रिया में जरा सी भी भूल रह जाना, महादोष माना गया है। इससे सब किया कराया एकदम व्यर्थ हो जाता है। इसलिए साधक को चाहिए

कि जैसी क्रिया बताई जाये धैर्य के साथ वैसा ही करें, अपनी तरफ से हेर-फेर न करें। क्रिया की सफलता का नाम ही सिद्धि है। क्रिया आरम्भ करने से पूर्व सिद्ध गुरू जो तंत्र क्रिया का सिद्ध पुरुष हों, उनसे अवश्य परामर्श करें। क्रिया में सफलता पाने हेतु ग्रन्थ लेखक पंडित वाई.एन.झा. तूफान (फोन नं. 0181-490311) से सम्पर्क कायम कर सकते हैं।

### नवग्रहों की अनिष्टता निवारक विधि

आक, धतूरा, अपामार्ग (चिरचिटा) दूब, बरगद एवं पीपल की जड़ें, शमी (शीशम) ओम और गूलर के पत्ते मिट्टी के एक घड़े में डाल दें। इसके बाद गाय के दूध, घी, मट्ठा (छाछ) तथा गौमूत्र डालें। फिर चावल, चना, मूंग, गेहूं, काले एवं सफेद तिल, पीला सरसों, लाल एवं सफेद चन्दन का टुकड़ा एवं शहद डालकर घड़े के मुख के ऊपर मिट्टी का ही ढक्कन डाल दें। इसके बाद पीपल वृक्ष के पास घड़ा उठाकर ले जाकर रखें, तत्पश्चात् पीपल के जड़ के पास एक-डेढ़ हाथ गहरा गड्ढा खोदकर वह मिट्टी का बर्तन खड़ी अवस्था में गाड़ दें, ऊपर से पूर्ण रूपेण मिट्टी ढक दें। इसके बाद गाय के घी का दीपक और सुगन्धित अगरबत्ती जलावें। तत्पश्चात् काले कम्बल के आसन पर बैठकर रूद्राक्ष की 108 दाने वाली माला से 11 माला नीचे लिखित मंत्र का जप करें-

**मंत्र-"ॐ नमो भास्कराय सर्व ग्रहाणां पीड़ां नाश कुरु कुरु स्वाहा।।"**

मंत्र जप समाप्त होने के बाद पीपल वृक्ष को प्रणाम कर घर वापस आ जावें और पीछे मुड़कर न देखें।

**सावधानी-**

(क) इस क्रिया को गोपनीय रखें, किसी को न बताएं।

(ख) शनिवार के शाम को ही यह क्रिया करें।

(ग) मिट्टी के नए घड़े व ढक्कन का उपयोग करें।

(घ) घड़े में वस्तु डालते समय बिल्कुल मौन रहें।

(ङ) घड़े के मुख पर ढक्कन डालने के बाद फिर ढक्कन को भूल से भी न खोलें।

इस क्रिया से समस्त ग्रहों के उपद्रवों का विनाश होता है, महादरिद्रता का नाश होता है। रोग, शोक और असफलताएँ दूर होती है और व्यक्ति जबतक जीवित रहता है ग्रहादिक पीड़ाओं से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता है। यह क्रियाएँ सात्विक है।

## वनस्पतियों द्वारा अलग-अलग ग्रहों की अनिष्टता शांत करने हेतु विविध तेजस्वी टोटके

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अनिष्ट एवं क्रूर ग्रहों के रत्न धारण करने से अनुष्ठान कराने से ग्रहों की अनिष्टता का शमन होता है। परन्तु ज्योतिष शास्त्र के उपाय अत्यन्त कीमती एवं अत्यधिक परिश्रमी होते हैं, जो गरीब एवं निःसहाय मनुष्यों के लिए मुश्किल होता है। अतः वनस्पतियों द्वारा सहज उपचारों का प्रतिपादन तंत्र शास्त्र में किया गया है, जिनमें धन, श्रम और समय अत्यधिक खर्च नहीं होता। जिस मनुष्य पर ग्रह की खराब दशा आती है तब वह अशांति, रोग, दरिद्रता, असफलता एवं विभिन्न प्रकार की विपत्तियों से घिर जाता है। कुछ ग्रहों की दशा तो इतनी भंयकर होती है कि मनुष्यों को मृत्यु तुल्य कष्ट देती है या मार ही डालती है। ऐसी अवस्था में ग्रहों की अनिष्टता शांत करने हेतु प्रस्तुत है वनस्पतियों के धारण करने का आजमाए हुए अद्भुत चमत्कारी प्रयोग–

सूर्य–सूर्य यदि अनिष्ट की वर्षा कर रहे हों, तो रविवार के दिन लाल धागे में विल्व वृक्ष की जड़ तथा पत्ते का मूल भाग यानि डंठल बांधकर गले में धारण करने से सूर्यदेव धारणकर्त्ता पर प्रसन्न होकर अनिष्ट बरसाना बन्द कर देते हैं और जातक सुखी जीवन जीने लगता है।

चन्द्र–चन्द्रमा की शांति के लिए सोमवार के दिन "सिरनी की जड़" को विधिवत् निमंत्रित करके लाए और सफेद ऊनीं धागे में बांधकर दाहिने भुजा या गले में धारण करने से चन्द्र की प्रतिकूलता शांत हो जाती है।

मंगल–मंगल की शांति के लिए विधि विधान सहित "अनंत मूल की जड़" लाकर "ॐ मंगलाय नमः" मंत्र से अभिमंत्रित करके लाल डोरे या सोने की ताबीज़ में धारण करने से मंगल ग्रह की अनिष्टता शांत हो जाती है।

बुध–बुध के प्रकोप से बचने के लिए नियमानुसार बुधवार के दिन "विधारा की जड़" लाकर हरे रंग के डोरे में बांधकर "ॐ बुधाय नमः" मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

गुरू (बृहस्पति)–देवताओं के गुरू तथा विद्या–बुद्धि के स्वामी बृहस्पति यदि अनिष्ट प्रकोप डाल रहे हों तो जीवन कष्टमय बना देते हैं और हर जगह दुर्भाग्य का सामना करना होता है। ऐसी स्थिंति में बृहस्पति वार को केले की जड़ लाकर पीले धागे में धारण करें। अथवा ताजी हल्दी खेत से निकालकर पीली पकी हुई गांठ का चौकोर टुकड़ा बनाकर उसमें पीले रंग के डोरे पिरोकर गले में धारण करें।

शुक्र–शुक्र ग्रह की अनिष्टता निवारण हेतु शुक्रवार के दिन "सरपंखा की जड़" लाकर नीले रंग के धागे में पिरोकर "ॐ शुक्राय नमः" मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें। उपरोक्त वृहस्पति के उपाय करने में केले की जड़ या हल्दी पीले धागे में पिरोकर "ॐ बृहस्पतये नमः" मंत्र से अभिमंत्रित करके ही धारण करें।

शनि+राहु+केतु–यदि शनि राहु अथवा केतु ग्रहों की अनिष्टता से पीड़ित हों तो शनिवार के दिन "बिछुआ की जड़" लाकर काले धागे में पिरोकर "ॐ शं शनये नमः" मंत्र से अभिमंत्रित कर गले में धारण करें।

## टोटकों में प्रयोग होने वाली वनस्पति लाने की विधि

पाठकों! सभी प्रकार के तांत्रिक टोटकों को "रवि पुष्य" या "गुरू पुष्य योग" और नवमी या चतुदर्शी तिथि तथा गुरूवार, शनिवार या रविवार को करना चाहिए। टोटकों में प्रयोग होने वाले किसी भी वनस्पति, पौधे की जड़ छाल या पत्तियाँ विधि विधान के साथ लाने से ही सफलता मिलती है।

जिस दिन वनस्पति की आवश्यकता हो, उसके एक दिन पूर्व संध्या के समय वनस्पति के जड़ के पास जाकर उत्तर और पूरब की ओर मुख करके बैठ जाएं। तत्पश्चात् मम कार्य सिद्धि कुरू–कुरू स्वाहा मंत्र पढ़कर वनस्पति पर लाल डोरे बांध दें। इसके बाद रोली या हल्दी का तिलक लगाकर जल चढ़ावें। वनस्पति जड़ के पास एक पान का पत्ता, एक गोल सुपारी, पांच लड्डु और कुछ पुष्प चढ़ावें। इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर वनस्पति को प्रणाम करते हुए प्रार्थना करें–"हे वनस्पति देव! मैं कल प्रातः आपको लेने आऊँगा।" फिर दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही स्नान से पवित्र होकर निमंत्रित वनस्पति के पास जाएं और तांबे की गड़वी से वनस्पति को जल चढ़ाते हुए निम्म मंत्र का उच्चारण करें–

"वैतालाश्च पिशाचाश्य साक्षसाश्य सरीसृपः।
अपसर्पन्तु में सर्वे वृक्षा दस्माच्छि वाज्ञया।।"

तत्पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें–

नमस्तेऽमृत सम्भूते वलवीर्य विवर्धिनी।
बलमायुश्च में देहि पापान् मां त्राटि दूहे रतः।।

इसके बाद जड़, टहनी, छाल या पौधा आदि जो भी लेना हो तो उन्हें छूकर बोले–"अत्रेव तिष्ठ कल्याणि। मम कार्य करी भव। मम कार्य कृते सिद्धेः ततः स्वर्ग गमिष्यति।"

तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार जड़, टहनी या छाल लेकर घर ले आवें और आवश्यक प्रयोग करें।

सामर्थ्य भरी होगी।

घर आकर उस घोंसले को एक डिब्बे में बंद करके रखें। डिब्बे में बंद करने से पहले डिब्बे के पेंदे पर सिन्दूर, कपूर और सफेद चन्दन का चूरा बिछा दें।

आवश्यकता के समय उस डिब्बे में से एक तिनका निकाल कर पहले उसे दूध में स्नान करायें, फिर अपनी जेब अथवा सोने की ताबीज़ में मढ़वा कर गले अथवा दायीं भुजा में काले धागे में धारण करें और तब आप जिस कार्य के लिए जायेंगे उसमें सफलता अवश्य मिलेगी। इस शक्तिशाली टोटके से कई जातक लाभान्वित हो रहे हैं। इस उपरोक्त तिनके का यंत्र धारण करने से नौकरी, विवाह, सन्तान व परीक्षा में सफलताएं, मुकद्दमे में विजय, व्यापार में तरक्की, राज्याधिकारियों से सम्मान और समस्त सफलताएं हासिल होती हैं।

## छोटे बच्चों के ऊपर से "बुरी नजर दोष" उतारने के विभिन्न टोटके

पाठको। "बुरी नजर" से सभी परिचित हैं। इससे स्वस्थ बालक, व्यक्ति या पशु अस्वस्थ हो जाता है। बालक रोता रहता है, चिड़चिड़ा व दुबला–पतला हो जाता है और कोई भी दवाईयां उस पर असर नहीं करते। बड़े व्यक्ति को पाचन विकार आदि अनेकों रोग हो जाते हैं। गाय भैंस दूध देना कम कर देती है या देती ही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में निम्नलिखित उपायों द्वारा आप लाभ उठा सकते हैं –

1. नमक, राई, राल, लहसुन, प्याज के सूखे छिलके व सूखी मिर्च अंगारे पर डालकर उस आग को रोगी के ऊपर सात बार घुमाने से बुरे नजर का दोष मिट जाता है।

2. छोटे बच्चों के आँखों में काजल लगा दें और माथे पर भी काजल का टीका लगाते रहें। इससे बालक पर बुरी नजर नहीं लगती।

3. भूत–प्रेत व नजर से बचाने के लिए बच्चों के गले में काले रंग के धागे में रुद्राक्ष, घुंगची, चांदी का चन्द्रमा, ताम्बे का सूर्य, शेर का नाखून आदि की माला गले में धारण करावें।

4. बच्चों की कलाई व कमर में काले रंग का धागा बांधकर रक्खें।

5. शनिवार के दिन हनुमान जी के मंदिर में जाकर प्रेमपूर्वक हनुमान जी की अराधना कर, उनके कंधे से सिन्दूर लाकर, नजर लगे हुए व्यक्ति के माथे पर तिलक लगाने से नजर का प्रभाव दूर हो जाता है।

6. खाने के समय भी बच्चों को किसी की बुरी नजर लग जाती है। ऐसी परिस्थिति में इमली की तीन छोटी डालियों को लेकर आग में

जलाकर नजर लगे व्यक्ति के माथे पर से सात बार घुमा कर पानी में बुझा दें और वह पानी बच्चों को पिलाएं तो नजर दोष मिट जाता है।

7. रविवार या शनिवार के दिन नजर लगे व्यक्ति के ऊपर से तीन बार दूध उतार कर एक मिट्टी के ढक्कन में रखकर कुत्ते को पिला दें तो नजर दोष, समाप्त हो जाता है।

8. छोटे बच्चों को नजर न लगे अतः हाथ में चुटकी भर राख लेकर बृहस्पति के दिन "ॐ चैतन्य गोरख नाथ नमः" मंत्र का 108 बार जप करके फिर छोटी सी पुड़िया बना कर काले रेशमी धागे से बच्चे के गले में बांधने से बुरी नजर नहीं लगती।

9. यदि किसी बच्चे पर बुरी नजर लगी हो और यह निश्चित विश्वास हो कि अमुक स्त्री या पुरूष की नजर उस पर लगी है तो उस स्त्री–पुरूष को घर पर प्रेम से ही बुलाकर सिर पर उसका हाथ फेरवाने से लाभ होता है।

10. भोजन में नजर लगने पर तैयार भोजन में से सभी भोजन सामग्री थोड़ी–2 पत्ते पर लेकर उस पर गुलाल छिड़ककर, रास्ते पर रख दें, फिर बाद में भोजन करें तो भोजन सामग्री से नज़र दोष मिट जाता है।

11. अल्पायु में ही जन्मे बालक की मां को उसकी दीर्घायु होने की कामना से अपने बांये हाथ पर अश्वस्थामा, हनुमान आदि चिरंजीवी ऋषि–महार्षियों देवी–देवताओं के नाम अष्टमी तिथि को खुदवाना चाहिए।

12. गोबर के बनाये गये छोटे दीपक में गुड़ का टुकड़ा, तेल व रूई की बत्ती डालकर तथा उसको जलाकर दरवाजे के बीच में रखने से भी नजर का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

13. नजर लगे व्यक्ति को पान में गुलाब की सात पंखुड़ियां भी रखकर अपने इष्टदेव का नाम लेकर खिलाने से बुरी नजर का प्रभाव दूर होता है।

14. यदि नजर आदि की कोई बाहरी बाधा से ग्रसित हों तो घर के पास के वृक्ष की जड़ में शाम को थोड़ा दूध डालकर अगरबत्ती जलाकर रख दें तो बाहरी बाधा नष्ट हो जाती है।

15. लाल मिर्च, अजवायन और पीली सरसों को एक मिट्टी के छोटे बर्तन में आग लेकर उसमें जलावें। इसका धुंआ नजर लगे बच्चों को तपाने से बच्चों का रोना–छिछियाना आदि सब बुरी नजर का प्रभाव ठीक हो जाता है।

### *भवन निर्माण व अच्छी खेती को बुरी नजर से बचाने का टोटका*

भवन निर्माण के समय भवन के ऊपर तथा अच्छी फसल लगी खेतों में डंडे के सहारे एक हांडी के बाहरी भाग में काजल पोत कर, उस पर चूना व सिन्दूर का टीका लगाकर; अथवा राक्षस मुख की आकृति बना कर टांग देने से किसी की बुरी नजर नहीं लगती।

## शत्रुवों को पिड़ित करने हेतु विभिन्न चमत्कारी प्रभावशाली टोटके

1. रविवार के दिन जब पंचमी तिथि हो, उस दिन श्मशान की राख लाकर, गूगल की धूनी देकर अपने शत्रु के घर में डाल दें तो वहां प्रतिदिन कलह होना आरम्भ हो जाता है और अन्त में शत्रु को घर छोड़कर भाग जाना पड़ता है।

2. श्मशान में जाकर किसी मुर्दे के बांये पांव की हड्डी को ले आवें और उसे छील–छालकर कील बनाकर शत्रु के घर में गाड़ दें तो वहा प्रतिदिन कलह होना आरम्भ हो जाता है।

3. चूहे और बिल्ली के एक–एक बाल लेकर रविवार के दिन शत्रु के छप्पर में उरस देने से उसके घर में प्रतिदिन झगड़ा होता है और जब शत्रु घर से बाहर निकल जाता है, तभी उपद्रव शांत होता है।

4. कुत्ता, सुअर और बिल्ली–इन तीनों के दांत, मरघट की राख तथा चौराहे की धूलि इन पांचों वस्तुओं को इकट्ठी करके शत्रु के घर गाड़ देने से वहां दिन रात कलह होना आरम्भ हो जाता है।

5. रविवार के दिन दोपहर के समय जिस स्थान पर गदहा अथवा भैंसा लेटा हो, वहां की धूलि लाकर, गुगल की धूनि देकर, शत्रु के घर में डाल देने से वहां दिन रात उपद्रव एवं कलह होना प्रारम्भ हो जाता है।

## दो मित्रों में बैर कराने के विभिन्न अचूक टोटके

1. गिरगिट और मोर के सिर को लाकर, अच्छी तरह से सुखाकर चूर्ण बना लें। फिर जिन दो मित्रों में शत्रुता करानी हो उन दोनों के बीच उक्त चूर्ण की धूनि दी जाय तो उनमें बैर हो जाता है।

2. घुग्घू और कौवे के पंख को लेकर, शनिवार के दिन आधी रात के समय जलाकर भस्म बना लें। फिर जिन दो मित्रों में बैर कराना हो, उनके मस्तक पर उक्त भस्म को डाल देने से दोनों में विरोध हो जाता है।

3. काले सर्प की केचुल और नेवले के बाल, इन दोनों की दो मित्रों के बीच धूनी देने से उन दोनों में परस्पर शत्रुता हो जाती है।

4. शनिवार अथवा रविवार के दिन जब गदहा पेशाब कर रहा हो, तब उसे किसी बर्तन में भर लें, धरती पर न गिरने दें। फिर उसमें तीन दिन तक राई के दाने डालकर भीगने दें। तीसरे दिन राई के दानों को निकाल कर सुखा लें। फिर रविवार के दिन ही उक्त दानों की धूनि दो मित्रों के बीच में डालने से उन दोनों में शत्रुता हो जाती है।

5. पुरुष का वस्त्र और स्त्री के सिर के बाल इन दोनों को मंगलवार के दिन जलाकर, उस राख को जिस स्त्री–पुरुष के मस्तक पर डाल दिया जाय उसमें परस्पर शत्रुता हो जाती है।

### शत्रु का मूत्र बन्द करने का टोटका

जिस स्थान पर शत्रु ने पेशाब किया हो, वहां की मिट्टी लाकर, छछूंदर की खाल में भर दें। छछूंदर रविवार के दिन मारना चाहिए। फिर उस छछूंदर की खाल को किसी ऊंचे स्थान पर लटका दें तो जब तक वह खाल लटका रहेगा तब तक शत्रु का पेशाब बन्द रहेगा और उसे बेहद कष्ट होगा। जब उस खाल में से मिट्टी निकाल ली जायेगी, तब उसका पेशाब उतर आयेगा।

### बैरी को बीमार करने का टोटका

शत्रु के पांव की औंधी (उल्टी) पड़ी हुई जूती को रविवार अथवा शनिवार के दिन लाकर पानी में गरम करने से बैरी बीमार हो जाता है।

### बैरी को अति कष्ट पहुंचाने का टोटका

सोमवार या मंगलवार को श्मशान की धूलि लाकर उसमें राई मिला दें। फिर आक की लकड़ी जलाकर उस अग्नि में उपरोक्त दोनों वस्तुओं को मिलाकर हवन करें। हवन करते समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते जाय। –

"अमुकस्य हन–हन स्वाहा"

अमुक के स्थान पर शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस तरह आहुतियां देने से बैरी को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं।

### शत्रु को ज्वर चढ़ाने-उतारने का टोटका

रविवार के दिन जब "पुष्य नक्षत्र" हो, उस दिन इन्द्रायण बूटी की जड़ लाकर, उसमें पीपल, सोंठ और काली मिर्च मिलाकर, बकरी के दूध में पीस कर गोली बना लें। उक्त गोली को जिस शत्रु के मस्तक पर रख दिया जायेगा। उसे ज्वर आ जायेगा। जब उसे कांजी के पानी से स्नान कराया जायेगा, तभी उसका यह ज्वर उतरेगा।

### शत्रु को पागल करने का टोटका

कौए का पंख व दायां पांव तथा सियार की पूंछ, उन तीनों वस्तुओं को रविवार के दिन लाकर गूगल की धूनि देकर, गुप्त रूप से शत्रु की खाट से बांध दें। जो मनुष्य उस खाट पर सोएगा, वह पागल हो जाएगा।

## बालक की नाल के गुण

### सन्तना प्राप्ति के विभिन्न टोटके

1. जिस स्त्री के पहली सन्तान हो, उस लड़के की नाल जो निःसन्तान स्त्री खोलेगी, उसे सन्तान की प्राप्ति अवश्य मिलेगी।

2. किसी भी बच्चे का दूध का दांत गिरते समय बंध्या का स्पर्श न करने दे। उसके बाद नये सफेद सूती कपड़े में दांत को रखकर, अपनी कमर में बांध कर रति कर्म में प्रवृत्त हो तो वह स्त्री गर्भ धारण अवश्य करती है।

3. जो बांझ स्त्री बालक की नाल को थोड़ा सा खाती है, उसे गर्भ ठहर जाता है और पुत्र सन्तान ही उत्पन्न करती है।

4. यदि कोई स्त्री बालक की नाल को अपनी कमर में बांधे तो उसे अवश्य पुत्र प्राप्त होता है।

5. यदि बन्दी व्यक्ति बालक की नाल को अपने पास रक्खे तो वह बन्धन से छूट जाता है।

6. नवजात शिशु की नाल को यदि कोई रोगी अपने पास रखे तो उसका रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

7. बालक की नाल के गुणों का वर्णन करने से भी सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है।

## बालक के पहले दांत के कई चमत्कारी गुण

जिस बालक का पहला दांत टूटे, उसे नीचे पृथ्वी पर न गिरने दें। नीचे गिरने से पहले ही उसे हथेली में या कागज पर लेकर किसी पवित्र स्थान में कपड़े आदि में लपेट कर रख लें।

इस पहले दांत में निम्नलिखित गुण हैं –

1. जो स्त्री बालक के पहले दांत को अपने पास रखती है, उसे पुत्र की प्राप्ति होती है।

2. जो स्त्री बालक के पहले दांत को अपनी कमर में बांधे रखती है, उसे गर्भ नहीं ठहरता।

3. बालक के दांत को अपनी मुट्ठी में बंद करके राज–सभा में जाने से, वहां बैठे हुए सब शत्रुवों के मुंह बन्द हो जाते हैं तथा अपने समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।

## सियार की नाभि के कई गुण

इस शीर्षक में – ''सियार की नाभि'' का तात्पर्य गीदड़ की नाभि से जुड़ा नहीं है। यहां ''सियार की नाभि'' जंगल में हल्की और गोल, सुहावने प्रकार की जो ''घास'' कही करोल के पेड़ के पास तो कहीं

कांटे के पास उत्पन्न होता है उसे "सियार की नाभि" कहा गया है। कहीं कहीं पर इस घास को "कौवे की काँच" भी कहते हैं। इस घास में बहुत गुण हैं, जो नीचे वर्णित है।

1. सियार की नाभि के एक टुकड़े को आधा पाव गाय के घी में डालकर, कड़ाही में डाल अग्नि पर चढ़ा दें। जब घी खूब गरम हो जाय तथा नाभि जल जाय, तब किसी लोहे के डंडे से नाभि को रगड़ कर घी में पूर्ण रूप से मिला दें। फिर घी को नीचे उतार कर रख लें।

जिस व्यक्ति के दांत में कीड़ा हो और दर्द होता हो, उसके उसी ओर के कान में उक्त घृत की दो बूंद डालें। फिर दो मिनट बीत जाने पर दूसरी ओर के कान में भी थोड़ा सा घी डाल दें। इस क्रिया से दांत के सब कीड़े मर जाते हैं और रोगी को आराम मिलता है।

2. सियार की नाभि को कैंची से महीन काटकर गुड़ में मिलाकर चार गोली बनावें। फिर जिसे "शूल" होता हो, उसको एक गोली गर्म पानी के साथ खिला दें। यदि पीड़ा कम न हो तो दो घंटे बाद एक गोली और खिलावें। इस तरह चार गोलियां खिला देने से "उदर शूल" की पीड़ा पूरी तरह से दूर हो जाती है।

## "अंकोल" के गुण और उसके अद्‌भुत चमत्कारी प्रयोग

"अंकोल" जंगली बूटी वृक्ष है। इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के "तांत्रिक साधना" में भी होता है। अंकोल के कुछ चमत्कारी प्रयोग नीचे लिख रहा हूं।

1. अंकोल के बीजों के तेल में घी मिलाकर, दीपक जलावें तथा "काजल" पार लें। जब "पुण्य नक्षत्र" आवे, उस समय उस काजल को सुरमा की तरह आंखों में लगाकर रात में सोने से स्वप्न में – पूर्व जन्म का वृत्तान्त ज्ञात हो जाता है।

2. "तगर" के एक फल का चूर्ण बनाकर उसे अंकोल के तेल में मिलाकर आंखों में आंजने से जहां भी दृष्टि जायेगी, वहीं देवि–देवता दिखाई पड़ेंगे। जब तगर के तेल को आंखों में लगाया जायेगा, तब पुनः मानवी दृष्टि प्राप्त हो जायेगी।

## अपामार्ग बुटी के गुण और उसके अद्‌भुत चमत्कारी प्रयोग

"अपामार्ग" जिसे औंगा अथवा चिरमिटा भी कहते हैं। उसमें अनेक गुण पाये जाते हैं तथा अनेकों तांत्रिक साधना में इस बूटी का प्रयोग होता है।

### *बूटी लाने की विधि*

कभी भी किसी भी कार्य की सिद्धि हेतु, या कामनावों की पूर्ति हेतु टोटके में प्रयोग करना हो तो शनिवार के दिन संध्या के समय वन

में जाकर जहां पर अपामार्ग के पौधे को देखे, यहां उसे नमस्कार करके मोली के सात तार उस पौधे पर लपेट दें तथा गूगल की धूनि देकर, मस्तक झुका कर इस प्रकार कहें – "हे महाराज! आपकी महिमा अपरम्पार है। आप मेरी मनोकामना को पूर्ण करें।" यह कहकर अपने घर को लौट आवें तथा पीछे की ओर मुड़कर न देखें। फिर दूसरे दिन रविवार को प्रतःकाल सूर्योदय से बहुत पहले ही नंगा होकर उस पौधे के पास जाकर अपने दाएं हाथ से जड़ सहित उखाड़ लें। पौधे के ऊपर अपनी छाया नहीं पड़ने देनी चाहिए तथा लाते समय पीछे की ओर मुड़कर नहीं देखना चाहिए।

पौधे को घर लाकर धूप दिखावें तथा किसी ऐसे पवित्र और स्वच्छ स्थान में उसे रक्खें, जहां किसी की छाया उस पर न पड़े, तदुपरान्त उसे प्रयोग में लेना चाहिए।

टोटके अथवा सिद्धि साधना कार्य हेतु किसी भी बूटी को वन से लाने हेतु उपरोक्त विधि ही अपनाना चाहिए।

### *प्रयोग*

अपामार्ग के कुछ प्रयोग निम्नानुसार हैं –

1. जब "पुण्य नक्षत्र" आवे तब सोने का ताबीज बनवा कर, उसमें पूर्वोक्त विधि से लाये हुए अपामार्ग बुटी का कुछ अंश भर दें और ताबीज का मुंह असली मोम से बन्द कर दें।

तत्पश्चात् आवश्यकता होने पर – जिस व्यक्ति की नाभि चली गई हो, उसकी नाभि पर बांध दें, जिसे धरन पड़ गया हो, उसकी धरन पे बांध दें। जिसकी कौड़ी हट गई हो, उसकी कौड़ी पर बांध दें तो उक्त सभी अपने ठिकाने पर आ जाती है।

2. पवित्र रूप से खीर बनाकर उसमें पूर्वोक्त विधि से लाए गये अपामार्ग खीर के हांडी में भर दें तथा हांडी का मुंह बन्द करके उसके ऊपर गुड़ और चूना मिलाकर इस प्रकार लगा दें कि हांडी के भीतर पानी न जाने पाए। फिर उस हांडी को बहते हुए पानी नदी में, जितने दिन भूखे रहने का संकल्प करना हो, करके हांडी गाड दें। संकल्प की अवधि तक हांडी गाड़ने वाले को भूख नहीं लगेगी। अवधि बीत जाने पर उस हांडी को नदी से बाहर कर लें और ढक्कन खोलकर उसका खीर निकाल कर खायें तो फिर भूख लग जायेगी।

3. जिस व्यक्ति को सर्दी (जाड़ा–ठंड) लगकर बार–बार बुखार आता हो, उसे सिद्ध अपामार्ग की ढाई पत्ती गुड़ में मिलाकर, जिस समय बुखार ना हो खिला दें तो उसे बुखार आना बन्द हो जायेगा।

4. यदि किसी को बिच्छू ने काट लिया हो तो काटे हुए स्थान पर अपामार्ग की पत्ती पीसकर लगा देने से तथा रोगी को खिलाने से जहर उतर जाता है तथा डंक की पीड़ा दूर हो जाती है।

## नौकरी में पदोन्नति पाने हेतु टोटका

नौकरी में तरक्की पाने के लिए एक सप्ताह तक प्रतिदिन प्रातःकाल कौवों का झुण्ड इकट्ठा होगा और उनके शरीर आपस में रगड़े खायेंगे तो उनके छोटे–छोटे पंख उस स्थान पर गिरेंगे, उनमें जो–जो पंख अति छोटे तथा सफेद रंग के हों (यह पंख कौवे के पेट के हिस्से के होते है) चुनकर रखते जाएं। एक सप्ताह में बहुत से पंख इकट्ठे हो जायेंगे। तब उन पंखों को शुद्ध शहद में भिगो लें। फिर मोम को गरम करकें उन शहद युक्त पंखों को मोम की सहायता से एक पतली रस्सी बना लें। जिस समय अपनी तरक्की के सम्बन्ध में कोई प्रार्थना पत्र लिखना हो अथवा किसी अधिकारी से भेंट करने के लिए जाना हो उस समय उक्त पंखों की रस्सी को अपने दाएं हाथ की कलाई में बांध लें। इस साधन के करने से नौकरी में पदोन्नति मिलेगी।

## गुमशुदा व्यक्ति को घर बुलाने का टोटका

यदि कोई मनुष्य अथवा बालक राह भटक गया हो अथवा घर से भाग गया हो और ढूंढने पर भी उसका पता न चल रहा हो तो उस स्थिति में निम्नलिखित टोटका का उपयोग करें –

शाम के समय किसी ऐसे कौवे को पकड़ लावें जो कि अपना घोंसला भूलकर आकाश में इधर–उधर भटक रहा हो। उसे घर लाकर, उसके सामने पहले कपूर तथा सफेद चन्दन की धूनी दें। फिर उसे पिंजरे में बंद करके गाय के दूध में थोड़ा सा शहद मिलाकर किसी चीनी मिट्टी के बर्तन में भरकर पीने के लिए रख दें। यदि कौवा रात भर में उस दूध को पी ले तो कहना ही क्या है ? अन्यथा दूसरे दिन प्रातःकाल उसे साधारण दाना देकर रात्रि के समय उसे फिर पहले की तरह दूध दें। उस रात्रि को भी यदि वह दूध पी ले तो ठीक है वरना तीसरे दिन कि रात्रि में भी उसी प्रकार दूध दें।

जिस रात्रि को वह दूध पी ले, उसके दूसरें दिन सुबह ही कौवे को उसी स्थान पर ले जाकर छोड़ आवें, जहां से कि उसे पकड़ा था। उस स्थिति में उधर तो वह कौवा अपने घोंसले में पहुंच जायेगा इधर आपका खोया हुआ सम्बन्धी घर के लिए वापस लौट पड़ेगा और अपने स्थान से जितनी देर में वह आ सकता होगा, उतनी देर में वह घर चला आयेगा। अन्यथा उसके बारे में आपको सही सूचना मिल जायेगी, उस स्थिति में आप उसे वहां जाकर ले आवें।

# "उल्लू पक्षी" के अद्‌भुत चमत्कारी गुण व प्रयोग विधि

"उल्लू" ही एक मात्र ऐसा पक्षी है जो दिन में देख नहीं सकता। उसकी आंखों की बनावट ही कुछ इस प्रकार की है कि वह सूर्य की रोशनी या प्रकाश में देख नहीं सकता। उसकी आंखें चौंधिया जाती हैं, उसे केवल अन्धकार में ही (रात्रि को) दिखाई पड़ता है।

उल्लू की उड़ान सुनसान, भयानक स्थानों, खंडहर आदि में अधिक होती है।

शकुन शास्त्र के अनुसार जिस भवन पर उल्लू अथवा चील बैठती है वह शीघ्र ही आपदावों की परिधि में आ जाता है।

उल्लू एक डरावना पर सुन्दर पक्षी माना गया है, उसकी बोली अशुभ है। कहा जाता है कि अगर उल्लू किसी का नाम लेकर पुकारे तो उसकी मृत्यु लगभग निश्चित होती है। उल्लू निर्जनता व विपदा का प्रतीक है।

कुरूप, डरावनी, विकृत और तमाम अपशकुनों के बावजूद उल्लू लक्ष्मी का वाहन मान गया है। धन की देवी उल्लू को ही वाहन के रूप में प्रयोग करती हैं। अपनी आकृति और व्यवहार के कारण उल्लू का तंत्र मंत्र में बड़ा महत्व माना गया है। सच तो यह है कि उल्लू की छिपी उपयोगिता को केवल "तांत्रिकों" ने ही पहचाना है। इसी कारण एक अलग ही शाखा "उलूक तंत्र" के नाम से स्थापित हो गई है। उल्लू की विशेषता है वह जीवित अवस्था में और मरने के बाद दोनों ही स्थितियों में तंत्र–मंत्र में उपयोगी सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त तांत्रिक लोग उल्लू के हर अंग का तंत्र में उपयोग करते हैं।

1. प्रातःकाल पूर्व दिशा में उल्लू बोले तो उस दिन श्रोता को धन मिलता है।

2. प्रातःकाल पश्चिम दिशा में उल्लू बोले तो श्रोता को उस दिन धन–सम्पत्ति की हानि अथवा पशुवों की मृत्यु होती है।

3. दक्षिण दिशा में उल्लू बोले तो श्रोता के लिए शुभ होता है। मुकद्दमे में जीत, पदोन्नति एवं धन लाभ होता है।

4. रात्रि में पूर्व दिशा में उल्लू बोले तो शुभ, यात्रा के समय उल्लू पीछे बोले तो यात्रा का उद्देश्य पूर्ण होता है।

5. अगर किसी के घर लगातार उल्लू बोले तो चोरी, पशु हानि की सूचक है।

6. रात्रि के समय उल्लू बिना आवाज किए बिस्तर पर आ बैठे तो मंगल होता है।

7. बिना आवाज किए रोगी के बिस्तर पर जा बैठे तो रोगी शीघ्र ही अच्छा हो जाता है।

8. प्रातःकाल उल्लू के किसी अंग का स्पर्श अनायास हो जाये तो वह दिन मंगलमय होगा।

9. उल्लू पक्षी का लम्बी चीख मृत्यु का सूचक, दो चीखें–कार्य में सफलता, तीन चीखें–कन्या जन्म, चार चीखें–उपद्रव, पांच चीखें–यात्रा प्रसंग, छः चीखें–मेहमान आगमन, सात चीखें–बीमारी, आठ चीखें–विजय का सूचक मानी जाती हैं। इसके बाद उल्लू लगातार चीखना मृत्यु का सूचक है।

## उल्लू के अंग से महालक्ष्मी साधना

उलूक साधना प्रायः दीपावली के अवसर पर ही की जाती है। श्रद्धा, निष्ठा और एकाग्रता के साथ इस साधना को सम्पन्न कर आप लाभान्वित हो सकते हैं।

दीपावली के पूर्व कभी भी किसी भी समय उल्लू का पंख एक प्राप्त कर ले। दीपावली के दिन उस पंख को लक्ष्मी की प्रतिमा या तस्वीर के तले रख दें। पूजा–उपासना के उपरान्त पंख को हवन कुंड में भस्म कर लें। जब तक वह पंख भस्म हो, आप निम्न मंत्र का जप करते रहें –

"फाल पखाल मुस्सका क्लोन कजार मजरा खाऊँ।
आठ पहर में घड़ी जगमोहन मेरा नाऊँ।।"

पंख जलने पर दुर्गन्ध अवश्य होगी, परन्तु आप उस ओर ध्यान न दें। उसके बाद वह भस्म एकत्रित कर लाल रंग के कपड़े में बाँध लें। अब यह तिलस्मी भस्म तैयार है। इसे घर के किसी कोने में छिपाकर रख दें।

जब तक यह पोटली आपके घर में रहेगी, धन का अभाव कदापि न होगा, परन्तु इस बात की किसी से चर्चा न करें। यह अत्यन्त सरल साधारण किन्तु महा उपयोगी साधना है, प्रत्येक गृहस्थ बिना किसी भय के कर सकता है। आप इस साधना को करें, आपका कोई भी कार्य धनाभाव के कारण नहीं रूके, यही हमारी कामना है।

## उल्लू के चित्र द्वारा व्यापार में सफलता

उल्लू वास्तव में "लक्ष्मी" का प्रतीक है, इसका प्रमाण आज भी है। जिन व्यवसायियों ने इसका प्रयोग "व्यापार चिन्ह" के रूप में करता है वह करोड़पति बन जाते हैं।

विश्व प्रसिद्ध हथियार का सौदागर "औनासिस" और अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति की सुन्दर पत्नी जैक्लीन कैनेडी से विवाह करने वाला खरबपति है, उसका व्यापार चिन्ह उल्लू है। जो भी व्यक्ति उल्लू पक्षी का चिन्ह अपने व्यापार कार्यालय में, प्रतिष्ठानों में लगाते हैं वहा लक्ष्मी स्वयं निवास करती हैं।

# द्वितीय खण्ड

## "ताबीजों" द्वारा कष्ट निवारण

मानव जीवन की आवश्यकता और आकांक्षावों की पूर्ति के अनेक साधनों में यंत्र–मंत्र सरल और सुगम साधन है। यह भ्रम सर्वथा निर्मूल है कि यंत्र–मंत्र केवल भूल–भूलैया अथवा मन बहलाने का नाम है। यंत्र–मंत्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता–जागता प्रमाण है। आधुनिक विज्ञान और तन्त्र विज्ञान में बहुत समानता होते हुए भी तंत्र में स्थायित्व है, सत्य है और कल्याण है।

तंत्र विधान का शास्त्रीय परिचय और विधियों का सर्वांगीण ज्ञान साधना को सफल बनाकर सिद्धि तक पहुंचाता है।

लोक कल्याण और आत्म कल्याण की कामना से किए गए यांत्रिक व तांत्रिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में लाभदायी होते हैं।

इस पुस्तक में दिए गये गंडे, ताबीज व तंत्र एवं टोटके प्राचीनतम्, प्रामाणिक, अनुपलब्ध पुस्तकों से, महान तांत्रिक गुरूवों से प्राप्त किए गये हैं और उन्हीं यंत्र–मंत्र–तंत्र व टोटके को इस पुस्तक में स्थान दिया गया है, जिसकी सत्यता निर्विवाद है।

### *ताबीज (यंत्र) मंत्र व तंत्र साधक स्मरण रखें*

तांत्रिक–साधना के प्रत्येक साधक को निम्मलिखित बातें सदैव स्मरण रखनी चाहिए–

1. प्रत्येक यंत्र–मंत्र व तंत्र साधना की सिद्धि साधक के आचरण पर निर्भर करती है। मन–वचन तथा कर्म से पवित्र, विश्वासी, श्रद्धालु, परोपकारी, स्वार्थरहित एवं विवेकी साधक ही तांत्रिक साधना की सिद्धि में सफलता प्राप्त कर पाते हैं।

2. काम, क्रोध, मद्, लोभ, मोह, हिंसा एवं दूसरों को हानि पंहुंचाने के उद्देश्य से किये गये साधन निष्फल हो जाते हैं।

3. तांत्रिक साधना में अथवा यंत्र साधना में सफलता प्राप्ति के लिए किसी अनुभवी गुरू का मार्ग–दर्शन प्राप्त करना आवश्यक होता है। सामान्य प्रयोग तो अध्ययन एवं अभ्यास से ही सिद्ध हो जाते हैं, परन्तु विशिष्ठ प्रयोगों की सिद्धि के लिए किसी सुयोग्य गुरू का शिष्यत्व ग्रहण करना चाहिए।

4. धर्म, नीति, सत्य, न्याय, सदाचार, नैतिकता एवं कानून के विरूद्ध तांत्रिक सिद्धि का प्रयोग भूलकर भी नहीं करना चाहिए।

5. प्रस्तुत संकलन प्राचीन तांत्रिक साधन विधियों से पाठकों

को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से लेखन एवं प्रकाशित किया गया है। इन साधनों का प्रयोग किसी को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से कभी नहीं करना चाहिए। प्रमादवश होने वाली हानि का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व स्वयं साधक पर ही होगा।

6. ठंडा शीतल जल प्राप्त करने हेतु कुआ बनाया गया है, यदि कोई मन्दबुद्धि स्त्री या पुरूष घर से कलह या किसी भी कारण कुँए में गिरकर आत्म हत्या कर ले तो कुएँ बनाने वाले का क्या दोष ? पर प्रभु के आगे किसी का वश नहीं चलता। इस पुस्तक के पूर्व भी हमारी लिखी हुई कई तांत्रिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिसके प्रयोग से अनेकानेक लोग लाभान्वित हो रहे हैं और कुछ लोग प्राण से भी हाथ धो बैठे हैं। इसका कारण है तांत्रिक साधना का गलत प्रयोग।

## ताबीज (यंत्र) लिखने की विधि

श्रद्धा यंत्रों का प्राण है। श्रद्धापूर्वक यंत्र निर्माण करना ही जीवन है। यंत्रों में रेखावों, बीजों को, बीजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है। यंत्र के प्रति सन्देह करने से यंत्र मृत हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती।

यंत्र के बारे में यह भी कहा गया है कि – "कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत।" क्योंकि यंत्र लिखते समय जरा सी भी असावधानी मौत के मुंह में झोंक देती है। इसलिए यंत्र साधना की अभिष्ठ सिद्धि प्राप्ति हेतु किसी सिद्ध गुरू से अवश्य शिक्षा लेनी चाहिए।

जिस पद्धति के द्वारा यंत्र का निर्माण करना हो उसके सम्प्रदायकगत आचारों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। यंत्र की प्रयोग विधि पुस्तकों में मिलती जरूर है, किन्तु पुस्तकों को सिर्फ पथ प्रदर्शक ही समझें, क्योंकि इसका अनुभवी ज्ञान और दिशा गुरू ही निर्धारित करता है।

यंत्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्म शक्तियों को उदय करता है। यंत्र की रचना करते समय रेखाएं शुद्ध भाव का अवलोकन करके खींचनी चाहिए क्योंकि यंत्र की रेखाएं ही मनुष्य के अन्तःकरण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती हैं। उस समय मन तथा चित्त के सहयोग से आसक्ति उत्पन्न होती है और अहंकार तथा बुद्धि के सहयोग से "भांव तत्व" का उदय होता है, तब अन्तःकरण निर्मल बन जाता है और साधक की मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

## ताबीजों (यन्त्रों) की रेखाएं, सूक्ष्म शब्द एवं अंकों का महत्व

ताबीजों में खींची जाने वाली रेखाएं, सूक्ष्म शब्द और समस्त अंक साक्षात देवी और देवता हैं। जैसे कि एक वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकता है कि – "एच०ओ०" का क्या तात्पर्य है, उसी प्रकार एक

तांत्रिक ही समझ सकता है कि – फ्रीं, ह्रीं, क्लीं, गं और श्रीं क्या है। ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी व देवता के स्वरूप हैं। जैसे – फ्रीं का मतलब माता महाकाली, ह्रीं का तात्पर्य भगवती दुर्गा, क्लीं व फ्रीं का तात्पर्य कात्यायनि भगवती महाकाली, श्री का मतलब – धन प्रदायिनी लक्ष्मी और गं का तात्पर्य सिद्धि दाता भगवान श्री गणेश से सम्बन्धित हैं।

इतना ही नहीं यंत्र के लाईन, त्रिकोन, भुपुर आदि का भी बहुत विशाल और अद्‌भुत अर्थ है, जैसे – बिन्दु का तात्पर्य ''ब्रह्मा'', त्रिकोण का मतलब ''शिव'' और ''भुपूर'' की तुलना भगवती से की गई है। इन यंत्रों का रेखा चित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखा चित्र हैं जो सूक्ष्म सशक्त रूप से कार्य करते हैं। अतः यंत्र की रेखा चित्र, अंक आदि का निर्माण सही ढंग से ही करें।

## यन्त्रों के प्रकार

पाठको! जिस तरह से वैदिक, पौराणिक, तांत्रिक एवं शाबर चार प्रकार के मंत्र माने गए हैं। उसी प्रकार से यंत्र भी चार प्रकार के होते हैं, जिसका नाम सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध और अरि कहा गया है।

''सिद्ध यंत्र'' साधना करने पर ''सिद्धि'' होती है। ''साध्य'' प्रयत्न करने पर और ''सुसिद्ध'' शीघ्र ही सिद्ध हो जाते है। किन्तु ''अरि'' यंत्र साधक को विनाश के कगार पर पहुंचा देता है।

कुछ यंत्र इस प्रकार के हैं जिसे दिव्य यंत्र कहा जाता है, क्योंकि इन्हें सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं होती। शुभ नक्षत्र, शुभवार, शुभ मुर्हूत में नियमपूर्वक लिखते–लिखते ही सिद्ध हो जाता है। बीसा यंत्र और पंचदशी यंत्र, श्री यंत्र आदि दिव्य यन्त्रों की श्रेणी में आते हैं।

मंत्र की तरह ही यंत्र का बीज, शक्ति और रहस्य हुआ करते हैं, किन्तु यंत्र साधन में संकल्प एवं विनियोग श्रद्धा में अन्तर्हित हो जाते हैं, इसलिएं इनका व्यवहार स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता। यंत्र में निहित रहस्य से जब तक आप परिचित नहीं होंगे, तब तक आप अपने प्रति तथा इस विद्या के प्रति न्याय नहीं कर पायेंगे।

## यंत्र-मंत्र साधना सम्बन्धी नियम

''ताबीज'' अर्थात यंत्र व मंत्र साधना में निम्नलिखित नियमों का पालन करना अति आवश्यक है –

1. यंत्र लिखने व मंत्र साधना हेतु कोई एकान्त स्थान निश्चित कर लेना चाहिए और जब तक प्रयोग सिद्ध न हो जाय, तब तक उसी स्थान पर साधना करते रहना चाहिए।

2. निर्धारित स्थान पर ही जप करने एवं यंत्र लिखने से सिद्धियां प्राप्त होती हैं और स्थान विशेष के अनुसार ही यंत्र व अनुष्ठान फलदायी होता है। इन स्थानों में जैसे–सिद्ध पीठ, पुण्य क्षेत्र, गुफा,

पर्वत का संगम, पीपल, आंवला व बिल्व वृक्ष के नीचे, तुलशीकाननं, उद्यान, देवालय, शिवालय, नदी अथवा सरोवर तट, अथवा घर के एकान्त शुद्ध स्थान पर बैठकर ही जप–तप या यंत्र लिखने की साधना सफलताएं प्राप्त कराती हैं।

3. बिना नागा प्रतिदिन निश्चित समय पर उसी स्थान पर करना चाहिए जहां प्रथम दिन यंत्र–मंत्र साधना प्रारम्भ किया गया हो। यदि निश्चित अवधि से एक दिन भी छूट गया तो सम्पूर्ण साधना निष्फल हो जायेगी।

4. यंत्र–मंत्र साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूपेण पालन करना चाहिए तथा स्त्री के साथ हम बिस्तर नहीं होना चाहिए।

5. जिस साधना में जानवर की खाल की मनाही की गई हो, उसका साधना करते समय स्पर्श न करें, न ही चमड़े के जूते पहनें और न किसी ऐसी वस्तु से हाथ लगाना चाहिए, जो किसी जानवर के चमड़े द्वारा निर्मित हो।

6. साधना के दौरान किसी से लड़ाई–झगड़ा करने से परहेज लाजमी है। साधना की अवधि में ऐसी कोई हरकत नहीं होनी चाहिए, जिसके कारण किसी के दिल पर ठेस पहुंच सके।

7. साधना के दौरान अपने परिवारजनों, विशेषकर माता–पिता का प्रसन्न बना रहना आवश्यक है।

8. साधना की अवधि में जो भी शुभ काम किए जा सकते हों, उन्हें अवश्य करते रहना चाहिए।

9. साधना के दौरान यदि कोई याचक आपके दरवाजे पर आकर याचना करे (कुछ मांगे) तो उसे निराश नहीं लौटाना चाहिए, शक्ति के अनुसार उसकी इच्छा पूर्ति अवश्य करनी चाहिए।

यदि उक्त नियमों का पालन नहीं किया गया तो साधना की अवधि में किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है तथा मनोभिलाषा की पूर्ति नहीं हो पाती। परन्तु यदि उक्त हिदायतों का पूरा–पूरा पालन किया जाय तो परमात्मा की कृपा से कामयाबी जरूर हासिल होती है।

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि किसी यंत्र–मंत्र प्रयोग की साधना करने के बावजूद भी सफलता नहीं मिल पाती। ऐसी स्थिति में साधक को यह देखना चाहिए कि जिन नियमों का पालन करने की हिदायत दी गई है, उनमें कौन सी त्रुटि रह गई। जब वह त्रुटि पकड़ में आ जाय, तब उसका निराकरण करते हुए दुबारा साधना आरम्भ करनी चाहिए तो उसमें सफलता मिलने की आशा रहेगी।

यदि दूसरी बार भी असफलता हाथ लगे तो निराश न हों क्योंकि यंत्र–मंत्र की दिव्य शक्तियों को हासिल करना कोई खेल नहीं। दूसरी असफलता के कारणों का भी पता लगाना चाहिए, क्योंकि बिना कोई क़मी रहे असफलता मिलने का सवाल ही नहीं उठता।

हमारी पूर्व लिखी हुई पुस्तक "यंत्र–मंत्र–तंत्र द्वारा उपाय" से कई लोगों को सिद्धियां प्राप्त हुई, उन लोगों ने हमें पत्र द्वारा सूचित किया और कई साधक साधना में असफल भी हुए उनका भी पत्र हमें मिला, परन्तु मैंने उन्हें निराश नहीं होने दिया, उन्हें पुनः पुनः साधना करते रहने की सलाह दिए और उन्होंने किया, अन्ततः उन सब को भी सफलता मिली।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी त्रुटि के कारण एक बार असफलता मिलने पर प्रयोग बन्द नहीं कर देना चाहिए, अपितु हिम्मत, श्रद्धा व गुरू की आज्ञा व विश्वास के साथ उसे बार–बार दुहराना चाहिए। पूरे आत्म विश्वास एवं श्रद्धा के साथ तथा नियमों का पालन करते हुए जो साधना करता है उसे सफलता मिलने में कोई सन्देह नहीं रहता। "इल्तजा कभी नाकाम नहीं होती"। यदि मकसद में नाकामी हुई तो समझ लेना चाहिए कि आपकी कोई गलती है, क्योंकि इन्सान से भूल अक्सर हो जाया करती है।

## *यंत्र मंत्र साधना से पूर्व योग्यता आत्म मंथन*

यंत्र–मंत्र प्रयोग या साधना करने से पूर्व साधक को अपनी योग्यता पर दृष्टिपात करना अति आवश्यक है। यदि अपने अन्दर कोई कमियां अर्थात् त्रुटि दिखाई दे तो उन्हें दूर कर लेना चाहिए, क्योंकि किसी काम को शुरू करने से पहले ही जो इन्सान अपनी खामियों और कमजोरियों पर नजर डालता है और उन्हें दूर कर देता है तो उसका दिल बेखौफ हो जाता है और उसे ही अपने लक्ष्य में सफलता हासिल होती है अतः साधक के लिए यह आवश्यक है कि वह साधना आरम्भ करने से पूर्व उसूलों व नियमों का पाबन्द हो।

कई साधना में सिद्धि प्राप्ति के पश्चात् साधना के सिलसिले में साधकों के लिए अपने तर्जुबात के आधार पर कुछ नियम तथा सिद्धान्त मैंने निश्चित किए हैं ताकि साधना करने वालों को सुविधा हो और उन्हें किसी प्रकार की परेशानी न उठानी पड़े।

परन्तु प्रायः देखने में यह आता है कि साधना के शौकीन लोग आवश्यक नियमों का पालन तो करते नहीं हैं, अपनी सुविधानुसार जैसा चाहते हैं, वैसा करना आरम्भ कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते और उन का सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ चला जाता है। इस प्रकार अपनी ही गलती की वे हानि उठातें हैं। यदि सही तरीके से नियमों का पालन किया जाये तो उनकी मेहनत बर्बाद नहीं होगी और प्रथम बार ही सफलता उनकी चरण चूमेगी।

अतः साधना के सिलसिले में साधकों के लिए जो नियम अथक परिश्रम तथा अनुभवों के बाद मैंने निश्चित किए हैं उन नियमों का पालन करना निहायत जरूरी है। ऐसा न करने वालों को कभी कामयाबी नहीं मिल सकती जो निम्नलिखित नियमों का पालन नहीं करेंगे।

## अनुभव के आधार पर साधकों को मेरा संदेश

जो लोग साधना करनां चाहते हैं, यंत्र–मंत्र की शक्तियां प्राप्त करने की जिज्ञासा रखते हैं, वे अवश्य करें, परन्तु निम्न नियमों का पालन अवश्य करें। यदि इन नियमों का पालन करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। यह किताबी बातें नहीं लिख रहा हूं, बल्कि कई सिद्धियों का अनुभव लिख रहा हूं, जिन्हें स्वयं पर लागू करके कई सफलताएं सिद्धियों की प्राप्ति हुई।

1. साधक अपने धर्म के प्रति सम्पूर्ण निष्ठावान हो, वे अपने धर्म के हर असूलों को मानने वाला हो।
2. हराम वस्तुओं को करीब न आने दें।
3. व्यभिचार तथा दुष्कर्म आदि से दूर रहें।
4. हलाल तरीके से रोजी कमाने का आदी हों।
5. झूठ बोलने से हर वक्त परहेज करें।
6. मजहब के नियमों का पालन करें।
7. चुगली, इर्ष्या, क्रोध, बदले की भावना और तमाम बुरी बातों से तौबा करें।
8. वैष्णवी भोजन करें।
9. गरीब एवं मोहताजों के साथ नेक सलूक करें, तथा दान–पुण्य से हाथ न रोकें।
10. पुस्तक में वर्णित नियमों के अनुसार ही साधना करें।

## स्थान विशेष के अनुसार जप-तप व यंत्र निर्माण करने का फल

अपने घर में जप करने अथवा यन्त्रों का निर्माण करने से आदि एक गुणा फल मिलता है, तो सौ गुणा जंगल, हजार गुणा सरोवर, लाख गुणा नदीं, करोड़ गुणा पर्वत शिखर, अरबों गुणा देव मन्दिर और सिद्ध पीठ में सिद्धि करने पर साधकों को अनन्त गुणा फल की प्राप्ति होती है।

## यंत्र साधना का समय

गंडे, टोटके, मंत्र सिद्धि करने के लिए जैसे दिन नक्षत्र, घड़ी तिथि आदि की आवश्यकता पड़ती है। उसी प्रकार ताबीजों (यंत्रों) की सिद्धि में भी यह बात आवश्यक है। सामान्यतया शान्ति पुष्टिकर यंत्रों की साधना प्रातःकाल किया जाता है। अभिचार, विद्वेषण, मारण व उच्चांरन के लिए रात्रि का समय उपयुक्त होता है।

## यन्त्र लिखने हेतु शुभ नक्षत्र

यन्त्र लिखने के लिए मृगशिरा, पुनर्वशु, पुष्य, मघा, पूर्वा एवं उत्तर फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, पूर्वा भाद्रपद एवं खेती नक्षत्र शुभ माना जाता है।

ज्योतिष के निर्देशानुसार ज्ञान प्राप्ति के लिए शतभिषा, उत्तरा

फाल्गुनी, रोहिणी–लक्ष्मी प्राप्ति के लिए, यश प्राप्ति के लिए मूल, खेती व उत्तरा भाद्रपद। सुख–सम्पत्ति व शुभ फल प्राप्ति के लिए–अश्विनी, मृगशिरा, पूर्वा भाद्रपद–दुख रोगादि नाश के लिए, मघा–मारण एवं शत्रु विनाश के लिए नक्षत्र अनुकूल होते हैं।

### यंत्र लिखने की तिथि

यंत्र लिखने व सिद्ध करने हेतु प्रारम्भ कार्य निम्नलिखित तिथियों में ही आरम्भ करेंगे, तभी सफलता मिलेगी।

1. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए – सप्तमी।
2. ज्ञान एवं विद्या प्राप्ति के लिए – द्वितीया एवं पंचमी।
3. राज्य लाभ एवं शत्रु नाश के लिए – दशमी।
4. सर्व सिद्धि के लिए – द्वादसी।

नोट :– उपरोक्त तिथियों का निर्धारण शुक्ल पक्ष में ही करें।

### यंत्र लिखने हेतु "वार" निर्णय

सोमवार – शांति समृद्धि के लिए।
रविवार – लक्ष्मी प्राप्ति के लिए।
बुध व वृहस्पति वार – सर्व कामना सिद्धि के लिए।

### यंत्र लिखने हेतु "मास" निर्णय

सुख–समृद्धि एवं ग्रह निवारण हेतु – श्रावण।
देवी–देवताओं की सिद्धि के लिए – कार्तिक।
लक्ष्मी साधना के लिए – आश्विन, कार्तिक, बैसाख।
मनोकामना सिद्धि के लिए – मार्गशीर्ष (अगहन)
सर्व सिद्धि के लिए – फ़ाल्गुन एवं चैत्र मास शुभ माना गया है।

### यंत्र निर्माण हेतु वर्ष में अति सफलतादायक विशिष्ठ काल (समय)

पाठको ! वर्ष में कुछ ऐसे विशिष्ठ काल आते हैं, जिसमें यंत्र सिद्ध करने हेतु तिथि, वार, नक्षत्र, महीना आदि पर विचार नहीं किया जाता। जैसे – दिवाली और होली की रात, नवरात्रे की अष्टमी की रात, चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, चर्तुदशी, बैसाख शुक्ल एकादशी, फाल्गुन शिवरात्रि की रात, ज्येष्ठ के दोनों पक्ष की एकादशी आश्विन की नाग पंचमी, श्रावण की कृष्ण पक्ष पंचमी, भाद्रपद की दोनों पक्ष की षष्ठी एवं जन्माष्टमी आदि।

### यंत्र निर्माण की दिशा

शान्ति कर्म, ग्रह निवारक, रोग निवारक, मनोकामना सिद्धि सभी यंत्र–मंत्र साधनाएं पूर्व की दिशा में मुंह करके करनी चाहिए।

उच्चारन, स्तम्भन, मारण आदि की क्रियाएं पश्चिम की दिशा में मुंह करके करनी चाहिए।

### विविध यंत्र-मंत्र साधना में विविध मालावों एवं आसनों का प्रयोग

साधको ! अलग-अलग कार्यों में अलग-अलग आसन तथा माला की आवश्यकता होती है।

''वशीकरण'' के लिए – हीरा या स्फटिक अथवा पत्थर की माला की आवश्यकता होती है। सफेद कपड़े या सिल्क का आसन लाभकारी होता है। बाघम्बर मिल जाये तो उत्तम रहेगा। ''आकर्षण'' में भी इसी प्रकार की माला तथा आसन काम में आता है।

''बिद्वेषण'' यंत्र साधना में हड्डियों की माला काम में आती है तथा कम्बल के आसन का प्रयोग किया जाता है।

''शान्ति कर्म'' में – रूद्राक्ष की माला तथा कुशा का आसन उपयोग करें।

''मारण'' में मनुष्य की दांत की माला तथा भैंस की खाल का आसन चाहिए।

''उच्चारन'' के लिए – ऊंट की हड्डियों की माला तथा ऊंट की खाल का आसन चाहिए।

''शरीर रक्षा हेतु'' – मूंगे की माला का प्रयोग करें। जो भी साधना के दौरान मूंगे की माला धारण करता है, वह सब प्रकार की बाधावों से मुक्त होकर निर्विघ्न यंत्र-मंत्र साधना सम्पन्न करता है।

नोट :- विशेष अवस्था में सभी प्रकार की साधनावों में, सफलता के लिए ''रूद्राक्ष की माला'' तथा ''बागम्बर'' श्रेष्ठ मानी जाती है। यदि यह उपलब्ध न हो तो मृगछाला का उपयोग लाभकारी होगा।

### यन्त्र लिखने का कागज

पाठको! यंत्र निर्माण करने हेतु ''भोजपत्र'' का उपयोग सभी प्रकार के यंत्रों में कर सकते हैं। ''भोज़पत्र रूपी कागज'' वैदिक विधान में ''सर्वोत्तम कागज'' कहा गया है। कुछ यंत्रों का निर्माण आम कागज पर भी किया जाता है और कुछ यंत्र ताड़ वृक्ष के पत्ते पर भी लिखे जाते हैं।

देवी-देवतावों व नवग्रहों के यंत्र शुभ मुहूर्त में सोना, चांदी, तांबा व लोहे के पत्रों पर भी खुदवा कर सिद्ध किए जाते हैं।

### यंत्र लिखने हेतु कलम

यंत्र लिखने के लिए विशेष प्रकार की ''कलम'' की आवश्यकता होती है। जैसे – शान्ति सुख समृद्धि आदि के लिए – पीपल व अनार की कलम, ''वशीकरण'' में चमेली फूल की, ''सम्मोहन'' में सोने की, स्तम्भन में हल्दी की, तथा उच्चारन विद्वेशन और मारण में लोहे की कलम लेखन कार्य में प्रयोग करें।

### यंत्र लिखने के लिए स्याही

विविध प्रकार के यंत्र लिखने के लिए विविध प्रकार के ''स्याही'' का प्रावधान है।

जैसे – देवी देवताओं को प्रसन्न करने हेतु – सिन्दूर, अष्टगंध, रोली, लाल चन्दन, सफेद चन्दन की स्याही। आकर्षण में – कस्तूरी, सतम्भन में – हल्दी, मारण व उच्चारण में – धथूरे का रस और श्मशान यंत्र लिखने के लिए भस्म की स्याही प्रयोग में लानी चाहिए।

## यंत्र-मंत्र साधना काल में साधकों के लिए आहार व भोजन पात्र निर्णय

यंत्र–मंत्र साधना के दिनों में साधक को शुद्ध व पवित्र शाकाहारी भोजन करना चाहिए। जिस घर में मांस–मछली, अंडे, लहसून, प्याज, शराब आदि तामसिक पदार्थों का सेवन होता है, जिस घर के व्यक्ति में सात्विक प्रवृत्ति तथा सदाचार न हो, नास्तिक परिवार हो या अशांत वातावरण का परिवार हो, उसके घर भोजन करने से साधक की साधना में खलल पहुंचता है।

अपवित्र स्थान पर बनाया हुआ या रखा हुआ भोजन या व्यभिचारी अथवा दुराचारी द्वारा स्पर्श किया हुआ भोजन सात्विक एवं शुद्ध ही क्यों न हो, त्याग कर देना चाहिए।

साधक यदि केले के पत्ते पर भोजन करे तो अत्यन्त ही शुभ, अभाव में तांबे या पीतल के बर्तन में भोजन करना चाहिए।

## सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण काल में यंत्र-मंत्र साधना के फल

सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण लगने पर साधकों के लिए यंत्र–मंत्र सिद्धि करने का विधान सम्पूर्ण सिद्धि विधि से आसान है।

जब "ग्रहण" लगे तो गंगा नदीं में सीने तक पानी में खड़े होकर, ग्रहण के प्रारम्भ समय से अन्तिम समय तक अपने इष्ट देव (जिस मंत्र की सिद्धि करना चाहते हैं) का मंत्र जाप करें।

यदि "यंत्र" सिद्ध कर रहे हैं तो ग्रहण के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक – यंत्र भोजपत्र के ऊपर बार–बार लिखें। हर यंत्र में अलग–अलग भोजपत्र (टुकड़े) का प्रयोग करें। यंत्र निर्माण पुस्तक में निर्धारित कलम व स्याही के द्वारा ही करें। यंत्र निर्माण करते समय यंत्र के इष्टदेव का नाम जप मन ही मन करते रहें। कई यंत्र निर्माण में मंत्र की आवश्यकता होती है, जिसमें विधि हो उस यंत्र निर्माण के समय "मंत्रोच्चारण" करें।

उपरोक्त यह कार्य ग्रहण आरम्भ से अन्त तक लगातार करते रहने से यंत्र मंत्र सिद्ध हो जाता है। आजमा कर देखें, हमारा अपना अनुभव है।

## ताबीज (यंत्र) पर "धातुवों" के प्रभाव

आजकल तांबे पर बने बनाए "यंत्र" बहुत अधिक मात्रा में मिलने लगे हैं, जो इस बात का प्रतीक है कि "वैज्ञानिक युग में यंत्रों का प्रचार–प्रसार बढ़ा है।"

यंत्र का उपयोग दो प्रकार से किया जाता है। 1. पूज़ा में रखकर 2. गले में या बाजू में धारण कर। धातु विशेष के प्रभाव से भी यंत्रों की शक्ति बढ़ जाती है। इसलिए गले में, बाजू में धारण करने वाले यन्त्रों को चांदी, सोना या तांबे में ही धारण करना चाहिए। सोना, चांदी, तांबे जैसे धातुओं से बना हुआ "ताबीज" में रखा हुआ यंत्र अलौकिक शक्तियां प्रदान करता है।

धातु की अपेक्षा "भोजपत्र" पर निर्माण किया हुआ यन्त्र अधिक प्रभावशाली होता है। इसका मूल कारण यह है कि भोजपत्र में "स्पन्दन" ग्रहण करने की शक्ति अधिक होती है।

## रामचरित मानस "रामयण" के अनुसार यंत्र-मंत्र के सृष्टिकर्ता स्वयं "शिव जी"

यंत्रों का मूल वेद है और यंत्रों का मूल मंत्र। जो शब्दों, अंकों और रेखावों आदि के रूप में – "ईश्वरीय अवतार" के रूप में हम मानव को प्राप्त है।

गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरित मानस में कहा हैं कि "कलियुग में जीवों के कष्टों को देखकर, उसे दूर करने के लिए, जगहित की करूण कामना से प्रेरित होकर "श्री उमा महेश्वर" ने मंत्रों और यंत्रो की सृष्टि की।"

यद्यपि इन यंत्रों और मंत्रों के अक्षर, अंक, रेखाएं आदि बेमेल (अनमेल) होते हैं तथा इनका कोई अर्थ नहीं होता, तथापि "महेश" के प्रताप में ये यंत्र और मंत्र तत्काल ही अपना चमत्कारिक फल प्रकट कर देते हैं।

## यंत्र मंत्र ताबीज, टोने टोटके आदि की शक्तियों का "चारों वेद" स्वतः प्रमाण

यंत्र मंत्र तंत्र, टोने–टोटके आदि की शक्तियों का "चारों वेद" स्वतः प्रमाण हैं। इनको किसी से प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। वेदों के अनुसार यंत्र–मंत्र की प्रामणिकता भगवान शंकर के मुख से निकले होने के कारण सिद्ध है।

यंत्र–मंत्र "अथर्ववेद" का रहस्य है। आज इसका महत्व है कि इसका प्रयोग और परीक्षण सही विधि से अर्थात् इस पुस्तक में दर्शाए गये नियमों के अनुसार करने की जरूरत है।

यंत्र वास्तव में मंत्र की ही विकसित स्थिति है और यह इस युग के लिए अत्यन्त अनुकूल और अनुरूप भी है।

## "यंत्र विद्या" मंत्र साधना का ही अंग

यंत्र विद्या भी मंत्र साधना का ही एक अंग है। इसे मंत्र विद्या का "उपजीव्य" कहते हैं। यंत्र की रचना अंकों रेखावों, बीजाक्षरों तथा

बिन्दुओं के द्वारा किया जाता है। ''मंत्र अराधना का मार्ग है तो यंत्र उसका प्रभावशाली माध्यम है।''

यंत्र का शाब्दिक अर्थ है संयमित करना – केन्द्रित करना। यंत्र के धारण करने अथवा यंत्र पूजन का दर्शन करने से यंत्र के अन्दर स्थापित इष्ट देव या यंत्र में स्थित मंत्र के इष्ट देव से मन्त्र साधक का समन्वय स्थापित हो जाता है।

मंत्र और यंत्र में एक बहुत बड़ा भेद है। मंत्र साधना मौलिक अथवा मानसिक होती है। मंत्र सदा ही निरापद व कल्याणकारी होते हैं।

जब कि ''यंत्र'' रचना में रंच मात्र भी त्रुटि रह जाने पर निष्क्रिय तो बनता ही है, साथ ही विपरीत फल देकर साधक को हानि भी पहुंचा देता है।

''यंत्र'' साकार ब्रह्म की तरह साध्य व पूज्य है तो मंत्र निराकार ब्रह्म की तरह पूज्य व साध्य है।

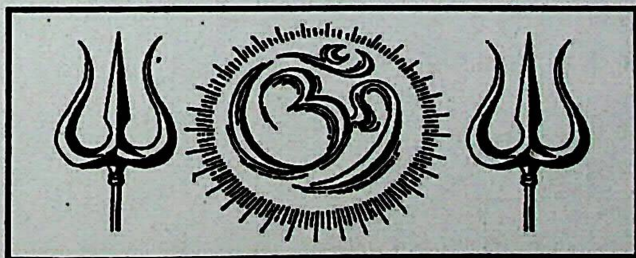
### *आईये अब हम यंत्र निर्माण करें*

आपके हाथ में बंधा हुआ या गले में धारण किया हुआ यंत्र ''एन्टीना'' का काम करते हैं। इनसे निकलने वाली दिव्य शक्तियों का सम्बन्ध उस ''परब्रह्म'' से होते हैं, जो सृष्टि का निर्माण करते हैं। दिव्य शक्तियां ''विकीरण'' के सिद्धान्त के अनुसार महाशक्तियां संचालित होकर हमारे कार्यों को पूरा कराने में अपना सम्पूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। यही सिद्धान्त है– यंत्र शक्ति का।

आइये, हम उन महान शक्तियों का निर्माण करते हैं जो सर्वव्यापक हैं तथा यंत्रों में रेखावों, कोणों, त्रिकोणों के रूप में अंकित हैं।

## ''महा-शक्ति'' यंत्र खण्ड

### *सर्व कामना पूर्ति हेतु ''ॐ यंत्र''*



निराकार रूप भगवान शिव स्वयं ही ''ॐ'' हैं। शास्त्रों में ''ॐ यंत्र'' की उपासना के अनेकों विधान दिए गये हैं, परन्तु अनुभवगम्य साधना का महत्व ही अलग है। भगवान शिव ही तंत्र–मंत्र–यंत्र के

रचयिता हैं, जिनकी विशेष अनुकम्पा से ही हमारे देश की संस्कृति को एक उच्च सम्मान व गौरव प्राप्त हुआ।

भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं, जहां शिव ॐ स्वरूप में भक्तों के समस्त पाप–ताप का निवारण करते हैं वहीं मृत्युञ्जय स्वरूप में रोग निवारण, अकाल मृत्यु व मृत्यु भय से मुक्ति दिलाकर साधक को समस्त कामनावों के साथ दीर्घायु प्रदान करते हैं।

"ॐ स्वरूप" उपासना करने से साधक की अज्ञानता दूर कर ज्ञान की पूर्णता प्रदान करते हैं साथ ही साथ साधक में उमंग एवं आनंद का भाव पैदा करते हैं और समस्त दुःखों से छुटकारा दिलाकर मनोकामना पूर्ति करते हैं।

शास्त्रों के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि भगवान शिव ने भक्त की भक्ति भावना से अत्यन्त प्रसन्न होकर "कुबेर" को देवतावों का कोषाध्यक्ष बना दिया, रावण की नगरी सोने की बना दी, अश्विनी कुमार को सम्पूर्ण आयु वैदिक विद्या सौंप दी।

## *यंत्र साधना व निर्माण विधि*

"ॐ यंत्र" का निर्माण अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करें। अथवा तांबे पत्र पर निर्माण किया हुआ यंत्र पूजन में प्रयोग करें।

"शिवरात्री" की रात्रि में या सोमवार की रात्रि में स्नानादि से पवित्र होकर पूजन स्थल पर बाघम्बर अथवा कम्बल के आसन पर बैठ जाये। आम लकड़ी के सिंहासन पर भगवान शिव की प्रतिमा या तस्वीर लाल कपड़े का आसन बिछाकर स्थापित करें। तत्पश्चात् गुरु से प्राप्त किया हुआ "सिद्ध ॐ यंत्र" तांबे की प्लेट में तस्वीर के समक्ष रखें। धूप–दीप जगावें। भगवान शिव का गंगाजल, अक्षत (चावल) पुष्प, चन्दन व नैवेद्य तथा वेलपत्र (विल्व पत्र) से पंचोपचार पूजन करें।

तत्पश्चात् अनार की कलम से रक्त चन्दन की स्याही द्वारा भोजपत्र पर "ॐ यंत्र" निर्माण करें। यंत्र निर्माण कर, उस यंत्र को गुरु द्वारा प्राप्त "सिद्ध ॐ यंत्र" वाले प्लेट में रख दें। तत्पश्चात् रूद्राक्ष की माला से 11 माला निम्न मंत्र का जप करें।

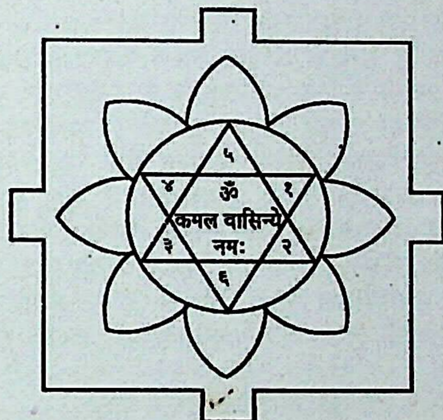
"ॐ नमः शिवाय"

ग्यारह दिन तक नित्य ग्यारह माला उपरोक्त दिव्य मंत्र का जप करें। नित्य मंत्र जप के पश्चात् भगवान शिव की आरती सम्पन्न करें।

ग्यारहवें दिन एक माला मंत्र जप करते हुए हवन करें, फिर आरती करें। तत्पश्चात् अपना निर्माण किया यंत्र पूजन स्थल पर ही रहने दें। गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र व बाकी सामग्री बहते जल में प्रवाहित कर दें।

इसके बाद सोमवार के दिन स्वयं "ॐ यंत्र" निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर और एक माला उपरोक्त दिव्य मंत्र जप पूर्ण कर, जिसे भी यंत्र देंगे, सफलताएं उसकी दासी बन जायेगी। आजमा कर देखें। यह मेरा स्वयं का अनुभव है।

## धन प्रदायक "श्री कमला यंत्र"




सिद्ध लक्ष्मी भगवती "श्री कमला यंत्र" महालक्ष्मी का ही स्वरूप हैं। सर्व कल्याण मयी भगवती कमलात्मिका दस महा विधावों में से एक हैं। जिनकी यंत्र–मंत्र शास्त्रों व पुराणों में विशेष महिमा वर्णित है। साधक का सौभाग्य ही जाग्रत होता है जब वह गुरू या सिद्ध तांत्रिकों द्वारा प्राप्त कमला यंत्र का पूजन उनके बताए अनुसार करता है। इस यंत्र की साधना कर जहां साधन सांसारिक सिद्धि प्राप्त कर लेता है, वहीं परालौकिकता का भी अभ्युदय होता है। यह यंत्र साधनाभोग और मोक्ष दोनों एक साथ देने में समर्थ है।

भगवती कमला यंत्र की जो साधना करता है, उसके जीवन से कर्ज, रोग, ब्याधि, दरिद्रता, पाप, भय, शोक, मानसिक संताप व अकाल मृत्यु कोसों मील दूर चले जाते हैं। इसके बदले उसे बुद्धि, बल, तेजस्विता, कान्ति, आयुवय, आरोग्य, दृढ़ता, धन–धान्य, पुत्र–पौत्र सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

इस संसार सागर में बालक से लेकर वृद्ध तक कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है, जिसके मन में लक्ष्मी को प्राप्त करने की कामना न हो।

यह यंत्र साधना सर्व शक्ति प्रदायक है, क्योंकि कीर्ति, मति, धुति, पुष्टि, बल, मेघा, श्रद्धा, आयोग्य, विजय आदि दैवी शक्तियाँ जो भिन्न–भिन्न देवों के अंश से उत्पन्न हुई हैं, वे दासी होकर तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाली प्रकाश रूप लक्ष्मी की साधना करना तो जीवन का श्रेष्ठतम सौभाग्य है।

### यंत्र निर्माण विधि

श्री कमला यंत्र का निर्माण दीपावली की रात्री में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। विपत्ति काल में मानव श्रेष्ठ नक्षत्र, मुर्हत के किसी भी सोमवार को इस महायंत्र का निर्माण व पूजन कर सकते हैं। यंत्र निर्माण अनार की कलम केशर, रक्तचन्दन अथवा रोली चन्दन की स्याही से भोत्रपत्र पर करें।

### यंत्र साधना विधि

"भगव्रती कमला यंत्र" की साधना को सिद्ध करने के लिए रात्रि 10 बजे स्नानादि से निवृत्त होकर लाल वस्त्र धारण करें।

पवित्र पूजा स्थल पर आम लकड़ी के सिंहासन पर महालक्ष्मी की तस्वीर अथवा प्रतिमा लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। धूप–दीप जगावें। गुरू से प्राप्त किया "सिद्ध कमला यंत्र" तांबे के प्लेट में तस्वीर के समक्ष रखें। तस्वीर के उपर पुष्पमाला व गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र के प्लेट में पुष्प चढ़ावें। तत्पश्चात् कम्बल के आसन पर बैठकर गंगाजल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, नैवेद्य आदि से गुरू यंत्र का पूजन करें। फिर स्वयं भोजपत्र के ऊपर उपरोक्त यंत्र निर्माण करें। स्वयं निर्मित यंत्र गुरू यंत्र वाले प्लेट में रखें, तत्पश्चात् रूद्राक्ष की माला से 5 माला निम्न मंत्र का जप करें।

**मंत्र :– "ॐ ऐं श्रीं ह्रीं कमल वासिन्यै नमः"।**

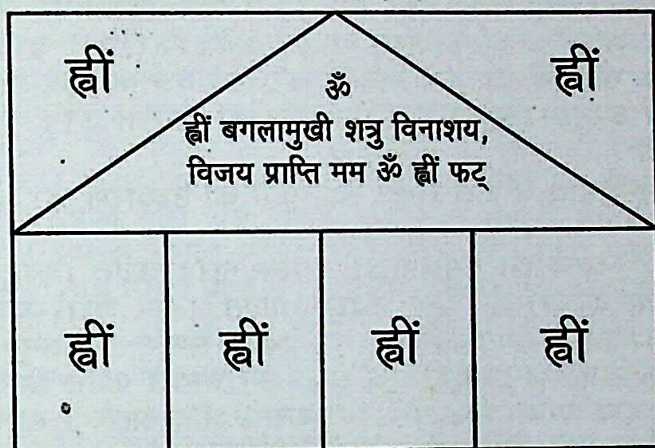
उपरोक्त मंत्र का जप पांच माला 21 दिन रात्री के समय दस बजे ही किया करें। 21 वें दिन जप समाप्त होने के पश्चात् एक माला मंत्र जप करते हुए हवन करें, माता लक्ष्मी की आरती गावें।? फिर गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध कमला यंत्र व पूजन सामग्री आदि नदी में विसर्जित कर दें। स्वयं निर्माण किया हुआ यंत्र पूजन स्थल पर रखकर ही रोज धूप–दीप दिखाया करें तो आपके पास धन की देवी लक्ष्मी दासी होकर रह जायेंगी।

इसके बाद यदि अपने हाथों से किसी भी सोमवार अथवा दिवाली की रात्री में यंत्र निर्माण व एक माला जप सम्पन्न करके किसी को भी दे देंगे तो वह व्यक्ति भी धनवान हो जायगा।

## शत्रु बाधा निवारण हेतु व सर्वत्र विजय प्राप्ति हेतु सिद्ध "बगला मुखी यंत्र"

भारतीय तंत्र व यंत्र विज्ञान अपने में अद्भूत एवं विशाल महाशक्तियों से सम्पन्न हैं, इसमें प्रकृति के वे सभी गूढ़ तत्व निहित हैं जिनमें मानव जीवन की पूर्णता एवं प्रकृतिं का रहस्य छिपा हुआ है। महाशक्तियों में कई महाविद्याएँ आती हैं किन्तु उनमें जो विश्व की श्रेष्ठ महाविद्या यंत्र साधना है वह भगवती "बगलामुखी यंत्र" की साधना है।

देखें आगे यंत्र स्वरूप :-




पाठको ! प्राचीन काल से ही जो भी महा पुरूष हुए हैं या राजा– महराजावों ने निकंटक राज्य किया है, उनके जीवन में विजय एवं सफलता का रहस्य ही भगवती बगलामुखी यंत्र उपासना रही है।

इतिहास में उल्लेख मिलता है कि–"राज राजेन्द्र चोल" नेअपने शत्रुवों को परास्त करने के लिए बगलामुखी यंत्र साधना सम्पन्न कराई और सफलता प्राप्त की। हिन्दू शासकों में तो चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, समुद्र गुप्त ने भी बगलामुखी यंत्र साधना सम्पन्न कर शत्रुवों पर विजय एवं सफलता प्राप्त की। इस महत्त्वपूर्ण साधना से जीवन में हर परिस्थिति पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। शत्रु बाधा समाप्त करने के लिए तो यह यंत्र साधना प्रचंड तूफान की तरह है।

यदि कोई मात्र "बगलामुखी यंत्र ही धारण होता है, जो चौबीसो घंटे उसकी सुरक्षा करता है। देवी बगलामुखी का नाम–"वल्गा" भी है और सिद्ध साधक या यंत्र धारण कर्त्ता के चारों ओर एक "वल्गा चक्र" निरन्तर घूमता व सुरक्षा करता रहता है, जिसे कोई अन्य नहीं देख सकता। जिन्हें बड़े–बड़े प्रतिष्ठान संभालने हों, अथवा महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन होना हो, जिन्हें नेतृत्व का भार प्राप्त हो, जिन्हें सर्वत्र सम्पन्न करना नितांत आवश्यक है।

### यंत्र निर्माण विधि

इस महायंत्र का निर्माण भी अनार की कलम रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करना चाहिए।

### यंत्र साधना विधि

यह यंत्र साधना शुभ नक्षत्र के मंगलवार की रात्रि में आरम्भ करें। लगभग 10 बजे रात्रि में स्नानादि से पवित्र होकर, पीपल लकड़ी के सिंहासन पर पीला कपड़े का आसन बिछावें, तत्पश्चात् शुरू

से प्राप्त किया–सिद्ध बगलामुखी यंत्र पीतल के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित करें। स्वयं पीला वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जाय। धूप–दीप जगावें। यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ावें। फिर पंचो–पचार पूजन कर स्वयं भोजपत्र पर यंत्र निर्माण कर उस यंत्र को गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र वाले उपनुसार पूजन क्रम पुनः यंत्र का आरम्भ करें।

***विनियोग***

दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग का उच्चारण कर जल भूमि पर छोड़े :–

"ॐ अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य नारद ऋषिः त्रिवटुप छन्दः बगलामुखी देवया। ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः। मम शरीरे यजमानस्य शरीरे वा नाना ग्रहोपग्रह प्रयोग, गृह प्रवेश, सम्पूर्ण रोग समूह वातिक पैत्रिक श्लैस्मिक द्धन्दजादि नाना दुष्ट रोग जन्मज पातक आदि शान्त यर्थे सर्व दुष्ट बाधा कष्ट ग्रह उच्चाटनाथे शीघ्र आरोग्यं लाभार्थे मम सर्व अभीष्ट काय सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।"

इसके पश्चात् दोनों हाथों में पीले पुष्प लेकर निम्न प्रकार से ध्यान करें–

"ॐ नमो भगवति, ॐ नमो वीर प्रताप विजय भगवति बगलामुखी मम सर्वनिन्द कानां सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वायां मुद्रय मुद्रय बुद्धि विनाशाय–विनाशाय, अपरबुद्धिं कुरू–कुरू आत्मविरोधिनां शत्रुनां शिरो, ललाटो, मुंख, नेत्र, कर्ण, नशिकोरू, पाद, अणु–अणु, दन्तोवट, जिह्वां, तालु, गुह्वं, गुदा, कटि, जानु सर्वागेषु, केशादि पादान्त पाददि–केशपर्यन्तं स्तम्भय–स्तम्भय, रवें रवीं मारय–मारय, परमंत्र, परयंत्र परतंत्राणि छेदय छेदय, आत्म मंत्र तंत्राणि रक्ष–रक्ष, गृंह निवारय निवारय, व्याधिं विनाशाय–विनाशाय, सर्वमंत्र स्वरूपिणी दुष्ट किम्पुरूष ग्रह भूत–प्रेत पिशाचानां शाकिनी डाकिनी ग्रहाणां पूर्वदिशां बन्धय बन्धय, वार्तालि ! मां रक्ष–रक्ष, दक्षिणदिशं बन्धय, वार्तलि ! मां वार्तालि मां रक्ष–रक्ष, पश्चिमदिशं बन्धय–बन्धय उग्रकालि मां रक्ष–रक्ष, पाताल दिशं बन्धय–ब–न्धय, बगला परमेश्वरि मां रक्ष–रक्ष, सकल रोगान विनाशाय–विनाशाय, शत्रु पलायनम् पंच–योजमध्ये राजजनस्यपचं कुरू–कुरू, शत्रेन–दह–दह–पच–पचं, स्तम्भ्य, स्तम्भय, मोहय–मोहय, आकर्षय–आकर्षय, मम शत्रून उच्चाटय–उच्चाटय, ह्रीं फट स्वाहा।"

नोट–अब पीले पुष्प यंत्र पर अर्पित करें और रूद्राक्ष की माला लेकर निम्न मंत्र की 21 माला जप करे–

मंत्र–"ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं एवं स्तम्भ्य जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय–ह्रीं ॐ फट।।

नोटः– यह साधना एक रात्रि में सफल नहीं होती। प्रथम रात्रि पूजन ध्यान करें, दूसरी रात्रि में जप करें, तीसरी हवन और पूर्णाहुति करें। हवन सामग्री में घी, शहद, चूधधान, पीला सरसों के दाने मिलाकर

पीपल की लकड़ी पर आग जलाकर हवन करें। फिर आरती करें। यंत्र साधना समाप्त हुई।

यंत्र साधना के बाद गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र व वहां पर रखी हुई पूजन सामग्री आदि नदी में विसर्जित कर दें। यह साधना करने के बाद स्वयं लिखा यंत्र चांदी अथवा सोने के ताबीज में पीले धागे में गले में धारण करें, फिर किसी भी मंगलवार को यंत्र लिखकर साधारण पूजन (पंचोपचार पूजन) कर, ताबीज तैयार कर जिसे भी देंगे, उनके शत्रु नष्ट हो जायेंगे और यंत्र धारण कर्ता को सम्पूर्ण सफलता प्राप्त हो जायेगी। ''माता बगला मुखी सिद्ध यंत्र'' मेरे द्वारा प्राप्त कर कई साधकों ने यंत्र सिद्धि प्राप्त की, अथवा यंत्र धारण कर पूर्ण लाभान्वित हो रहे हैं। आप भी आजमा कर देखें, जीवन सफल हो जायगा।

## अटूट सम्पदा, धन-धान्य वृद्धि हेतु एवं शत्रु हन्ता महाकाली यंत्र

''आदिशक्ति'' का साकार रूप होने के कारण आद्याकाली यंत्र भी कहा गया हैं। आदिशक्ति होने के फलस्वरूप अपने साधक को वे महाकाली यंत्र धारण कर्ता को शक्ति प्रदान करती ही रहती हैं। महाकाली यंत्र स्वरूप की सृष्टि स्वयं शिव ने की थी और यह यंत्र साधना अत्यन्त तेजस्वी होने के साथ-साथ अत्यधिक सरल व सहज है।

लोगों की धारणा है कि महाकाली की सिद्धि या यंत्र सिद्धि में त्रुटि होने से साधक को प्राण हानि होती है, जो बिल्कुल निराधार है, क्योंकि महाकाली दया की सागर हैं और कभी भी अपने भक्त का अनिष्ट नही करती। नीचे देखें महाकाली यंत्र स्वरूप :-




### यंत्र निर्माण विधि

इस अद्भूत यंत्र का निर्माण अनार की कलम, रोली चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर किसी भी शनिवार के दिन करें। यदि इस यंत्र का निर्माण व साधना दिवाली की रात अथवा होली की रात में की जाय तो अत्यन्त सफलदायक सिद्ध होता है।

### साधना विधि

साधक इस यंत्र साधना को बारह बजे रात्रि में आरम्भ करे।

साधक स्नानादि से पवित्र होकर आम लकड़ी की सिंहासन पर काले वस्त्र का आसन बिछावे, तत्पश्चात् तांबे के प्लेट में गुरू से प्राप्त "सिद्ध महाकाली यंत्र" रखकर सिंहासन पर विराजित करे, सिंहासन पर माता काली की तस्वीर की भी स्थापना करें।

साधक काले वस्त्र धारण करके काले आसन पर बैठे। धूप-दीप जलावे, तस्वीर के ऊपर फूल माला व यंत्र पर पुष्प अर्पित करे। तत्पश्चात् गंगाजल, चावल, चन्दन, पुष्प और नैवेद्य से पंचोपचार पूजन करें।

इसके बाद स्वयं भोजपत्र पर यंत्र निर्माण कर, गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र वाले प्लेट में रख दें और निम्न मंत्र द्वारा भगवति महाकाली का ध्यान करें :-

"कराल वदनां घोरां मुक्तकेशीं चतु र्भुजा।
नमामि रक्त काली तां मुण्डमाला विभूषिताम्।।
घोर रावां महारौद्रीं श्मशानालय वशिनीम।
बालार्क मण्डलाकांर लोचनत्रितयान्वितान।।

नोट :- ध्यान के पश्चात् कुंकुम तथा अंक्षत (चावल) यंत्र पर निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए चढ़ाएं-

आगंच्छ वरदे देवि! दैत्यदर्पनिषदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये।।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र से ग्यारह (11) माला (रूद्राक्ष की माला से) जप करें-

"नमः आं-आं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा कालिके कालिके ह्रूं।।"

यह चौदह दिन की साधना है। नित्य यह यंत्र साधना बारह बजे रात्रि में ही करें और रोज माला जप पूर्ण होने के पश्चात् माता को आरती दिखावें। ग्यारहीं रात्रि में जप पूर्ण होने के पश्चात् आम की लकड़ी पर आग जलाकर घी, तिल, चव, चावल, गुड़, रवीर व शहद से हवन करें। हवन एक माला करें। हवन के बाद आरती करें। तत्पश्चात् पूजन सामग्री व गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध महाकाली यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें। स्वयं लिखा हुआ यंत्र अष्टधातु, स्वर्ण या चांदी के ताबीज में भरकर काले डोरे के साथ गले में धारण कर लें। बस समझें आपको यंत्र सिद्धि प्राप्त हो गई, इसमें कोई संसय न करें।

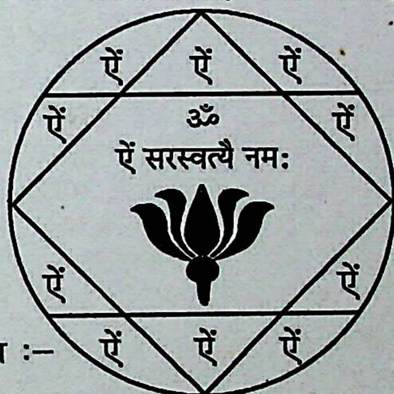
तत्पश्चात् किसी भी शनिवार की रात्रि में यंत्र निर्माण कर, पूजन कर, एक माला मंत्र जप से सिद्ध कर, जिसे भी प्रदान करेंगे उसके गृह की समस्त बाधाएँ, जादू-टोने का प्रभाव व शत्रुवों का विनाश तथा उसे समस्त सफलताएं व प्रगति में चार चाँद लग जायेगा। पाठको ! यह पुस्तक केवल पढ़ने हेतु नहीं, इसमें बताए अचूंक यंत्र सिद्धि प्राप्त कर लाभ उठावें, ताकि आपका जीवन सफल हो जाये, यही मेरी कामना है। हमारे निर्देशानुसार अनेकों साधक यह यंत्र सिद्धि प्राप्त कर लाभन्वित हो रहे हैं।

# अपार विद्या बुद्धि प्राप्ति हेतु, कला, संगीत, काव्य, अदाकारी व लेखनी जगत में संसार में प्रसिद्धि हेतु- "अष्ट सरस्वती यंत्र"

पाठको ! जहां जीवन में "विद्या व ज्ञान" का प्रश्न आता है, वहां सदा सर्वदा से भगवति महा सरस्वती की उपासना या उनका स्वरूप यंत्र की उपासना–साधना करने का विधान रहा है। मात्र ज्ञान व विद्या प्रदात्री देवी के रूप में ही नहीं वाक पटुता, वाणी, कौशल, सौभाग्य एवं आयुवय की अधिवढात्री देवी के रूप में महासरस्वती की उपासना या यंत्रोपासना का विधान रहा है।

महासरस्वती यंत्र की साधना करने से या महासरस्वती यंत्र गले में धारण करने से, यंत्र धारण कर्ता किसी प्रकार से न्यून नहीं रह सकता है। क्योंकि जिसके ऊपर सरस्वती की दया हो, मेघा अर्थात् प्रत्युत्पन्नमति हो, वरा अर्थात वरदायक प्रभाव हो, शिष्टता हो, गौरी अर्थात् शक्ति तत्व हो, तुष्टी अर्थात् परिपूर्णता का वातावरण हो, प्रभा अर्थात् शुभ्रता का एक आभामंडल हो तथा मति अर्थात् उचित–अनुचित का भेद करने की सामर्थ्य हो, उसका जीवन किस प्रकार से न्यून रह सकता है।

सामने देखें महासरस्वती यंत्र स्वरूप :–




## यंत्र निर्माण विधि

इस दिव्य यंत्र का निर्माण कुशा की कलम अष्ठगंध की स्याही द्वारा भोजपत्र पर करें और चांदी की ताबीज में किसी भी माह की पंचमी तिथि को सफेद रेशमी डोरे में या चांदी की चैनीं में, गले में धारण करें।

## यंत्र साधना विधि

महा सरस्वती यंत्र की साधना कोई भी छात्र–छात्राएँ, कोई भी स्त्री या पुरूष समपन्न कर सकता है। गृहस्थ सुख के आकांक्षी साधक साधिकावों के लिए यह एक अत्यन्त सरल, महा–उपयोगी साधना विधि है। इसी साधना के द्वारा आज मेरा नाम माता वीणा वादिनी, हंसवाहिनी की असीम अनुकम्पा से एशिया औ यूरोप में रोशन हो रहा है। इनकी अपार कृपा से ही काव्य, लेखन, कला, ज्योतिष, यंत्र–मंत्र–तंत्र आदि अनेकानेक सफलताएं मैने हासिल की हैं। यह साधना मेरा परम पवित्र अनुभव है आप भी करके देखें।

किसी भी माह की पंचमी तिथि शुभ नक्षत्र से योग खाता हो उस दिन, अथवा बंसत पंचमी के दिन यह साधना आरम्भ करें।

प्रातः काल पवित्र होकर, आम के सिंहासन पर पीला आसन बिछावें और उस पर माता सरस्वती की तस्वीर की स्थापना करें। तत्पश्चात गुरू द्वारा प्राप्त–"सिद्ध सरस्वती यंत्र" को पीतल के प्लेट में तस्वीर के समक्ष रखें। स्वयं पीला वस्त्र ही धारण करें। यंत्र का पूजन श्वेत चन्दन, अक्षत (चावल) श्वेत पुष्प, सुगन्धित अगरबत्ती या धूप तथा देशी घी के दीपक से करें। दीपक का सम्पूर्ण पूजन काल में प्रज्जवलित रहना अति आवश्यक हैं।

इसके पश्चात् स्वयं अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर यंत्र निर्माण कर गुरू द्वारा प्रात यंत्र के प्लेट में रख दें। अब स्फटिक की माला से पांच माला जप सम्पन्न करें।

### *सरस्वती मंत्र*

"ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः"

जप समाप्त होने के बाद माता सरस्वती को आरती दिखावें। यह क्रम पांच दिन लगातार करें। पांचवें दिन जप समाप्त होने के बाद एक माला हवन करें। फिर आरती करें। इसके बाद गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र व पूजन सामग्री नदी में विसर्जित कर दें। स्वयं जो यंत्र लिखे थे उस यंत्र को चांदी की ताबीज में सफेद डोरे में गले में धारण करें। यदि स्वयं सिद्धि करने का वक्र आपके पास नहीं हो तों सिद्ध सरस्वती यंत्र, अथवा किसी भी प्रकार का यंत्र आप मेरे कार्यालय से पत्राचार करके प्राप्त करे साभान्तिव हो सकते हैं।

## इंटरव्यू, परीक्षा में सफलता नौकरी प्राप्ति, व व्यापार में सफलता व पूर्ण प्रगति हेतु "श्री भुवनेश्वरी यंत्र"

प्रभु के आशीर्वाद से मुझे स्मरण आ रहा है, कि बाल्यावस्था में शिक्षा प्राप्त करने के दौरान मुझे एक अद्धितीय महा तेजस्वी साधना पद्धति (हस्त लिखित) मेरे दादा जी की लाइब्रेरी से प्राप्त हुई थी जो भुवनेश्वरी से सम्बन्धित है। उनके अनुसार समस्त देवियों की शक्ति को "भुवनेश्वरी यंत्र" के रूप में सिद्ध कर लेने से साधक सर्वत्र कार्य में अजेय हो जाता है और फिर उसके सामने सभी सफ़लताएं चरण चूमती हैं।

1. इस यंत्र की साधना से साधक का व्यक्तिव अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है। इसके ईर्द–गिर्द एक तेज युक्त आभामण्डल निर्मित हो जाता है, जिससे उसके आस–पास के लोग स्वतः उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसकी हर आज्ञा का ना–नुच किए बिना पालन करते हैं।

2. यह यंत्र साधना सिद्ध होते ही या यंत्र धारण करते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती है।

3. व्यक्ति के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है।

4. नौकरी, इन्टरव्यू, परीक्षा में निश्चित सफलता मिलती है।

5. उसकी व्यापार तरक्की करता है और अगर वह नौकरी पेशा हो, तो उसकी पदोन्नति शीघ्र होती है।

6. इस यंत्र साधना के प्रभाव से घर में अगर तांत्रिक प्रयोग हो, तो वह नष्ट हो जाता है।

7. कुण्डली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं, अगर दुर्घटना एवं अकाल मृत्यु का योग हो तो वह भी अल्प हो जाता है, एक प्रकार से नष्ट ही हो जाता है।

8. साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसमें विजय ही प्राप्त करता है।

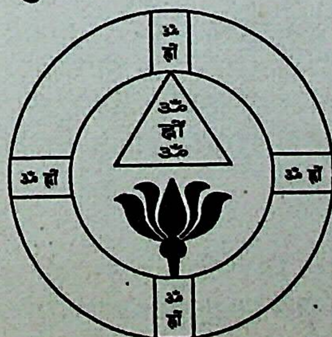
9. ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय होता है। उच्चकोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं। वह सभी का प्रिय होता है, जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता।

10. इसके साथ–साथ उसका पारीवारिक जीवन अत्यन्त सुखी होता है, यदि कोई क्लेश व्याप्त हो, तो भी वह समाप्त हो जाता है।

11. उसकी समस्त इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं और वह स्वयं भी आश्चर्य चकित रह जाता है, कि किस प्रकार से उसकी सारी अभिलाषाएँ स्वतः ही पूर्ण हो रही हैं।

ऊपर बताई गई स्थितियाँ तो मात्र सूर्य को रोशनी दिखाने के समान है। वास्तव में तो वह अपने आप में ही अद्धितीय तेजस्वी युग पुरूष बन जाता है साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान–विज्ञान में पांरगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने में समक्ष हो पाता है। उसे दुनियाँ दिव्य पुरूष की संज्ञा से विभूषित कर आदर भाव से देखती है। सिद्ध भुवनेश्वरी यंत्र अथवा कोई भी सिद्ध यंत्र पंडित वाई० एन० झा के कार्यालय से पत्राचार करके प्राप्त कर सकते हैं।

नीचे देखें माता भुवनेश्वरी यंत्र स्वरूप :–



### यंत्र निर्माण

"अनार की कलम, रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करें।

### साधना विधि

"भुवनेश्वरी यंत्र साधना" विधान वास्तव में "शक्ति यंत्र" साधना का ही स्वरूप है और एक तरह से मात्र इस साधना का ही स्वरूप है और एक तरह से मात्र इस साधना को करने से "आद्य शक्ति" के समस्त स्वरूपों की साधना स्वतः ही हो जाती है। यह 9 दिन की साधना है। प्रथम नवरात्रि से नवम नवरात्रि तक में यह साधना सम्पन्न किया जा सकता है।

निर्धारित दिवस की रात्रि में दस बजे के उपारन्त साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत स्वच्छ धोती धारण कर श्वेत आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। आम के सिंहासन पर श्वेत वस्त्र बिछावें, उस पर गुरू से प्राप्त–सिद्ध "भुवनेश्वरी यंत्र"तांबे के प्लेट में रखकर सिंहासन पर स्थापित करें। धूप–दीप जगावें। यंत्र का पंचोपचार पूजन कुंकुम, अक्षत, धूप–दीप, पुष्प, नवैद्य आदि से करें।

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न प्रकार से विनियोग करें।

### विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी ह्रदय स्त्रोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः।। गायत्री छन्दः भुवनेश्वरी देवता, ह्रीं बीजं, ई शक्तिः।। रं कीलकं सकल मनोवांछित सिद्धर्यथ पाठे विनियोगः।।

जल भूमि पर छोड़ दें तथा शरीर के विभिन्न अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए निम्न न्यास सम्पन्न करें।

### ऋष्यादि न्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि।।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे।।
श्री भुवनेश्वरी देव्ये नमः हृदि।।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।।
ई शक्तये नमः नामौ।।
रं कीलकाय नमः पादयो।।

सकल मनोवांछित सिद्धयर्थ पाठे विनियोगाय नमः सर्वागे।।

फिर मूंगे का दाना अगर मन में कोई इच्छा विशेष हो, तो मन ही मन स्मरण कर, निम्न मंत्रों से यंत्र पर अर्पित करें।

### भुवनेश्वरी यंत्र का ध्यान

ध्यान मंत्र :–

उधदूदिधुति मिन्दु किरीटान्तुङ्ग कुच्चां यन्त्र युक्ताम्।
स्मैरमुखीं व्यरदाङ् कुश पाशां भीति कराम्प्रभुगे भुवनेश्वरीम।।

फिर यंत्र पर सिन्दूर से तिलक करें तथा मूंगे की माला या रूद्रास की माला से 9 दिन नौ रात्री में 101 माला जप करें।

### यंत्र सिद्धि जप मंत्र

"ॐ ह्रीं ॐ"

नवमी की रात्री में पांच माला आम की लकड़ी पर आग जलाकर हवन करें। हवन सामग्री में देशी घी, जब, काले तिल, गुड़, सफेद व लाल चन्दन का चूरा, गूगल, गाय का दही, शहद का प्रयोग करें।

इसके बाद आरती करें। फिर दशमी वाले दिन हवन सामग्री, पवन सामग्री, पूजन सामग्री, गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध यंत्र नदी में विसर्जित कर दें।

नोट :– "विनियोग" व "ऋष्यादि" न्यास से पूर्व स्वयं भोजपत्र पर अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से यंत्र निर्माण कर रख दें। दशमी वाले दिन स्वयं निर्मित यंत्र गले में धारण कर लें। इसके बाद किसी भी मंगलवार आप यंत्र निर्माण कर, पंचो पचार पूजन व एक माला जप करके सिद्ध करके दे देंगे तो उसकी सभी कामनावों की पूर्ति हो जायगी।

## वशीकरण, सम्मोहन व आकर्षन हेतु "उर्वशी यंत्र" साधना

जीवन के तप्त मरू स्थल में रिमझिम फुहारों के मध्य जब किसी सुगंधित कली का प्रस्फुटन होता है, तो ऐसा प्रतीत होता है, कि जीवन में बहुत बड़ी उपलब्धि मिल गई हो।

वास्तव में जीवन में माधुर्य, आनन्द का होना ईश्वर की ओर से प्रदान किया जाने वाला प्रत्यक्ष, "उपहार" ही तो है मानव को, लेकिन कुछ लोग इससे वंचित ही रह जाते हैं, और यदि आप भी माधुर्य, प्रेम, आनन्द से वंचित हैं तो आप भी ईश्वर की कृपा को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं।

देखें उर्वशी यंत्र स्वरूप :–



### यंत्र लिखने की विधि

इस यन्त्र का चमेली फूल की लकड़ी की कलम से, भोजपत्र पर कुंकुम या कस्तूरी की स्याही से निर्माण करें।

### साधना विधि

यह यंत्र की साधना पूर्णिमा की रात्री में करें। 10 बजे रात्रि में स्नानादि से पवित्र होकर एकान्त कमरे में आम लकड़ी के सिंहासन पर सफेद वस्त्र बिछावें, स्वयं भी सफेद वस्त्र धारण करें, सफेद आसन पर ही यंत्र निर्माण व पूजन करने हेतु बैठें। सिंहासन पर गुरू द्वारा प्राप्त "सिद्ध उर्वसी यंत्र" को चांदी अथवा कांच के प्लेट में रखकर स्थापित करें। धूप–दीप जगावें। यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ावें। इसके पश्चात् निम्न मंत्र का पांच माला जप पांच रात्रि नित्य करें। पाँच रात्रि में 25 माला जप करने का विधान है। जप आरम्भ करने से पूर्व गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। फिर स्वयं भोजपत्र पर यंत्र निर्माण कर गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र के साथ रखें।

पांचवें दिन की रात्री में एक माला देशी घी व सफेद चन्दन की चूरा से हवन करें। हवन में आम की लकड़ी व चमेली फूल की लकड़ी का प्रयोग करें।

हवन के बाद पूजन सामग्री व गुरू यंत्र को जल में प्रवाह कर दें। तत्पश्चात् अपने द्वारा निर्मित यंत्र को धूप दिखाकर जो भी कामना मांगेगे वह शीघ्र पूर्ण हो ज़ाएगी। यदि स्वयं किसी भी शुभ नक्षत्र में यंत्र निर्माण कर किसी को दे देंगे तो उसकी इच्छावों की भी पूर्ति हो जाएगी। सिद्ध किया हुआ यंत्र पंडित वाई० एन० झा "तूफान" के कार्यालय से पत्राचार पर प्राप्त कर सकते हैं।

## "बांझपन" जड़-मूल से समाप्त कर सन्तान प्राप्ति कराने वाला अमोघ यंत्र

पाठको ! जिस स्त्री को "माँ" की संज्ञा के स्थान पर "बाँझ" की संज्ञा मिल जाती है, वह जीवित रहते हुए भी "मृत" के समान हो जाती है। नारी के बांझ होने का कारण गृह दोष, पितृ दोष अथवा पूर्व जन्म कृत दोष व ग्रह दोष होते हैं।

पति की "न्यूनता" भी एक कारण हो सकता है, किन्तु प्रत्येक स्थिति में उपेक्षा का पात्र स्त्री को ही बनना पड़ता है।

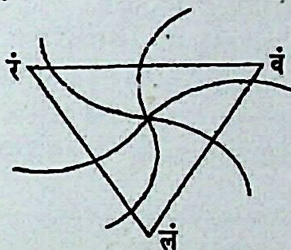
बांझपन की ऐसी ही स्थितियों में जहां चिकित्सा विज्ञान अक्षम सिद्ध हो जाता है। समस्या के निराकरण के लिए सिद्धास्रम के स्वनाम "धन्य योगी स्वामी महेशा नन्द जी" ने एक अत्यन्त प्रवर "यंत्र साधना" विधि का निष्पादन सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने की कृपा की है।

मूलतः यह यंत्र साधना बांझपन समाप्ति की साधना है न कि पुत्र प्राप्ति की !

यह यंत्र साधना करके हमें आश्चर्य हुआ कि अनेकानेक बांझ स्त्रियों का गोद हरा हो गया। जो दुनियाँ भर का इलाज कराकर ना उम्मीद हो चुकी थी नारी, उसे भी यह दिव्य यंत्र धारणा करने से सन्तान की प्राप्ति हुई।

यह यंत्र साधना केवल स्त्रियों द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

देखिए यंत्र स्वरूप :–




## यंत्र निर्माण विधि

इस यंत्र का निर्माण कुशा की कलम, कुंकुम की स्याही द्वारा भोजपत्र पर करें।

## यंत्र साधना विधि

सन्तान प्राप्ति की इच्छुक स्त्री को यह यंत्र साधना ऋृतुमति (मासिक धर्म) होने के उपरान्त ऋृतु स्नान के एक दिन बाद सम्पन्न करना चाहिए। साधिका को चाहिए कि वह प्रातः पांच छः बजे के मध्य स्वच्छ पीले वस्त्र पहन, पूर्वाभिमुख हो पीले आसन पर बैठे। पूजा स्थल पर एक तांबे या कांशे के प्लेट में गुरू द्वारा प्राप्त (तांत्रिकों द्वारा प्राप्त) ''सिद्ध बांझपन समाप्ति यंत्र'' रखें, पवित्र भूमि पर (पूजा स्थल पर) निम्न यंत्र स्वयं कुंकुम से निर्माण करें। स्वयं निर्मित यंत्र के ऊपर–गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र का प्लेट रखें। धूप–दीप जगावें, यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ावें।

तत्पश्चात् ''हकीक की माला'' से 21 माला मंत्र जप सम्पन्न करें, यह यंत्र साधना तीन दिन में पूर्ण करने का विधान है। यंत्र व पूजा स्थल पहले दिन जो निर्माण किए हैं, वही रहेगा, केवल दूसरे दिन धूप–दीप जगाकर माला (मंत्र) जप ही करें। नित्य माला जप करें। साधना काल के मध्य में तामसिक भोजन, अधिक वार्तालाप, अस्वच्छता एवं पति साहचर्य पूर्ण रूपेण वर्जित है।

## यंत्र साधना मंत्र

।।''ॐ पं रं लं कात्यायनी देव्यै नमः।।''

मंत्र जप पूर्ण होने के बाद यंत्र को प्रणाम कर आसन छोड़े और आगामी तीन दिनों तक उपरोक्त क्रम को अक्षुण्ण बनाए रखें।

यदि संभव हो तो साधिका का पति भी इस अवधि में सात्विक जीवन व्यतीत करें। साधना की समाप्ति के दौरान साधिक गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र को लाल डोरे में गले में धारण कर ले। यह यंत्र सिद्ध किया हुआ पंडित वाई. एन. झा के कार्यालय से पत्राचार करके प्राप्त कर सकते हैं।

साधना समाप्त होने के बाद पूजन सामग्री व हकीक की माला कुछ दक्षिणा के साथ किसी ब्राह्मण को या मंदिर के पुजारी को दान कर दें। अथवा नदी में विसर्जित कर दें।

पाठको ! इस साधना के प्रभावों में स्वतः ही एक वरदायक प्रभाव समाहित है। किसी निःसन्तान दम्पत्ति के घर में शिशु की किलकारियों को गुंजाने में समर्थ होने वाला यह दिव्य यंत्र सभी दोषों को समाप्त कर स्त्री की गोद भरने में अति प्रभावशाली साबित हो रहा है।

## क्या आप तंत्र-मंत्र प्रभाव से पीड़ित हैं? क्या आपको अनुष्ठान में सिद्धि प्राप्त नहीं होती? तो कीजिए उत्कीलन यंत्र साधना

मंत्र–जप–अनुष्ठान, यंत्र निर्माण अनेकानेक साधक सम्पन्न करते हैं, लेकिन सफलता कुछ को ही प्राप्त होती है। इसका कारण यह है कि ज्यादातर व्यक्तियों का जीवन एक विशेष प्रक्रिया द्वारा बांधा होता है। उनके मंत्र कीलित होते हैं, उन पर मांत्रिक, तांत्रिक प्रयोग किया होता है। अतः साधना में सिद्धि हेतु उत्कीलन यंत्र का प्रयोग तो आवश्यक ही है।

लोग साधना करते हैं, मंत्र अनुष्ठान, यंत्र निर्माण अनुष्ठान करते हैं और जब सफलता नहीं मिलती, तब या तो दोष मंत्र–यंत्र अनुष्ठान पर ही डालते हैं अथवा दोषों का भाग भुगतना पड़ता है गुरूदेव को पुस्तक रचयिता तांत्रिक को कहते हैं कि हम इतनी बार गुरूदेव जी के पास गये, इतनी बार अनुष्ठान किया, पूरी विधि से कार्य किया, परन्तु सफलता नहीं मिली तो "शास्त्र" ही झूठे हैं, क्या किसी ने यह विचार किया है, कि हो सकता है, मेरी ही क्रिया–प्रक्रिया, मेरी ही क्षमता में कोई दोष हो, मेरे ही पाप कर्मों के कारण सफलता नहीं मिल रही हो। क्या ऐसा तो नहीं है, कि मेरा जीवन ही कीलित किया हुआ हो? प्रत्येक साधक को इस प्रश्न पर भी विचार करना आवश्यक है।

### *"कीलन" दोष क्या है?*

कीलन का तात्पर्य है, एक बंधन, जिस प्रकार एक खूंटे से बंधा पशु उस खूंटे के चारों ओर तो चक्कर लगा सकता है, लेकिन वह

सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता, खूंटे से गले तक की रस्सी किसी के लिए छोटी हो सकती है और किसी के लिए बड़ी अर्थात् बंधन तो बंधन ही है, वह जंगल के पशु की भांति स्वच्छन्द विचरण तो नहीं कर सकता। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की शक्तियों का कीलन किया हुआ है–वह कीलन उसके कर्मों के कारण, उस के दोषों के कारण, उस पर किये गए किसी तांत्रिक प्रयोगों आदि के कारण हो जाता है।

जब तक वह दोष दूर नहीं हो जाता है तब तक वह कितना ही प्रयास करे उसके कार्य सफल नहीं होते, उसके देखते–देखते उसके साथ वाले जीवन के दौड़ में आगे निकल जाते हैं और वह एक पशु की भांति अपने ही स्थान पर बंधा छटपटाता रहता है।

कीलन दोष का क्या उपाय है ? क्या कीलन दोष एक ऐसा कलंक है, जिसे उतारां ही नहीं जा सकता ? क्या साधक अपने भीतर अपनी शक्ति का उस स्तर तक विकाश नहीं कर सकता, जिससे कीलन दोष दूर हो जाये ?

ठीक यही प्रश्न यंत्र–मंत्र व तंत्र के विधाता भगवान शिव से पार्वती ने किया था कि प्रभु! आप तो भक्तों पर परम कृपा करने वाले हैं, आगम–निगम बीज मंत्रों के स्वरूप हैं, भक्ति–मुक्ति के प्रदाता हैं फिर आपने यंत्रों व मंत्रों का कीलन क्यों किया ? क्यों सांसारिक प्राणियों को यंत्र–मंत्र सिद्धि में पूर्णता प्राप्त नहीं होती ?

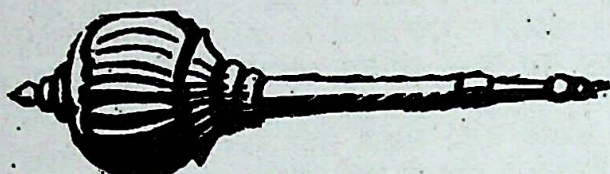
देवों के देव भगवान शिव ने कहा "जैसे–जैसे युग बदलेगा। वैसे वैसे लोगों में भक्ति–प्रीति कम होगी। राग, द्धेश, इर्ष्या, विरोध, शत्रुता में वृद्धि होगी। एक प्राणी दूसरे को देखकर प्रसन्न नहीं होगा, अपितु इर्ष्या करेगा और इस इर्ष्या के वशीभूत अपनी शक्तियों का उपयोग बुरे कार्यों में व्यय करेगा। यदि ऐसे व्यक्तियों के हाथ में यंत्र–मंत्र–तंत्र सिद्धि प्राप्त हो गई तो वे संसार में विपत्ति की स्थिति उत्पन्न कर देंगे। फिर भी तुम्हारे स्नेह वश मैं यंत्र–मंत्र–तंत्र आदि के "उत्कीलन" की वह विधि स्पष्ट करता हूँ, जिसके कारण सात्विक विचार वाले धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के नियमों का पालन करने वाले साधक को यह "कीलन दोष" शांत करने में सफलता प्राप्त होगी, अपने ऊपर व्यक्तियों द्वारा किए गए तंत्र को दूर कर सकेगा, अपने तंत्र ज्ञान की रक्षा व सिद्धि के लिए प्रयोग करेगा।"

### *उत्कीलन महाविधान*

यह विधान किसी भी शनिवार को सम्पन्न कर सकते हैं। यह सात शनिवार का प्रयोग है, जिसमें प्रत्येक शनिवार की अर्द्धरात्रि को निम्न विधि से प्रयोग सम्पन्न करें।

स्नानादि से पवित्र होकर एक आम लकड़ी के सिंहासन पर लाल कपड़ा बिछावें तथा उस पर अष्टगंध व गुलाल फैला दें। कपड़े पर आठों दिशावों में सरसों की एक–एक ढेरी बनाएं। प्रत्येक ढेरी पर एक–एक गोल सूपारी रखें। अब अपने सामने गुरू से प्राप्त किया हुआ–"रौद्र शिव महाकाली सिद्ध यंत्र" को दूध से धोकर एक तांबे के

प्लेट में सिंहासन पर सरसों ढेरी के बीच में स्थापित करें। धूप-दीप जगावें, यंत्र पर पुष्प चढ़ावें। तत्पश्चात् एक "गदा" का चित्र रक्त चन्दन व अनार की कलम से भोजपत्र पर निर्माण कर गुरू यंत्र प्लेट में रखें।



अब दाँए हाथ में जल लेकर "विनियोग" करें।

***विनियोग***

"ॐ अस्य श्री सर्व यंत्र-मंत्र-तंत्राणां उत्कीलन मंत्र स्त्रोत्रस्य मूल प्रकृति ऋषिर्जन्ती छन्दः निरंजनो देवता कलीं बीजं ह्रीं शक्ति ह्रं लौं कीलकम् सप्तकोटि मंत्र-यंत्र-तंत्र कीलकाणां संजीवन सिद्धयर्थे जपे विनियोग :।।

जल को भूमि पर छोड़ दें, उसके बाद साधक भगवान शिव का ध्यान कर निम्न मूल मंत्र का जप आरम्भ करे।

***उत्कीलन मूल मंत्र***

ॐ ह्रीं ह्रीं षटपंचाक्षराणांमुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा।

ॐ सर्व मन्त्र यन्त्र तन्त्राणां सजीवनं कुरू-कुरू स्वाहा।।

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं ड़ं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मात्राक्षराणा सर्वम् उत्कीलन कुरू स्वाहा। ॐ सों हं (ग्यारह बार) ॐ जूं सौं हं हंसः (ग्यारह बार) हूं जूं हं सं गं (ग्यारह बार) सोऽहं हं सोऽहं (ग्यारह बार) लं (ग्यारह बार) उँ ह्रीं जूं सर्व यंत्र-मंत्र स्तोत्र कुवचा-दीनां सीजीवनं कुरू-कुरू स्वाहा। ॐ सोऽहं सः जूं संजीवंन स्वाहा।।

यह मंत्र बड़ा अवश्य है लेकिन शांत भाव से मुट्ठी बंद कर इसका 108 बार ही उच्चारण करना है। सात दिन तक यह विधान इसी रूप में सम्पन्न कर "शिव यंत्र" काले धागे में (गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र) गले में धारण कर लें। अन्य पूजन सामग्री लाल कपड़े में बांधकर, उसमें ग्यारह लोहे की कीलें मिला कर घर से बाहर जमीन में गड्ढा खोद कर गाड़ देना आवश्यक है।

यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है और कितना भी भंयकर तांत्रिक प्रयोग किया हुआ है, वह दूर हो जाता है तथा साधक जिस यंत्र-मंत्र की साधना करता है उसमें सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है। ऐसे साधक जिसे भी शनिवार के दिन भोजपत्र पर गदा निर्माण कर, जिस व्यक्ति को देगा ताबीज में भरकर तो उसके भी समस्त कार्य सिद्ध होने लगेंगे, उनके पास भी सभी सफलताएँ चरण चूमेगी। आजमा कर देखें।

# असाध्य रोग व विभिन्न प्रकार की बिमारियों से मुक्त होने का "अचूक अनेकानेक यंत्र" खण्ड

### गर्भवती कष्ट निवारण-यंत्र

इस यंत्र को कांशे की थाली में लाल चन्दन व अनार की कलम से लिखकर जो स्त्री गर्भवती हो, उसको पिलावे तो उसे कष्ट नहीं होता।

| | | | |
|---|---|---|---|
| २८ | ३४ | २ | २ |
| ७ | ३ | ३२ | ३२ |
| ३४ | २९ | ९ | ९ |
| ४ | ६ | ३० | ३ |

### नाक बहना रोकने वाला यंत्र

यदि इस यंत्र को सरसों के पत्ते पर हल्दी की स्याही व अनार की कलम से निर्माण कर रोगी मुंह में चबावे तो नाक का बहना बंद हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ | ३५ | २ | ८ |
| ७ | ३ | २९ | २० |
| २८ | ६ | ९ | ९ |
| ४ | ६ | ३० | ३० |

### बाल रोग चिकित्सा यंत्र

इस यंत्र को तिखूंटी पत्थर पर लिखकर बालक को दिखलावे तो बालक निरोग हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ह्रीं | २५२ | २५२ | ह्रीं |
| ह्रीं | २५२ | ह्रीं | २५२ |
| २५२ | २५२ | २५२ | २५२ |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |

### आधा शीशी (अधकपारी) दर्द दूर होने का यंत्र

जिसको आधाशीशी (अधकपारी) का दर्द हो, वे रविवार के दिन हल्दी की स्याही या अष्टगंध की स्याही से कुशा की कलम द्वारा भोजपत्र पर यह यंत्र निर्माण कर बाजू या सिर पे बांधे तो दर्द सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३० | ४६ | २६ | ७१ |
| ३ | ८ | ४ | ७ |
| १ | ८ | २ | ९ |
| १० | ७ | 0 | ६ |

## समस्त पीड़ा होने का यंत्र

निम्न यंत्र को दाँतून की कूंची से पत्थर पर शनिवार के दिन लिखें और उसके ऊपर रोगी को बैठाकर स्नान करावें तो उसकी समस्त पीड़ा नष्ट हो जायेगी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६५ | ७ | १ | ७ |
| ६ | ३ | २ | ७ |
| ६१ | ६३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ७८ | ६0 |

## सदैव निरोग रहने का यंत्र

इस यंत्र को ''मघा नक्षत्र'' में लिखकर मनिहार (चूड़िहार) की भट्ठी में डाल देने से व्यक्ति सदैव निरोग रहता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ५५ | १ | ८६ |
| ८ | ५६ | ८ | ८४ |
| ८९ | ३ | ६२ | ५ |
| ८२ | ६३ | ५८ | ४ |

## बालक का भय निवारण यंत्र

यदि इस यंत्र को तिखुंटी पत्थर पर लिखकर, काले कपड़े में लपेट कर धागे (काले) के साथ बालक के गले में शनिवार को बांध दे तो वह डरना बन्द कर देता है और उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | ८१ | १ | ८३ |
| २ | ८१ | ९ | ७९ |
| ८४ | ३ | ७९ | ६ |
| ७७ | ७ | ८३ | ४ |

## नजर न लगने का यंत्र

इस यंत्र को रविवार के दिन अनार की कलम, कुंकुम की स्याही से भोजपत्र पर निर्माण कर बालक के गले में, ताबीज (चांदी की) में भरकर काले डोरे से बांधे तो किसी की भी नजर नहीं लगती और ना ही उसके ऊपर जादू–टोने का असर होता।

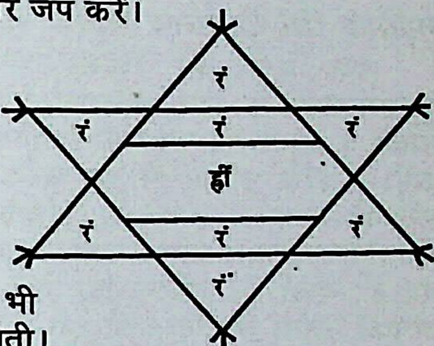
| | | | |
|---|---|---|---|
| ४ | २१ | ५0 | १ |
| ३३ | ९ | ४९ | ९ |
| ८१ | ८२ | ३० | 2५ |
| ७१ | ९८ | २५ | ४२ |

## मृत्यु भय नाशक यंत्र

इस यंत्र को अनार की कलम व गोरोचन की स्याही से भोजपत्र पर शनिवार या रविवार के दिन निर्माण करें, तत्पश्चात् तांबे के प्लेट में पूजा स्थल पर रखकर धूप–दीप दिखावें व यंत्र पर पुष्प चढ़ावें

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

मंत्रः— ॐ हौं त्रं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहै सुगिन्ध पुष्टि वर्द्धनम् उर्वारूकमिव बंधनान् मृत्योर्मुत्रीय माऽमृताम्।। ॐ स्वर्भुवः ॐ सः जू हौं ॐ।।




इसके बाद चांदी या तांबे के ताबीज में बद करके दाहिने हाथ पर लाल धागे में बांधे तो किसी भी परिस्थिति में अकाल मृत्यु नहीं होती।

## *गर्भ धारण करने का यंत्र*

| | | | |
|---|---|---|---|
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |

इस यंत्र को मूलनक्षत्र के रविवार के दिन अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर निर्माण करें, यंत्र निर्माण कर यंत्र तांबे के प्लेट में पूजा स्थल पर रखें, धूप दीप जगावें, यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ावे, तत्पश्चात् 108 बार निम्न मंत्र का जप करें—ॐ ह्रीं गर्भ धारिणी गर्भ धारणं कुरू—कुरू स्वाहा।।

मंत्र जप समाप्त होने के बाद यंत्र को स्र्वण की ताबीज में भरकर स्त्री के बाएँ बाजू पर काले धागे से बांधें तो वह स्त्री अवश्य गर्भ धारण करेगी।

## *कांछ न निकलने का यंत्र*

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८६ | ८३ | २ | ८ |
| ७ | ३ | ८० | १९ |
| म ५ | १६ ५ | ९ ५ | ६ ५ |
| १० ५ | ५ ५ | ४ ५ | १४ ५ |

इस यंत्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से निर्माण कर बालक के गले में बांधने से कांछ रोग ठीक हो जाता है।

## *कान का दर्द ठीक होने का यंत्र*

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६२ | २९ | २ | ८ |
| ७ | ३ | ६ | १५ |
| २८ | २६ | ९ | १ |
| ४ | ६ | २४ | २१ |

इस यंत्र को अनार की कलम व अनार की रस से भोजपत्र पर शनिवार के दिन निर्माण कर, तांबे या चांदी की ताबीज में भरकर काले धागे के साथ कान में बांधने से कान का दर्द ठीक हो जाता है।

## मासिक धर्म के समय अधिक रक्तपात रोकने का यंत्र

इस यंत्र को किसी भी वृहस्पतिवार के दिन अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से निर्माण करें। तांबे के ताबीज में बंद करके स्त्री की कमर में बांधने से मासिक धर्म में वेग के साथ अधिक रक्त बहना बंद हो जाता है। आजमा कर देखें, अनेकों स्त्रियां लाभन्वित हो रहीं हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ज | ज | ज | ज |
| ११ | ११ | ११ | ११ |
| १ | १ | १ | १ |
| ८ | ८ | ८ | ८ |

## ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र को क़िसी भी दिन लकड़ी के कोयले से कागज़ पर लिखकर तथा नीले वस्त्र मे ताबीज़ बनाकर रोगी के गले में बांधने से कोई भी ज्वर उतर जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९३ | ३३ | १५ | ४८ |
| ४३ | ५ | ५२ | ४ |
| ४४ | २८ | ८८ | ९१ |
| ४ | ५ | ३१ | ४५ |

## शीतला निवारण यंत्र

इस यन्त्र को किसी भी दिन कागज़ पर सफेद चन्दन व अनार की कलम से निर्माण क़र सफेद कपड़े में ताबीज बनाकर गले में बांध देने से "शीतला" शान्त हो जाती है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | ४४ | ९ | ५१ |
| ७४ | ८ | ४ | ५२ |
| ३ | २९ | ८७ | ९१ |
| ९ | ६ | ९ | ४५ |

## पेट का वायु गोला हरण यंत्र

इस यंत्रराज को लाल चन्दन से कागज़ पर अनार की कलम से निर्माण करें। फिर सूर्य के सम्मुख होकर गंगा जल या यमुना जल में घोल कर रोगी को पिलावें तो वायु गोला का पेट दर्द समाप्त हो जाता है।

| | |
|---|---|
| ७ | ५ |
| ९ | १ |

## नित्य ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र राज को रविवार या मंगलवार को पुष्य नक्षत्र में लाल चन्दन व अनार की कलम से पीपल के पत्ते पर निर्माण करें और रोगी के गले मे धारण करा दें तो नित्य ज्वर बिल्कुल उतर जाता है और रोगी सुखी हो जाता है।

| | | |
|---|---|---|
| ९ | २ | ७ |
| ४ | ६ | ८ |
| ५ | १० | ३ |

## शीत ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर किसी भीं मंगलवार या रविवार के दिन अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा निर्माण करें और तांबे के ताबीज में भरकर काले धागे के साथ रोगी के गले में धारण कराने से शीत ज्वर सदा के लिए उतर जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ७ | १४ |
| ५ | ३ | ६ | ३ |
| १ | ४ | ३ | ७ |
| ६ | ६ | १ | ४४ |

## तिजारी ज्वर नाशक यंत्र

इस यंत्र राज को अष्टगंध व अनार की कलम से भोजपत्र पर मंगलवार के दिन निर्माण करें। पंचोपचार विधि से हनुमान जी की पूजा करें। तत्पश्चात् तांबे के ताबीज में रोगी के गले में लाल धागे के साथ पहना दें तो तिजारी ज्वर नाश हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३ | ७ | ९ | ७ |
| ९ | २ | ७ | ९ |
| ४ | ६ | ८ | २० |
| ५ | १० | ३ | १ |

## नाक रोग निवारण यंत्र

रविवार, पुष्य नक्षत्र, ४, ८, १४ तिथि में रक्त चन्दन से सरसों के पंत्ते पर, अनार की कलम से इस यंत्र का निर्माण करें और रोगी को यंत्र चबाने के लिए दे दें तो नाक का समस्त रोग दूर हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १५ | ३५ | २ | ८ |
| ७ | ३ | २ | ९ |
| ३४ | ३९ | ९ | १ |
| ४ | ६ | ३ | ३३ |

## पशु रोग हरण यंत्र

इस यंत्र को दीपावली, होली की रात्री, ग्रहण अथवा पुष्य नक्षत्र के गुरूवार को अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखें। विधि पूर्वक पूजन कर रोगी पशु के गले में काले कपड़े में ताबीज बनाकर बांध दें तो कोई भी पशु रोग दूर हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५५ | ६२ | ९५ | ७ |
| ६ | ७ | ५९ | ५८ |
| ६६ | ५१ | १८ | ५ |
| ४ | ५७ | ६६ | ६५ |

## रक्तपित्त निवारण यंत्र

इस यंत्र राज को दीपावली, होली की रात्री, ग्रहण या पुष्य नक्षत्र के गुरूवार को अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर निर्माण

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४८ | ५५ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ५२ | ५१ |
| ५४ | ४९ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ५० | ५३ |

करें। तत्पश्चात् तांबे के ताबीज में भरकर, पंचोपचार पूजन कर रोगी के गले में बांध देने से रक्तपित्त रोग ठीक हो जाता है।

### स्त्री के अनेक कष्ट निवारण यंत्र

यह यंत्र शनिवार के दिन जब मूल नक्षत्र हो, अष्टगंध की स्याही, अनार की कलम से भोजपत्र पर निर्माण करें। तत्पश्चात् यंत्र का पंचोपचार पूजन कर, यंत्र को तांबे के ताबीज में भरकर, लाल धागे के साथ स्त्री के गले में धारण करने से गर्भस्राव, गर्भपात, बांझपन जैसे कष्ट दूर हो जाते है। यह ताबीज गर्भ की रक्षा भी करता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| क्रीं | क्रीं | क्रीं | क्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |

### नेत्र पीड़ा निवारण यंत्र

इस यंत्र को सोमवार या रविवार के दिन अष्टगंध से चमेली या अनार की कलम से भोजपत्र पर निर्माण करें, पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् चांदी के ताबीज में भरकर काले धागे के साथ पुरूष के दाहिने बाजू और स्त्री के बाँए बाजू पर धारण करावें। इससे नेत्र पीड़ा, किसी भी प्रकार की दूर हो जाती है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० | १७ | ६ | ७ |
| १७ | ४ | ११ | ६ |
| ३ | १४ | ९ | १२ |
| ८ | ३ | १४ | १५ |

### "क्षय रोग" नाशक यंत्र

यह बहुत ही अद्भुत चमत्कारी यंत्र है। इस यंत्र को धारण करने से अनेकों क्षय रोगी बिना दवा–दारू के ठीक हो गये हैं। यह मेरा परम अनुभव है। इस यंत्र को रवि पुष्य नक्षत्र अथवा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में किसी भी रविवार को प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से निर्माण करें। पंचोपचार पूजन करें। तदुपरान्त तांबे के ताबीज में भरकर काले धागे का साथ रोगी के गले में धारण कराने से क्षय रोग गांरटी के साथ दूर हो जाता है। हमारे कार्यालय से सिद्ध यंत्र प्राप्त कर अनेकों रोगी लाभन्वित होकर रोग मुक्त हो गये हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८२ | ८९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ५६ | ५५ |
| ५८ | ६३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ८ | ५० |

### मिरगी-रोग नाशक यंत्र

मिरगी का दौरा कभी–कभी रोगी को अचानक ही आ जाता है।

यदि रोगी उस समय आग के पास हो, नदी या तालाब मे हो तो उस स्थान पर उसकी मृत्यु तक हो जाती है। ऐसे रोगी को पुष्य नक्षत्र या उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के रविवार के दिन प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर, यंत्र निर्माण कर, पंचोपचार पूजन कर ताबे के ताबीज में यंत्र को भरकर गले में धारण करा दें तो "मिरगी रोग" सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४2 | ४2 | 2 | ॥७ |
| ४५ | ४3 | ७ | ७। |
| ॥१४॥ | ॥५॥ | ४४ | ४७॥ |
| ॥१४॥ | ।५॥ | ४४ | ४७॥ |

यह यन्त्र राज को अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर अनार की कलम से निर्माण करें।

### बावसीर (अर्स) रोग नाशक यंत्र

इस यंत्र राज को सर्वार्थ सिद्धि योग के रविवार के दिन प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर, अष्टगंध की स्याही से अनार की कलम के साथ भोजपत्र पर निर्माण करें। पंचोपचार (यंत्र का) पूजन करें। तत्पश्चात् तांबे के ताबीज में भरकर रोगी को धारण करावें तो "बवासीर" रोग बिल्कुल ठीक हो जाता है। यह यंत्र काले धागे के साथ रोगी की कमर में बांधने को कहें। बिल्कुल सही यंत्र है, मैंने कितने को सिद्ध कर दिये हैं और रोगी बिल्कुल निरोग हो गया है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | २७ ७0 | ५३ | त इ |
| त न | १७ | १२ | ट ९ |
| ७ | ७१ | त २ | त १ |
| म त | १ त | 0 | ११ |

## पुत्र प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावशाली यंत्र

शास्त्रों का कहना है कि किसी व्यक्ति को मृत्युपरांत यदि पुत्र द्वारा अग्नि (मुख वाती) संस्कार न होने से मृतक आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती और न ही वंश वृद्धि होती है। अतः इसी कारण वश संसार के समस्त स्त्री पुरूष को पुत्र प्राप्ति की अगाध कामना होती है।

जिस स्त्री–पुरूष को सन्तान केवल कन्या ही हो, या जो निःसन्तान हो, बांझ हो, वे सभी स्त्री पुरूष निम्न यंत्र के प्रयोग से "पुत्र रत्न" की प्राप्ति निश्चित रूप से कर सकते हैं। यह यंत्र साधना विधि से या इस यंत्र के धारण करने से अनेकानेक निपुत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ०८ | ०१ | ३४ | ३९ |
| ३० | ३३ | ०४ | ०५ |
| ०२ | ०७ | २८ | ३५ |
| ३२ | ३१ | ०६ | ०३ |
| श्री कृष्ण | त्वामहं | शरणं | गताः |

व्यक्ति को पुत्र की प्राप्ति हुई है। इस यंत्र का प्रयोग कराकर अनेकों लोगों को मैंने पुत्र रत्न की प्राप्ति कराए हैं।

यदि किसी को पुत्र रत्न चाहिए तो वे निराशा को दूर भगाकर यह यंत्र धारण करें, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।

### यंत्र निर्माण विधि

इस यंत्र का निर्माण अष्टगंध की स्याही से ''जन्माष्टमी'' (भाद्र मास के कृष्णाष्टमी) की रात, अथवा ''रवि पुष्य नक्षत्र'' के सोमवार दिन, अनार की कलम से भोजपत्र पर करें।

### यंत्र साधना विधि

स्त्री या पुरूष दो में से कोई एक अथवा दोनों मिलकर यदि यह यंत्र प्रयोग करें तो अति लाभदायक होगा।

उपरोक्त रात्रि में स्नानादि से पवित्र होकर आम लकड़ी के पीढ़ा, अथवा सिंहासन पर लाल वस्त्र बिछावें; उस पर भगवान कृष्ण की बाल्यवस्था की तस्वीर की स्थापना करें। इसके पश्चात् गुरू से प्राप्त यही सिद्ध यंत्र तांबे के प्लेट में भगवान कृष्ण तस्वीर के समक्ष रखें। स्वयं पीला वस्त्र धारण करें, पीले आसन पर बैठे। धूप दीप जलावें। यंत्र के ऊपर गंगाजल, चावल, चनदन, पुष्प, पुष्पमाला, दूध, दही, मक्खन व शहद चढ़ावें। तत्पश्चात् स्वयं भोजपत्र पर यंत्र निर्माण कर गुरू यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके बाद रूद्राक्ष अथवा मोती या मूंगे की माला से निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

### यंत्र सिद्धि जप मंत्र

ॐ नमो भगवते देवाय।
देवकी सुत गोबिन्द वासुदेव, जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गताः।।

उपरोक्त मंत्र का जप 21 दिन नित्य रात्रि के समय धूप–दीप जगाकर करें। 21वीं रात्रि को जप समाप्त होने के बाद एक माला हवन करें। हवन आम की लकड़ी पर आग जलाकर उपरोक्त मंत्र उच्चारण करके ही करें। मंत्र के अन्त में हर बार स्वाहा बोलना अति आवश्यक है। इसके बाद भगवान कृष्ण की आरती करें। तत्पश्चात् स्वयं निर्माण किया हुआ। (यदि पति–पत्नी दोनों ने अलग–अलग यंत्र निर्माण किए हैं, तो अपना–अपना निर्मित यंत्र ही धारण करें। यंत्र लाल डोरे में, चांदी निर्माण किए हैं, तो अपना–अपना निर्मित यंत्र ही धारण करें।) यंत्र लाल डोरे में चांदी अथवा सोना या तांबे के ताबीज में भरकर गले में धारण करें। गुरू यंत्र व पूजन सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें।

इसके पश्चात् पुत्र के चाहतवान किसी भी स्त्री पुरूष को आप यह दिव्य यंत्र सोमवार के दिन (रात्रि में) विधि पूर्वक निर्माण कर, एक माला जप कर, प्रदान करेंगे तो उसे आवश्य ही पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।

# पुत्र प्राप्ति हेतु अद्‌भुत "त्रिपुर सुन्दरी यंत्र"

## "माता त्रिपुर सुन्दरी" कौन हैं और इनका क्या स्वरूप है?

तीन प्रमुख नाड़ियाँ–इड़ा, सुषुम्ना और पिंगला, जो कि मन, बुद्धि और चित्त को नियंत्रित करती हैं, यह "आद्या शक्ति" त्रिपुर सुन्दरी ही हैं।

"त्रिपुर शक्ति" आदि शक्ति महेश की जननी कही जा सकती हैं। "वाम केश्वर तंत्र" के अनुसार इस शक्ति में ब्रह्मा, विष्णु, और ईशरूपिणी श्री विद्या के तीन स्वरूप हैं। ये तीन स्वरूप हैं–ज्ञान शक्ति और इच्छा शक्ति। षोडशी त्रिपुर सुन्दरी की शिरो भाग इच्छा शक्ति है, मध्य भाग ज्ञान शक्ति है और अद्यो भाग क्रिया शक्ति है। अतः यह त्रयात्मक शक्ति हैं। महा प्रलय में त्रिलोकी को अपने में लीन कर लेने से–"त्रिपुर विद्या" अर्थात महा अम्बिके त्रिपुर सुन्दरी कही जाती हैं।

यह दिव्य यंत्र की साधना के माध्यम से जीवन में सन्तान व पुत्र रत्न की प्राप्ति, पुरूषार्थोंकी प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही साथ आध्यात्मिक जीवन में भी समपूर्णता प्राप्ति होती है।

साधकों को कोई भी यंत्र–मंत्र साधना में सफलता नहीं मिल रही हो, तो उसको भी पूर्णता के साथ सिद्ध कराने में यह महाविद्या यंत्र समर्थ है।

## यंत्र साधना विधि

यह दिव्य यंत्र की साधना पांच दिन का है। यह साधना किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ किया जा सकता है। रात्रि को लगभग 9 बजे साधक पूर्ण शुद्धता के साथ स्नान कर सफेद धोती धारण करें, फिर पिताम्बर वस्त्र शरीर पर ओढ़ लें। आम लकड़ी की सिंहासन पर गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध त्रिपुर सुन्दरी यंत्र को पीले रंग के आसन (वस्त्र) बिछाकर, तांबे के प्लेट में स्थापित करें। उत्तर मुंह होकर बैंठे सामने सिंहासन रखें।

इसके बाद धूप और सुगन्धित अगरबत्ती जलावें, यंत्र के ऊपर संक्षिप्त पूजन गंगा जल, अक्षत, पुष्प, पुष्पमाला, चन्दन, नवैद्य आदि से करें। सरसों तेल व देशी घी को दो दीपक जगावें। यंत्र के ऊपर कुंकुम अर्पित करें। दूध, घी, दही, शहद, गुड़ मिलाकर पंचामृत (यंत्र के ऊपर) अर्पित करें।

इसके बाद जल से निम्नमंत्र द्वारा तीन वार आचमन करें।

## आचमन मंत्र

ॐ ह्रीं आत्म तत्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्या तत्वाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं शिव तत्वाय स्वाहा।

इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर भक्ति भाव से भगवती त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करें:–

*ध्यान मंत्र*

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतम् वत्सले।
भक्त्या सर्मपये तुभ्यं मातु नमस्कारम्।।

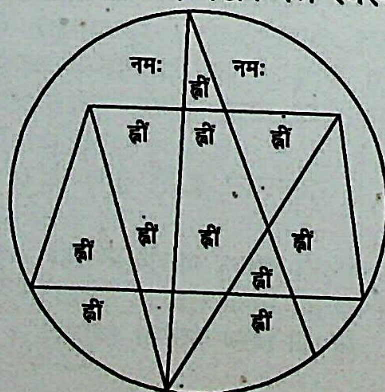
अब भोजपत्र को प्रणाम कर, उस पर स्वयं रक्त चन्दन की स्यांही व अनार की कलम से दिव्य यंत्र, (जिसका स्वरूप आगे दिखा रहा हूँ) निर्माण करें। यंत्र निर्माण कर गुरू यंत्र प्लेट में रख दें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 11 माला (रूद्रास की माला से) जप करें। "ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क हु ल ह्रीं सकल ह्रीं जप समाप्ति के बाद निम्न स्तोत्र का एक बार हाथ जोड़ कर पाठ करें :–

ब्रम्हाणी पातु मां पूर्वे दक्षिणे वैष्णवी तथा।
पश्चिमे पातु वाराही उत्तरे तु महेश्वरि।।
आग्नेयां पातु कौमारी महालक्ष्मी नैर्ऋदते।
वायब्यां पातु चामुंडा इन्द्राणी पातु ईशके।।
जले पातु महामाया पृथिब्यां सर्वे मगला।
आकाशे पातु वरदा सर्वत्र भुवनेश्वरी।।

स्तोत्र पाठ के बाद यंत्र को प्रणाम करें। तत्पश्चात् अपने कार्य में लग जाय।

उपरोक्त विधि से–दूसरे दिन से यंत्र पर पुष्प अर्पित कर धूप दीप जलाकर जप करें। शाम को नित्य यंत्र के पास धूप–दीप जगावें। इस प्रकार पांच दिन यह नियम करें। पांचवें दिन आम की लकड़ी पर आग जलाकर (जप के बाद) हवन करें। हवन–घी, जल, तिल़, गुड़, शहद, गूगल, सफेद चन्दन का चूरा मिलाकर करें।

तत्पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें। फिर स्वयं निर्मित यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर लाल डोरे में बांध कर गले में धारण करें। गुरू द्वारा प्राप्त यंत्र व पांच दिन का पूजन सामग्री नदी में विसर्जित कर दें। उपरोक्त नियमों से यंत्र की पूजा अर्चना करने से निश्चय ही पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। आजमा कर देखें। यंत्र स्वरूप :–



### बच्चों का सूखा रोग हरण यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| ३३४ | ३३४ | ३३४ |
| ३३४ | ३३४ | ३३४ |
| ३३४ | ३३४ | ३३४ |

होली, दीपावली की रात्री में या ग्रहण काल में भोजपत्र पर, अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से 108 यंत्र लिखें, इसके बाद पीपल के पत्ते पर लाल चन्दन से चार यन्त्र लिखें। एक यंत्र गंगाजल में धोकर बच्चे की माँ को पिलावें। दूसरे यंत्र को धूप–दीप आदि से साधारण पूजन कर, माँ के दूध में धोकर बालक को पिलावें। दो बचे हुए यंत्र को दो दिन (आगे) फिर बच्चे की माँ के दूध में धोकर पिला दें तो बच्चों का सूखा रोग सदा के लिए नष्ट हो जायगा और उसे किसी की नजर भी नहीं लगेगी। आजमा कर देखें।

### गाय-भैंस के दूध में वृद्धि हेतु यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| २८ | ३५ | २ | ७ |
| ६ | ३३ | ३२ | ३१ |
| ३४ | २९ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ३० | १३ |

इस यंत्र राज को दीपावली की रात्रि में, ग्रहण में अथवा पुष्य नक्षत्र में अथवा किसी भी गुरू वार के दिन भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध से लिखकर दूध वाले पशु के दाहिने सिंग में (लाल कपड़े में ताबीज बनाकर) लाल डोरे के साथ बांध दें, तो वह अधिक दूध देने लगेगा। यदि उस पशु के ऊपर कोई जादू–टोने का भी असर होगा तो वह भी दूर हो जाएगा, पशु स्वस्थ रहेगा।

### दुष्ट स्वप्न हरण यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| हं | सं | धं | पुं |
| षं | दं | चं | जं |
| नं | पं | मं | दं |
| चं | पं | जं | दं |

इस यंत्र राज को रविवार या शनिवार के दिन भोजपत्र पर, अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से निर्माण कर, विधि पूर्वक पूजन कर, तांबे के ताबीज में भरकर गले में धारण कर लेता है तो बुरे स्वप्न आना बन्द हो जाता है। यंत्र काले धागे में ही धारण करें।

### बालकों व बड़ों के भूत-प्रेत ग्रह नाशक यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ८ | ३ | ८ |
| ५ | ६ | ३ | ६ |
| ७ | २ | ९ | २ |
| ७ | ४ | ५ | ४ |
| व्यक्ति का नाम | | | |

इस यंत्र को अनार की कलम से अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर निर्माण शुभ नक्षत्र तिथि वार में ही करें, और घर में रखे रहें। जब किसी को भूत बाधा हो तो उसके गले में तांबे

के ताबीज में भरकर, काले धागे के साथ धारण करा दें, तो भूत–प्रेत बाधा समाप्त हो जाती है।

### *सफेद कोढ़ ठीक होने का यंत्र*

इस यंत्र राज की साधना पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के शनिवार के दिन करें। यंत्र लेखन भोजपत्र पर, अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से करें। यंत्र निर्माण कर, धूप दीप जगाकर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें।

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ७ | १४ |
| १३ | ११ | ९ |
| ८ | १४ | १० |

### *जप मंत्र*

ॐ खां खीं खौं सः ॐ भू भुवः स्वः।
ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभिस्त्रवन्तु नः ॐ स्वः भुवः
भूः ॐ सः खौं खीं खीं कां ॐ शनैश्चराय नमः।

तत्पश्चात् यंत्र को तांबे या चांदी के ताबीज में भरकर रोगी को काले धागे में धारण कराने से "सफेद कोढ़" ठीक हो जाता है।

### *अंडकोष वृद्धि रोकने का यंत्र*

इस यंत्र राज को रविवार के दिन निर्माण करें। केशर की स्याही, अनार की कलम से भोजपत्र पर यंत्र निर्माण करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र से धूप–दीप जगाकर माला जप करें :–

ॐ नमो नलाईज्यां बैठ्या हनुमत आई पके न फूटे, चले बाल जति रक्षा करे। गुरू रखवाला, शब्द सांचा पिंड काचा चलो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरू की।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४४२ | ४४९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ४४६ | ४४५ |
| ४४८ | ४४३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ४४४ | ४४७ |

जप समाप्त होने के बाद यंत्र राज को, तांबे के ताबीज में भरकर, रोगी की कमर में बांधने से अंडकोष वृद्धि रूक जाती है। यदि अंडकोष बढ़ा हुआ हो तो धीरे–धीरे सामान्य स्थिति में आ जाता है। यंत्र काले धागे में ही धारण करें।

### *हिस्टीरिया रोग निवारण यंत्र*

हिस्टीरिया रोग खास कर स्त्रियों में होती है और यह अति भयानक रोग है। दवा–दारू कराते कराते लोग थक जाते हैं परन्तु यह रोग में शीघ्र आराम नहीं होता। ऐसी परिस्थिति में इस दिव्य यंत्र द्वारा रोगी तुरन्त लाभान्वित हो सकता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४९९२ | ४९९९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ४९९६ | ४९९५ |
| ४९९८ | ४९९३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ४९९४ | ४९९७ |

रवि पुष्य नक्षत्र अथवा किसी भी शुभ नक्षत्र के रविवार या शनिवार के दिन पवित्र होकर भोजपत्र पर इस यंत्र का निर्माण चमेली की कलम और अष्टगंध की स्याही से करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 11 माला जप करें :-

।। ॐ ह्रीं रोगनाशाय रैं ॐ फट्।।

जप समाप्त होने के बाद यंत्र को प्रणाम करें, फिर तांबे के ताबीज में यंत्र को भरकर रोगिणी स्त्री के गले में काले धागे के साथ धारण करावें तो हिस्टीरिया रोग जड़ से समाप्त हो जाता है, आजमा कर देखें।

## "ब्लड प्रेशर" निवारण अचूक यंत्र (ब्लड प्रेशर यों समाप्त करिए न)

वर्तमान युग में ब्लड प्रेशर एक ऐसी बिमारी है, जो अधिकांश लोगों को होती है। इससे निजात पाने के लिए दवाओं का उपयोग तो करते ही हैं, लेकिन ये दवाएँ। स्थाई निदान नहीं दे पाती हैं। स्थाई रूप से छुटकारा पाने के लिए आप यह यंत्र निर्माण व सिद्ध कर धारण करें अथवा पंडित वाई. एन. झा के कार्यालय से सिद्ध किया हुआ यंत्र प्राप्त कर सदैव के लिए ब्लड प्रशैर से मुक्त हो जाएं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४ | 39 | 2 | २८. |
| ७ | 3 | १५ | .१४ |
| ७ | 3 | १५ | १४ |
| 20 | १५ | १६ | १९ |

इस यंत्र को अनार की कलम से भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से रवि पुष्य योग के रविवार के दिन, पवित्र होकर निर्माण करें। धूप-दीप जगाकर पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 5 माला जप 5 दिन करें-

।। ॐ रं रं रूद्रेभ्यो यं यं ॐ।।

पांचवें दिन जप समाप्त होने के बाद एक माला हवन करें। हवन आम की अथवा आक की लकड़ी पर आग जलाकर घी, तिल, जव, गुड़, सफेद व लाल चन्दन का चूरा, गूगल सामग्री से करें।

हवन के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें, फिर तांबे के ताबीज में यंत्र को भरकर, मोम से मुंह में धारण कर लें तो सदैव के लिए ब्लड प्रेशर से मुक्त हो जायेंगे। यह प्रयोग मेरा खास अनुभव है, कितने को यह यंत्र प्रदान किए, ये लाभ उठा रहे हैं।

## सिगरेट छुड़ाने वाला व कैंसर से बचाने वाला अचूक यंत्र

पाठको ! कोई भी व्यक्ति पहले तो सिगरेट शौक से शुरू करता है लेकिन बाद में वह उसकी आदत बन ज़ाती है और फिर तो बहुत मुश्किल हो जाता है उससे धूम्रपान की आदत छुड़ाना।

| | | | |
|---|---|---|---|
| र० | ७९ | ५ | २००२ |
| व० | १००१ | ८२ | ११ |
| फू० | १९९ | ४ | १००३ |
| ग० | ७ | १९८ | ८० |

दिन में कई बार सिगरेट पीना

या परेशानी की अवस्था में सिगरेट फूंकते रहना न सिर्फ उस व्यक्ति के लिए घातक है, बल्कि उस वातावरण में सांस लेने वाले छोटे–छोटे बच्चों तथा अन्य सभी लोगों के लिए भी घातक हैं, मुँह का कैंसर हो जाता है, ह्रदय पर बुरा असर पड़ता है और डाक्टर जब इसे जानलेवा घोषित कर देता है, तो ऐसी स्थिति में सिगरेट छोड़ना उसके लिए बहुत दु:खदायी प्रक्रिया हो जाती है, क्योंकि उसे अपना जीवन एक प्रकार से सिगरेट पर ही आश्रित सा लगता है।

ऐसी परिस्थिति यदि किसी के साथ आयी हो, या सिगरेट छुड़ाने हेतु आम निम्न प्रयोग करें। उपरोक्त यंत्र को सर्वार्थ सिद्धि योग, या उत्तराफाल्गुनी, अथवा मूल नक्षत्र के रविवार को यह यंत्र निर्माण करें। यंत्र निर्माण पवित्र होकर अनार की कलम, अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर करें। तत्पश्चात् धूप–दीप जगाकर जल पूष्प अक्षत, चन्दन आदि से यंत्र का संक्षिप्त पूजन करें।

यंत्र निर्माण दिन से पूर्व ही एक पाव सूखे आंवले को लेकर, उन्हें धोकर साफ कर लें तथा नमक लगाकर धूप में सुखा लें। फिर इस आंवले को यंत्र के पास रखकर निम्न यंत्र से 11 माला मंत्र जप 7 दिन तक करें–

॥ ॐ जौं जौं ह्रौं ह्रौं ॐ फट्॥

सातवें दिन जप पूर्ण होने के बाद जब भी सिगरेंट पीने की इच्छा हो तो आंवले का एक टुकड़ा मुंह में रख लें और मन ही मन इस यंत्र का 11 बार उच्चारण कर लें।

सातवें दिन जप पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम कर, तांबे के ताबीज में भरकर गले में धारण कर लें।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों द्वारा आप सिगरेट पीना छोड़ देंगे और कैंसर रोग से सदैव के लिए आपका बचाव हो जाएगा।

## "हार्ट अटैक" हरण यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| ऐं | ह्रीं | क्लीं |
| श्रीं | रोगी का नाम | श्रीं |
| ह्रीं | श्रीं | क्रीं |

"हार्ट अटैक" एक भयानक जानलेवा बिमारी है। डाक्टरों का मानना है कि जिसे यह दौरा तीन बार पड़ता है, तो तीसरी बार उसे कोई इलाज नहीं बचा सकता, उसका प्राणांत निश्चित है। परन्तु तंत्र शास्त्र में इस भयानक रोग का इलाज यंत्र के द्वारा अत्यन्त ही लाभप्रद है और इस यंत्र के धारण करने से कई व्यक्तियों को लाभ पहुंच रहा है, मैंने कई दु:खी व्यक्तियों को सिद्ध करके यह यंत्र प्रदान किए हैं, जिससे वे बिल्कुल निरोग हो गए हैं, आप भी प्रयोग करके लाभ उठावें।

### *यंत्र निर्माण व साधना विधि*

उपरोक्त यंत्र राज का निर्माण रवि पुष्य नक्षत्र के रविवार,

ग्रहण, दिवाली व होली की रात में चमेली की कलम या अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर करें। यंत्र की निर्माण करने के पश्चात् यंत्र राज का पंचोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् स्फटिक की माला से निम्न मंत्र का 5-5 माला 11 दिन जप करें-

।। ॐ ह्रीं रोग नाशाय रैं ॐ फट्।।

ग्यारहवें दिन जप समाप्त होने के बाद उपरोक्त मंत्र से 1 माला हवन करें। हवन करते समय मंत्र के अन्त में स्वाहा शब्द का उच्चारण अवश्य करें। हवन आक व धथूरे की लकड़ी पर आग जलाकर, घी, जव, तिल, गुड़ व शहद से करें, फिर चांदी के ताबीज में भरकर, ताबीज के मुख को मोम से बंद कर, काले धागे में गले में धारण करें, तो "हार्ट अटैक" कभी नहीं होगा।

## पीलिया रोग निवारकर यंत्र

इस यंत्र राज को अनार की कलम, अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर करें। यंत्र निर्माण किसी भी रविवार के दिन, पवित्र होंकर करें, तत्पश्चात् यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। इसके बाद 11 माला निम्न मंत्र का जप करें :-

।। ॐ ह्रीं क्रीं पीलिया क्षोभं नाशाय ॐ फट्।।

जप समाप्त होने के बाद यंत्र को प्रणाम कर, तांबे के ताबीज में भरकर, काले धागे के साथ रोगी के गले में धारण कराने से पीलिया रोग जड़ से मिट जाता है।

| १६ | १६ | १६ |
|---|---|---|
| | रोगी का नाम | |
| ह्राँ | ह्राँ | ह्राँ |

## चर्म रोग नाशक यंत्र

इस यंत्र राज को अष्टगंध व अनार की कलम से भोजपत्र पर निर्माण, रविवार के दिन करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 11 माला जप करें-

।। ॐ तेजस्काय भास्कराय चर्म कष्ट विनाशाय ॐ नमः फट्।।

मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम कर, तांबे के ताबीज में भरकर रोगी के गले में अथवा बाजू (दाहिने) में धारण करावें, तो चर्म रोग जड़ से मिट जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १६ | २३ | २ | ७ |
| ६ | ३ | २० | १९ |
| २२ | १७ | ८ | १ |
| ४ | ५ | १८ | २१ |

## "काम" नाशक दिव्य यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७५ | ८२ | २ | ८ |
| ७ | ३ | ७९ | ७८ |
| ८१ | ७६ | ९ | १ |
| ४ | ६ | ७७ | ८० |

"काम" यदि इन्सान की मजबूती है तो यह एक कमजोरी भी है। "कामदेव" की तीव्र प्रभाव के कारण लोग अपनों के साथ ही बलात्कार आदि करने से नही चूकते, अक्सर अखबारों की सुर्खियों पर ऐसी खबरें नित्य ही प्रकाशित होती रहती हैं। "काम" मानव को साधना में भी लीन नहीं होने देता अपितु अधिकतर साधक लम्बी साधना ब्रह्मचर्य पालन कर सम्पन्न नहीं कर पाते। अतः अधिक "काम वेग" का होना भी मानव के लिए अति हानिकारक व लज्जाजनक है।

ऐसी परिस्थिति में उपरोक्त यंत्रराज को सिद्ध करके गले में धारण करने से कामवेग बिल्कुल शान्त हो जाता है।

### यंत्र साधना विधि

यह यंत्र पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से निर्माण करें। यंत्र निर्माण करने के पश्चात् निम्न मंत्र का 11 माला जप करें।

"ॐ श्रीं ह्रीं काम नाशाय फट् स्वाहा"

जप पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें फिर तांबे के तांबीज में भरकर गले में काले धागे के साथ व्यक्ति को धारण कराने से "काम वेग" शान्त हो जाता है।

## स्त्री के स्तनों में दूध वृद्धि कराने वाला चमत्कारी यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| १४ | ११ | १६ |
| १३ | १५ | १७ |
| १४ | १० | १२ |

सन्तान के लिए माता का दूध अमृत होता है। माँ के दूध के अभाव में बच्चा जीवन भर कमजोर रह जाता है, क्योंकि बच्चों के पोषण तत्व जो माँ के दूध में उपलब्ध है वह तत्व अन्य किसी चीज में नहीं। जिस स्त्री के स्तनों का दूध सूख गया हो या किसी कारण कम हो

गया हो तो उपरोक्त यंत्र को चमेली की कलम व जाफरान की स्याही से भोजपत्र पर पुष्य नक्षत्र अथवा सर्वार्थ सिद्धि योग में निर्माण करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र से 11 माला जप करें। जप में रूद्राक्ष की माला प्रयोग करें।

**मंत्र जप :— "ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं मम दुग्ध वृद्धि करस्य नमः स्वाहा"**

मंत्र जप समाप्त होने के बाद यंत्र को नमस्कार करें, फिर चांदी के ताबीज में भरकर स्त्री के गले में धारण कर दे तो दूध में पूर्ण वृद्धि होती है, परिणाम स्वरूप बच्चे को बाहरी दूध पिलाने की कोई आवश्यकता नहीं होती और बच्चा भविष्य में बलिष्ट व भाग्यशाली होता है।

## शिशु का अधिक रोना बन्द कराने वाला दिव्य यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | २२ | १३ | ८ |
| १७ | २९ | ६१ | ३२ |
| १७ | १३९ | ७१ | १२३ |
| २ | ९ | ९ | १२ |

अबोध शिशु कभी–कभी बहुत रोने लगता है, जिसका कोई इलाज नहीं। ऐसी परिस्थिति में निम्न यंत्र का उपयोग, अति लाभकारी सिद्ध हो रहा है। यह यंत्र अनार की कलम, ज़ाफरान की स्याही से भोजपत्र पर निर्माण करें। यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 5 माला जप करें :—

**"ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं मम सन्तान क्रन्दन कवटं हरण कुरू कुरू स्वाहा।"**

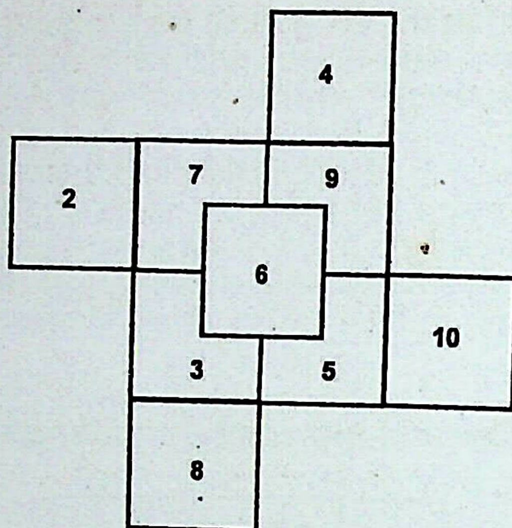
जप समाप्त होने के बाद यंत्र को प्रणाम करें, फिर तांबे के ताबीज में यंत्र को भरकर, शिशु के गले में काले धागे के साथ धारण करा दें तो शिशु का अनावश्यक अति रोना बन्द हो जाता है और बच्चा फूल की तरह खिल उठता है।

## दमा व खांसी रोग नाशक यंत्र

इस यंत्र राज को रवि पुष्य योग अथा रोहिणी नक्षत्र के सोमवार के दिन निर्माण करें।

यन्त्र निर्माण सफेद चन्दन की स्याही तुलसी अथवा अनार की कलम से भोजपत्र पर करें।

यंत्र निर्माण करने के पश्चात् पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का ग्यारह हज़ार जप ग्यारह दिन में सम्पन्न करें, अर्थात नित्य एक हजार मंत्र जप करें। जप में रूद्राक्ष की माला का प्रयोग करें।




जप ग्यारहवें दिन जब समाप्त हो जाय तो आक की लकड़ी पर आग जलाकर एक माला हवन करें। हवन में घी, जव, तिल, गुड़, सफेद चन्दन का चूरा मिलाकर आहुति दें।

**जप का मंत्र—"ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः"**

हवन के समय मंत्र के अन्त में स्वाहा शब्द का प्रयोग करें। हवन समाप्ति के बाद यंत्र को चांदी की ताबीज में भरकर रोगी को धारण कराएँ तो दमा व खांसी रोग जड़ से मिट जाता है। यंत्र काले धागे के साथ गले में धारण करना चाहिए।

# विभिन्न प्रकार की कामना पूर्ति यन्त्र खण्ड

## राज्य बाधा निवारण यंत्र (मुकदमे में जीत हेतु)

यदि कोई व्यक्ति मुकदमें में फंस जाए, तो उसका हंसता-खेलता जीवन बर्बाद हो जाता है। कोर्ट कचहरी के चक्कर में इन्सान मृत प्राय हो जाता है, जीवन छलनी-छलनी हो जाता है और ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि व्यक्ति जीवन को समाप्त कर देने की सोचने लग जाता है। परिश्रम से इकट्ठा की गई जमा पूंजी पानी की तरह बहने लगती है।

आपको न्याय मिल सके, मुकदमें में सफलता प्राप्त हो सके, तथा उलझन से आपको छुटकारा मिल सके, इसी दृष्टि से इस यंत्र का निर्माण विधि बता रहा हूं जो अचूक है।

ह्रीं ॐ
ॐ ह्रीं

| | | |
|---|---|---|
| ॐ ऐं | ह्रीं | क्लीं |
| चा | मुं | डा |
| ये | वि | च्चे |

ह्रीं ॐ
ॐ ह्रीं

### यंत्र निर्माण

इस यंत्रराज को किसी भी सोमवार के दिन, अनार की कलम व रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करें। यंत्र निर्माण के पश्चात् धूप-दीप जगाकर यंत्र का पंचोपचार पूजन करें, तत्पश्चात् रूद्राक्ष की माला से 5 माला निम्न मंत्र का जप करें-

"ॐ ह्रीं क्लीं क्रीं श्रीं मम कार्य पूर्ण कुरू-कुरू स्वाहा"

जप समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को नमस्कार करें तथा पूजा स्थल पर मुख दें। जब अदालत में जाए तो यंत्र को दाहिने जेब में साथ ले जाएं तो मुकदमे में अवश्य जीत होगी, यह मेरा अपना सिद्ध अनुभव है।

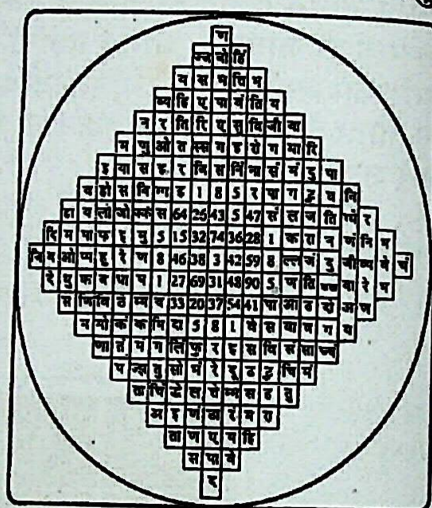
# यंत्र-तंत्र सार के अद्वितीय दुर्लभ यंत्र प्रयोग

## समस्त इच्छा पूर्ति "वांछा कल्प लता यंत्र"

**(नौकरी, पदोन्नति, विवाह, व्यापार आदि समस्त कार्यों में सफलता हेतु)**

वांछा शब्द का तात्पर्य है, मनुष्य की इच्छा, अभिलाषा और कामना।'' कल्प लता'' शब्द का मतलब है–''कल्प वृक्ष जैसे महत्वपूर्ण दैवी वृक्ष से''। इसका तात्पर्य यह है, कि यह यन्त्रराज कल्प वृक्ष के समान साधना करने वाले की सभी प्रकार की भावनावों को पूर्ण करने की सामर्थ्य एवं शक्ति रखता है–

तांत्रिक ग्रन्थों में इसके बारे में बताया गया है।



वांछा कल्पलता न होमो न च तर्पणम।
यन्त्र रचणं स्मरण देव सिद्धि स्यात यदिच्छति हि तद् भवेत्।।
दशावृत्या तथा विष्णु रूद्र शक्ति र्भवेदिह।
सार्व भौमः शतावृत्या भवत्येव न संशयः।।

अर्थात – यह वांछा कल्पलता साधना विश्व की दुर्लभ व सरल साधना है। इसके प्रयोग में होम या तर्षण करने की जरूरत नहीं होती। केवल इस यंत्रराज का निर्माण, मंत्र जप से ही श्रेष्ठ साधक की प्रत्येक इच्छा पूरी हो जाती है।

## साधना व यंत्र निर्माण विधि

इस यंत्रराज का निर्माण किसी भी दिन लाल चन्दन की स्याही से अथवा लाल रंग की स्याही से अनार की कलम द्वारा कागज़ पर करें, अथवा भोजपत्र पर करें।

यंत्र निर्माण करने से पूर्व आम लकड़ी के सिंहासन पर गुरू से प्राप्त किया हुआ–''श्री गणेश सिद्ध यंत्र'' को तांबे के प्लेट में रखें। सिंहासन पर लाल वस्त्र पहले बिछावें तब यंत्र का प्लेट रखें। तत्पश्चात् धूप–दीप जगावें। गुरू यंत्र पर पुष्प चढ़ावें। इसके पश्चात् स्वयं यंत्र निर्माण कर, गुरू यंत्र वाले प्लेट में रख दें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का जप। माला करें। जप 16 दिन तक रोज एक माला किया करें।

## यंत्र सिद्धि हेतु मंत्र

''श्रीं श्रीं श्रीं, ह्रीं ह्रीं ह्रीं, क्लीं क्लीं क्लीं, ऐं ऐं ऐं सौः सौः सौः, ॐ

ॐ ॐ, हं हं हं, कं कं कं, लं लं लं, क्रीं क्रीं क्रीं प्रसीद प्रसीद, मम मनो ईप्सित कुरू–कुरू नमः।।''

सोलहें दिन यंत्र पूजन जप समाप्त होने के बाद या तो पूजन स्थल पर रखकर ही यंत्र को नित्य धूप–दीप दिखावें अथवा चांदी या स्वर्ण ताबीज में भरकर लाल धागे के साथ गले में धारण कर लें।

यह यंत्र स्वयं सिद्ध करें, अथवा पंडित वाई. एन. झा ''तूफान'' के कार्यालय से सिद्ध यंत्र प्राप्त कर गले में लाल धागे के साथ धारण कर लें, कोई पूजा–पाठ की आवश्यकता नहीं।

## ''वांछा कल्पलता सिद्ध यंत्र'' धारण करने से निम्नलिखित सफलताएँ मिलती है

1. यंत्र राज को गले में धारण कर किसी से भी मिलने जांए, और कोई भी कार्य कहें, तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

2. जिस लड़के–लड़की के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, उसे यह यंत्र धारण करने से तीन महीने के अन्दर विवाह हो जाता है और दाम्पत्य जीवन सदैव सुखी रहता है।

3. यदि यह यंत्रराज को धारण कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें, अथवा प्रमोशन, स्थान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करनें की बात कहें, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

4. यदि यंत्रराज को जल से धोकर, वह जल किसी को भी पिला देंगे तो वह आपके वश में हो जायेगा। (या हो जायेगी) यह अनुभूत प्रयोग है, तुरन्त इसका प्रभाव होता है।

5. यह दिव्य यंत्र धारण करने से दुकान या फैक्ट्री अथवा घर के ऊपर किए गये तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है और व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है।

6. यदि यंत्र धोकर जल रोगी को पिलाया जाय तो वह रोग मुक्त हो जाता है।

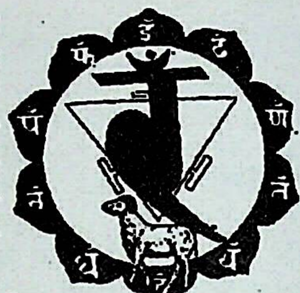
7. इस दिव्य यंत्र को धोकर, धोए हुए जल में 101 काली मिर्च डालकर शत्रु के घर–आँगन में उढेल दिया जाय, या जमीन में गाड़ दिया जाय तो उसका विनाश हो जाता है।

8. यदि इस यंत्र को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलाई जाय तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और पुत्र ही होता है।

पाठको ! मैंने इस यंत्र के प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आज़माया है, कितने दुःखी व्यक्ति को यह यंत्र सिद्ध करके दिया हूं, इस कलियुग में भी–यह दिव्य महान यंत्रराज का प्रभाव देखकर मैं दंग रह गया हूं।

## यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना में निश्चित सिद्धि दिलाने वाला चमत्कारी यंत्र

व्यक्ति जब साधना पथ पर शुरू–शुरू में कदम रखता है, तो



उसे सफलता प्रथम प्रयास में न मिल पाना कोई आश्चर्य वाली बात नहीं है। सम्भव है कि अनुभवी न होने के कारण, साधना विधि में त्रुटि, यंत्र निर्माण में त्रुटि तथा मंत्र उच्चारण में अशुद्धि हो सकती है और इस तरह अपेक्षित फल प्राप्त नहीं हो पाता। लेकिन अनुभवी हो जाने पर भी यदि साधक को यंत्र–मंत्र साधना में आंशिक रूप से भी सफलता प्राप्त नहीं होती, तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि साधक का अपने मन पर नियंत्रण नहीं है। बिना मन को एकाग्र किए यंत्र–मंत्र साधना में सफलता संदिग्ध ही रहती है।

ऐसी परिस्थिति में आप उपरोक्त ''दिव्य यंत्र राज'' पंडित वाई. एन. झा के कार्यालय से प्राप्त कर, निम्न विधि से यंत्र पूजन का यंत्र–मंत्र–तंत्र साधना में निश्चित सफलता हासिल कर सकते हैं।

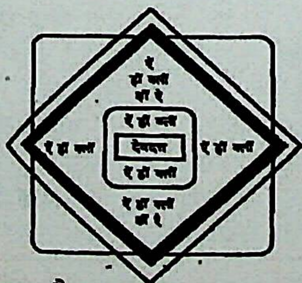
***यंत्र साधना विधि***

इस यंत्र राज की साधना 21 दिनों की है। गुरू से यंत्र प्राप्त कर, सोमवार के दिन प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर, यंत्र तांबे के प्लेट में पूजा स्थल पर रखें और धूप–दीप जगाकर यंत्र को हाथ जोड़कर निम्न मंत्र द्वारा ध्यान करें–

**श्री विद्या ब्रह्म विद्या च व्याप्तं ये सचराचरं।**
**निर्द्धन्द्रा नित्य सन्तुष्टा निर्मोहा निरूपाधिका।।**
**कामेश्वरी मनोऽभिष्ट कामेश्वर स्वरूपमिणी।**
**नमस्तेऽनन्त रूपायै प्रसीद सुप्रसीद में।।**

ध्यान के पश्चात् चाय–नाश्ता आदि ग्रहण करें। 21 दिन यह विधि करें, तथा वैष्णवी भोजन करें। फिर किसी भी यंत्र–मंत्र–तंत्र साधना को आरम्भ करें तो चमत्कारिक सफलता निश्चित मिलती है।

## अद्भुत प्रेमी-प्रेमिका, पत्नी-पति वशीकरण ''हिडिम्बा यंत्र''



प्रेमी–प्रेमिका की बहुत ही अद्भुत दशा होती है, एक बार जब किसी को अपने प्रिय की लगन लग जाती है, तो उसके हृदय में प्रिय अत्यधिक अन्तरंगता के साथ बस जाता है, फिर तो उसे प्रिय के भाव हर समय बांधे रहते हैं। चाहे वह कोई भी कार्य करे, उसे हर क्षण अपने प्रिय की उपस्थिति का मान होता रहता है और प्रेमी सदैव अपनी प्रिय के सानिध्य के दिव्य भावों से आविर्भूत होता रहता है।

प्रेमी जब अपने प्रिय से दूर होता है, तो उसके नेत्रों से स्वतः ही

अश्रुपात होने लगता है और रोने–धोने के अतिरिक्त उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।

ऐसी स्थिति में प्रेमी–प्रेमिका पति–पत्नी आपस में मिलने हेतु, एक दूजे को वश में करने हेतु निम्न यंत्र का प्रयोग अति सफलता दायक साबित हो रहा है। यह दिव्य अनेकों को प्रदान किए और सभी के सभी प्रेम सम्बन्ध में पूर्ण सफल हुए।

### यंत्र निर्माण

इस यंत्र राज का निर्माण गोरोचन की स्याही, चमेली की कलम से भोजपत्र पर करें। यंत्र निर्माण "स्वार्थ सिद्धि योग" के सोमवार दिन करें।

### यंत्र साधना विधि

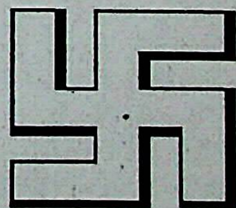
उपरोक्त समय में रात्रि के दस बजे स्नानादि से पवित्र होकर, पूजा स्थल पर यंत्र निर्माण करें। यंत्र निर्माण प्रारम्भ करने से पूर्व धूप–दीप जगावें।

यंत्र निर्माण करने के बाद यंत्र का जल, पुष्प, अक्षत, चन्दन व नैवेद्य से पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का। एक माला जप करें।

ॐ कामोऽनंगः पंचशराः कन्दर्पो मीन केतनः।
श्री विष्णु तनयो देवः प्रसन्नो भवतु प्रभोः।।

मंत्र जप करने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें। ध्यान रहे–यंत्र में जहां "देवदत्त" लिखा है उस स्थान पर प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिखें। तत्पश्चात् चांदी के ताबीज में भरकर लाल डोरे के साथ बाजू में धारण करें। (स्त्री बाँए बाजू में, पुरूष दाहिने बाजू में) यंत्र धारण करने के पश्चात् आपका प्रेमी 7 दिन के अन्दर आपके पास भाग कर आयेगा। (स्त्री आएगी) और आपके अनुसार चलने का वचन देगा और जीवन भर वह आपका साथ नहीं छोड़ेगा। आजमा कर देखें।

## व्यापार में शीघ्र सफलता व ऊँचे शिखर पर पहुंचाने वाला दिव्य यंत्र



क्या आप अपने बिजनेस में सबसे ऊँचे शिखर पर पहुंचना चाहते हैं?

आप हमेशा सोचते रहते हैं, कि मैं जो भी कार्य करूं, उसमें मेरा नाम हो। आपका एक ही सपना है, कि मेरा बिजनेस में अच्छा नाम हो, अपार सम्पत्ति प्राप्त हो, व्यापार दिन दूना रात चौगुना फले, इसलिए आप हमेशा पूर्ण प्रत्यन करते रहते हैं, परन्तु सफलता आपसे कोसों दूर रह जाती है। चिन्ता को त्याग दें और इस यंत्र को सिद्ध कर अथवा सिद्ध किया हुआ यंत्र पंडित वाई. एन. झा कार्यालय से प्राप्त कर अपनी तमन्ना पूर्ण करें।

### यंत्र निर्माण विधि

उपरोक्त यंत्रराज का निर्माण होली, दिवाली, नवरात्रा की अष्टमी, बसंत पंचमी, गणेश चौथ आदि की रात्रि में करें। यंत्र निर्माण अनार की कलम, रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करें।

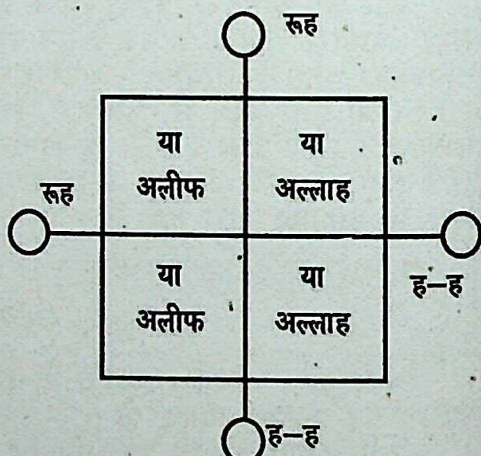
### यंत्र साधना विधि

यंत्र निर्माण करने से पूर्व पूजा स्थल पर एक सिंहासन स्थापित करें, उस पर भगवान श्री गणेश की प्रतिमा या तस्वीर की स्थापना करें। तत्पश्चात् गुरू से प्राप्त किया–"सिद्ध स्वस्तीक यंत्र" तांबे के प्लेट में रखकर तस्वीर के समक्ष रखें। धूप–दीप जगावें। इसके बाद स्वयं यंत्र निर्माण कर, गुरू यंत्र वाले प्लेट में रख दें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र द्वारा रूद्राक्ष की माला से 5 माला जप करें।

"ॐ ह्रीं गं श्रीं पूर्ण साफल्यं ॐ फट् कुरू कुरू नमः"

मंत्र जप समाप्त होनें के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें। स्वयं निर्मित यंत्र को चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर लाल धागे के साथ गले में धारण करें, अथवा बिजनेस प्रतिष्ठान में पवित्र स्थान पर लटका दें तो आपका व्यापार चमक उठेगा, यह प्रयोग करके देखिए, सफलता आपके चरण चूमेगी।

### खोये हुए बालक-बालिका या घर से भागे स्त्री-पुरूष को तुरन्त वापस लाने वाला यंत्र




यदि किसी के लड़का या लड़की खो गया हो अथवा घर में किसी भी कारण बस भाग गया हो तो निम्न यंत्र का प्रयोग कर उसे शीघ्र घर बुला सकते हैं।

इस यंत्रराज को रवि पुष्य नक्षत्र या सर्वार्थ सिद्धि योग के शुक्रवार के दिन केशर की स्याही, अनार की कलम से भोजपत्र पर निर्माण करें। तत्पश्चात् यंत्र को लोहवान की धूनि दिखावें, फिर यंत्र को प्रणाम कर, काले कपड़े में सीकर ताबीज बनावें और उस ताबीज को अनार के वृक्ष में लटका दें तो घर से भागा हुआ सदस्य शीघ्र वापस घर आ जाएगा।

## जुआ लाटरी, घड़ा आदि में धन जीतने का यंत्र

सर्व प्रथम तो हम यही कहेगे कि–जुआ खेलना, लाटरी लगाना

धोर अपराध है। परन्तु फिर भी कितने लोग इस चक्कर में फसकर अपना सर्वस्व गँवा बैठते हैं, कर्जदार हो जाते हैं और ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि कितने लोग आत्म हत्या पर भी उतारू हो जाते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५० | ६७ | २ | ९ |
| ३ | ३ | ६४ | ६५ |
| ६६ | १ | ८ | १ |
| ६ | ५ | ८८ | २५ |

## यंत्र निर्माण व साधना

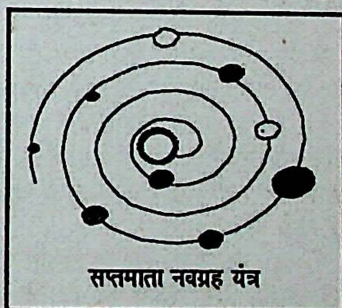
यह यंत्र स्वयं ही सिद्ध है। इस यंत्रराज को दीपावली या होली की रात्रि में, अनार की कलम, अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर करें। तत्पश्चात् यंत्र को धूप दिखाकर नमस्कार करें। फिर यंत्र राज को तांबे के ताबीज में भरकर लाल धागे के साथ गले में धारण कर लें और फिर जुआ खेलने जाएं तो अवश्य पूर्ण धन जीतेंगे, इसमें कोई संसय नहीं। यंत्र धारण करने लाटरी टिकट का नम्बर स्वप्न में प्राप्त होने लगते हैं और व्यक्ति यदि वही न० लगाता है तो लाटरी मैं जीत होती है। आजमा कर देखें, अवश्य सफलता मिलेगी।

# "नवग्रह दोष" निवारक यंत्र खण्ड

(सूर्य ग्रहण के अवसर पर)

## "नवग्रह सप्तमाता यंत्र साधना"

हमारे जीवन में नक्षत्रों–ग्रहों आदि का पूर्ण प्रभाव पड़ता है, इस बात को आज विज्ञान ने भी भली–भांति स्वीकार कर लिया है। इन ग्रहों की चाल गति, आकार के अनुरूप ही मानव जीवन चलता है या उसमें बदलाव आते हैं।


सप्तमाता नवग्रह यंत्र

ऋषियों के फलादेशानुसार स्त्री मन से कोमल और मातृत्व युक्त होने के कारण जल्दी प्रसन्न होती हैं अतः हो सकता है कि प्रतिकूल ग्रह की यंत्र साधना उपासना करने पर भी व्यक्ति को जल्द अनुकूल प्रभाव न प्राप्त हो सके या उसकी छोटी सी त्रुटि से सारी यंत्र साधना ही व्यर्थ चली जाय।

इसलिए अधिक श्रेष्ठ और प्रभावशाली यही होगा, कि प्रतिकूल ग्रह की जगह उसकी माता की यंत्र साधना सम्पन्न की जाय।

हमारे ऋषियों ने हजारों वर्ष पहले ही इस, बात की पुष्टि कर दी थी, जो विज्ञान अभी हाल में ही कह पाया है, कि ग्रंहों का पूर्ण प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है, और उन्हीं के अनुसार ही व्यक्ति के जीवन में शुभ और अशुभ घटनावों का प्रादुर्भाव होता है।

उन्होंने कहा कि कोई भी ग्रह जो व्यक्ति के लिए जन्म समय पर अनुकूल पड़े हों, तो वे अच्छा फल देते हैं,परन्तु जो ग्रह समय समय में प्रतिकूल होते हैं, वे ग्रह ही बाधक या क्रुर संज्ञक कहलाते हैं, और अधिकतर ये ग्रह ही अपनी महादशा या अन्तर्दशा में व्यक्ति को विभिन्न बाधाओं और परेशानियों के बीच में गुजारते हैं। हालांकि जितना प्रतिकूल ग्रह होगा उतने ही अनुपात में व्यक्ति को बाधावों का सामना करना पड़ेगा।


नवग्रह सप्तमाता जी

फिर ऋषियों–महर्षियों ने निम्न बाधाएँ ग्रहों के कोप के कारण या उनके प्रतिकूल महादशा के दौरान उत्पन्न हुई बताई है।

1. व्यक्ति का स्वास्थ्य निरन्तर जाता है, उसका वजन कम हो जाता है, भूख नहीं लगती और उसे विभिन्न रोग आ घेरते हैं। कई प्रकार की चिकित्सा होने पर भी उसे लाभ नहीं होता है।

2. उसे व्यापार में हानि ही हानि झेलनी पड़ती है। धन के श्रोतों में कमी आ जाती है। कमाई से अधिक खर्च होने लगता है और कई बार तो दिवालिया की स्थिति बन जाती है।

3. शत्रुवों का प्रभाव बहुत बढ़ जाता है, एवं वे उस पर बहुत हावी हो जाते हैं। वह भयभीत हो उनसे बचता फिरता है, पर वे उसका पीछा नहीं छोड़ते, और कई बार तो उसके सम्पूर्ण परिवार का सर्वनाश कर देते हैं।

4. व्यक्ति का पारीवारिक जीवन तनाव पूर्ण हो जाता है, उसके बात–बात पर पत्नी से झगड़े होने लगते हैं, कभी कभार तलाक तक की नौबत आ जाती है, या आत्म हत्या तक करनी पड़ती है।

5. पुत्र सुख या सन्तान सुख नहीं होता, और अगर बालक हो भी जाता है, तो या तो अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, या चिर रोगी होता है।

6. उनके बच्चे बड़े होकर उसके कहने में नहीं रहते, मनमानी करने लगते हैं। पुत्र धन का नाश कर देते हैं, शराब–जुआ आदि की आदत में पड़ते हैं, पुत्रियां भी गलत संगत में पड़ जाती हैं।

7. वह जिस किसी काम में हाथ डालता है, उसे नुक्सान ही होता है। कुन्दन भी छूने से मिट्टी बन जाये, वाली कहावत उन पर खूब जंचती है।

8. घर में वर्षों तक कोई मंगल समाचार या मंगलोत्सव नहीं होता, वह घर खण्डहर के समान हो जाता है, और उस व्यक्ति को समाज में भी अपकीर्ति, अपयश, हानि और उलझनों, उलाहनों का सामना करना पड़ता हैं।

9. विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाएँ एवं अकाल मृत्यु का उसके घर में एक प्रकार से स्थायित्व हो जाता है, उसके घर में एक प्रकार से स्थायित्व हो जाता है, कब कौन सी दुघर्टनाएँ हो जायगी, इसी आशंका में वह बेचारा डरा–डरा रहता है। अपने प्रियों को खोकर जीवन ही उसे बोझ समान लगता है।

10. उसका सांसारिक जीवन तो नष्ट होता ही है, साथ ही साथ आध्यात्मिक रूचि भी समाप्त हो जाती है एवं वह एक सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हो जाता है।

नोटः– इस उपरोक्त बाधावों में से अगर कोई एक या अनेक बाधाएँ आपके ऊपर हों, तो यह "ग्रह दोष बाधा या क्रुर ग्रह के ही प्रभाव का लक्षण है।" ऐसे में फिर व्यक्ति इन बाधाओं से बचने के लिए क्या करें ? किस विधि से ग्रहों के कुप्रभावों को शांत कर उनसे शुभ फल प्राप्त करें ?

महर्षियों ने जहां ग्रह बाधा या क्रुर ग्रह की महादशा, अर्न्तदशा में उत्पन्न बाधाओं एवं संकटों के बारे में विवरण दिया है, वहीं उन्होंने विभिन्न उच्च कोटि के प्रयोगों की भी सृष्टि की है, जिनके फलस्वरूप व्यक्ति पूर्ण रूपेण ग्रह दोष एवं बाधा से मुक्त हो सकता है। हमारे शास्त्रों में विभिन्न विधियां प्रचलित हैं, परन्तु उन सब में सबसे अधिक पूजनीय एवं प्रभावशाली है–सप्तग्रह मातावों की यंत्र साधना।

### *ग्रह सप्त माला यंत्र निर्माण विधि*

इस पवित्र "महायंत्र राज" का निर्माण सूर्य ग्रहण के समय ही करें। यह साधना अति सरल साधना है। नवग्रह सप्तमाता स्त्री प्राकृतिक रूप से अधिक दयालू और करूणावन होती हैं और जल्दी प्रसन्न होती हैं। छोटी–मोटी त्रुटियां मातावों की दृष्टि में क्षम्य है।

यंत्र निर्माण अनार की कलम, अष्ट गंध की स्याही द्वारा भोजपत्र पर करें।

### *यंत्र साधना विधान*

तंत्र शास्त्र में सप्तग्रह की मातावों का नाम निम्न रूप से उल्लेखित है –

सूर्य की माता–पिंगला, चन्द्र–मंगला, मंगल–भ्रामरी, बुध–भद्रिका, गुरू–धान्या, शुक्र–सिद्धा और शनिदेव की माता का नाम–माता श्री "उल्का" है।

यह साधना एक दिवसीय है। जब सूर्य ग्रहण आरम्भ हो, तो उसी वक्त यह साधना आरम्भं करें और जब सूर्य ग्रहण समाप्त हो, तो अपनी साधना समाप्त करें। अर्थात इतने समय में ही साधना कार्य पूरी हो जायेगी।

ग्रहण आरम्भ से पूर्व स्नानादि से पवित्र होकर एक आम लकड़ी के सिंहासन पर सफेद वस्त्र विधावें, उस सिंहासन पर गुरू से प्राप्त किया (सिद्ध यंत्र, सिद्धि प्राप्ति हेतु) सिद्ध सप्तमाता (सप्तग्रह माता) यंत्र को तांबे के प्लेट में रखकर, सिंहासन पर स्थापित कर दें।

ग्रहण आरम्भ होते ही, धूप–दीप जगावें, गंगाजल, अक्षत, चन्दन, पुष्प और नेवेद्य यंत्र पर चढ़ावे। फिर हाथ में पुष्प भरकर दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें –

"ॐ पिङ्गलायै नमः। ॐ धान्यै नमः। ॐ मंगालायै नमः। ॐ सिद्धयै नमः। ॐ भ्रमरौं नमः। ॐ उल्कायै नमः। ॐ भद्रिकायै नमः।"

अब हाथ के पुष्प को गुरू यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् सफेद पत्थर या हकीक की माला से निम्न जप आरम्भ करें –

।।"ॐ ऐं क्लीं सौः सप्त मातृकाः सौः कलीं ऐ ॐ फट्"।।

जब ग्रहण समाप्त हो तो जप करना बंद कर दें। अब स्वयं निर्मित यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर ताबीज के मुख को मोम से बन्द कर, सफेद धागे के साथ गले में धारण कर लें। गुरू यंत्र एवं पूजन सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें। बस आपकी सभी समस्याएं हल और जीवन पूर्णोल्लास से भर जायेगा। इसके पश्चात् रविवार के दिन सप्तमाला यंत्र निर्माण कर पंचोपचार पूजन कर, एक माला मंत्र जप से सिद्ध कर, जिसे भी धारण करायेंगे, उसके सभी ग्रह दोष एक साथ ही समाप्त हो जायेगा, आजमा कर देखें। वास्तव में ही यह साधना अचूक एवं प्रामाणिक है, और आज तक इसे असफल होते नहीं देखा गया है। अगर आप पर भी यदि कोई ग्रह की दशा भारी है तो फिर समय गंवाए बगैर आपको यह यंत्र साधना सम्पन्न या गुरू से प्राप्त किया "सिद्ध सप्तमाता यंत्र" मंगवाकर गले में तुरन्त धारण करना ही चाहिए।

## *नवग्रहों की यंत्र साधना में उनके "अधिदेवता का पूजन महा आवश्यक"*

क्या आप जानते है, कि नवग्रह पूजन अथवा नवग्रह यंत्र पूजन के साथ ही उनके "सहयोगी अधिदेवता" का भी पूजन करना चाहिए?

मुख्यतः सभी प्रकार के पूजन में नवग्रहों का स्थापना व पूजन विशेष रूप से सम्पन्न किया जाता है। नवग्रहों की स्थापना का उद्देश्य यही होता है, कि यदि कोई ग्रह पीड़ा पहुंचा रहा है तो अन्य ग्रहों के साथ उस ग्रह का पूजन कर ग्रह शान्ति की जाये।

यदि व्यक्ति के जीवन में निरन्तर कलह बढ़ती ही चली जा रही है, तो ग्रहों का पूजन व यंत्र धारण करना उसके लिए अति उत्तम उपाय होता है। ग्रह शांति कवच बनकर उसका निवारण कर देती है। चित्त की उद्विग्नता हो या फिर कोई शुभ कार्य का आरम्भ हो या फिर कोई विपत्ति अचानक आ जाये, तो ग्रह शांति करना आवश्यक हो जाता है, ऐसा अनेक ग्रन्थों में भी पढ़ने को मिलता है।

नवग्रह शांति तृष्टि तथा पुष्टी दोनों के लिए आवश्यक कर्म है।

नवग्रह हैं – सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति (गुरु), शुक्र, शनि, राहु और केतु। प्रत्येक ग्रह मानव मानव जीवन पर विशेष प्रभाव डालते हैं और यदि कोई ग्रह कुप्रभाव डाल रहा है और उनकी उचित तरीके से "ग्रह शांति" न करवाई जाय तो जीवन में भयंकर उथल–पुथल भी मच जाती है। किसी–किसी ग्रह का कुप्रभाव तो इतना अधिक होता है, कि व्यक्ति राजा से रंक बन जाता है।

इन्हीं ग्रहों से सम्बन्धित होते हैं ग्रहों के "अधिदेवता" अर्थात उनके सहयोगी देवता मुख्य ग्रहों के पूजन के साथ–साथ इन अधिदेवता का पूजन भी विशेष महत्व रखता है। यदि मुख्य ग्रहों के पूजन के समय इन ग्रहों का भी सही ढंग से पूर्ण रूपेण पूजन नहीं होता है तो सफलता की स्थिति कम ही ही देखने में आती है।

इन अधिदेवताओं के पूजन का महत्व मुख्य ग्रहों के पूजन के समान ही बताया गया है। "छान्दोग्योपनिषद्" में एक स्थान पर ग्रहों के पूजन के विषय में विवरण प्राप्त होता है, वहां पर स्पष्ट है कि जिस देवता या देवी का पूजन करना है या यंत्र निर्माण करना है, उनका स्वरूप क्या है ? उनके मण्डल के विभिन्न देवता कौन–कौन से है ? यह जानना आवश्यक है। इसके अनुसार स्पष्ट होता है, कि यदि व्यक्ति अज्ञानता वश किसी देव या देवी का पूजन करता है, तो उसकी ऐच्छिक सफलता संदिग्ध हो जाती है। सिर्फ आधे–अधूरे पूजन से या यंत्र साधना से किसी भी साधक को सफलता नहीं मिल सकती है। अपितु इस प्रकार साधना करने पर आपका समय भी व्यर्थ जाता है और धन भी व्यय होता है तथा आपकी समस्या जहां की तहां रह जाती है। उसका कोई निदान भी नहीं होता है, इसलिए ग्रन्थों में कहा गया है कि सामान्य पूजन भी हो, तो उसे पूर्ण विधि विधान से ही सम्पन्न करना चाहिए अन्यथा उनका प्रभाव व्यर्थ ही जाता है या फिर साधना विधि स्वयं गुरु से प्राप्त हुई हो, तो वह पूजन या यन्त्र साधना सफल होती है।

नवग्रहों के पूजन के साथ ही साथ ग्रहों के अधिदेवता का पूजन भी आवश्यक है। अतः इन नवग्रहों के अधिदेवता का विवरण व पूजन विधि, नवग्रह यंत्र के साथ प्रस्तुत कर रहा हूं।

## सूर्य ग्रह अनिष्ट निवारक यंत्र

इस यंत्र राज का निर्माण – अष्टगंध की स्याही, मोर पंख की कलम द्वारा कागज पर करना चाहिए। यंत्र निर्माण रोहिणी नक्षत्र के रविवार के दिन, प्रातःकाल स्नानादि से पवित्र होकर, घर के पूजा स्थल पर बैठकर करें। कुशा के आसन का प्रयोग करें। यंत्र निर्माण से पूर्व धूप व दीप जगावें, तत्पश्चात् पूर्व मुख होकर अर्थात

| | | |
|---|---|---|
| ६ | १ | ८ |
| ७ | ५ | ३ |
| २ | २ | ४ |

पूरब दिशा की और बैठे और हाथ जोड़कर सूर्य देव की निम्न मंत्र से अराधना करें –

।। ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं—मार्त्य च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन ॐ।।

## सूर्य के अधिदेवता "ईश्वर" का ध्यान मंत्र

प्रथम ग्रह "सूर्य" के अधिदेवता अर्थात सहयोगी देवता स्वयं "ईश्वर" को माना गया है। भगवान शिव के विशेष स्वरूप को "ईश्वर" कहते हैं। वेदों में इन्हें विशुद्ध ज्ञान स्वरूप बताया गया है। ये अपने भक्तों को अतुलनीय ऐश्वर्य प्रदान करने वाले, अनन्त राशियों के स्वामी हैं।

इनका ध्यान् निम्न मंत्र पढ़ते हुए, हाथ जोड़कर करें –

सर्वानन शिरोग्रीवः सर्वभूत गुहाशयः।
सर्व व्यापि स भगवास्तस्मात सर्वगतः शिवः।।

अब रूद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का जप ग्यारह माला करें –

।। ॐ हां ह्रीं हौं सः सूर्याय नमः।।

मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें, तत्पश्चात् स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भरकर लाल धागे के साथ, यंत्र गले में धारण करें तो सूर्य ग्रह दोष से मुक्त होकर, सुखी जीवन बितायेंगे।

## चन्द्र ग्रह अनिष्ट निवारक यंत्र

चन्द्र ग्रह यंत्र राज का निर्माण अष्टगंध की स्याही, अनार की कलम द्वारा भोंजपत्र पर करें। यह निर्माण रोहिणी नक्षत्र के सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि से पवित्र होकर करें। यंत्र निर्माण से पूर्व पूजन स्थल पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके सफेद आसन पर बैठे। धूप दीप जगावें यंत्र निर्माण तब करें। यंत्र निर्माण करने के पश्चात् यंत्र का "पंचोपचार पूजन" करें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर निम्न मंत्र द्वारा चन्द्रमा का ध्यान करें –

| | | |
|---|---|---|
| ७ | २ | ९ |
| ८ | ६ | ४ |
| ३ | १० | ५ |

ॐ इमं देवाऽसपत्नं Ω सुवर्ध्वन् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्जयायेन्द्र स्येन्द्राय इमम मुष्य पुत्रमभुस्यै मध्यै विश—एषं—वोऽमि राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजासोमाय ॐ।।

## चन्द्र के सहयोगी देवता - "भगवति उमा" का ध्यान

"भगवती उमा" द्वितीय ग्रह चन्द्र (ग्रह) की "अधिदेवता" मानी गई हैं। उमा को "परा शक्ति" कहा गया है। उमा पार्वती का ही स्वरूप है। ऋषि श्रेष्ठ ने भगवती उमा का ध्यान शास्त्रों में इस मंत्र से करने को कहा हैं –

मंत्र – अक्ष सूत्रं च कमलं दर्पणं च कमण्डलुम।
उमा विभर्ति हस्तेषु पूजिताः त्रिदशैरपि।।

अब रूद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का जप ग्यारह माला करें –

"ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।।"

मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर, सफेद धागे के साथ गले में धारण करें, तो चन्द्र ग्रह का अनिष्ट दूर हो जायेगा और आपका जीवन धन्य हो जायेगा। आजमा कर देखें – कई व्यक्तियों को "नवग्रह यंत्र" स्वयं सिद्ध करके दिया हूं, जो सफल जीवन व्यतीत कर रहे है।

### *मंगल ग्रह अनिष्ट निवारक यंत्र*

| | | |
|---|---|---|
| ८ | ३ | १० |
| ९ | ७ | ५ |
| ४ | ११ | ६ |

इस यंत्र राज का निर्माण अनुराधा नक्षत्र के मंगलवार के दिन करें। यंत्र निर्माण रक्त चन्दन की स्याही, अनार की कलम से भोजपत्र पर करें।

उपरोक्त दिन प्रातःकाल स्नानादि से पवित्र होकर पूजन स्थल पर, लाल आसन बिछाकर, पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे। धूप–दीप जगावें, तत्पश्चात् यंत्र का निर्माण करें, यंत्र निर्माण के बाद आम लकड़ी के पीढ़ाकार तख्ते पर लाल आसन बिछाकर तांबे के प्लेट में रखें। गंगाजल, अक्षत (चावल) चन्दन, पुष्प (लाल पुष्प) व नैवेद्य (मिठाई फल आदि) से पंचोपचार पूजन करें अथवा सभी वस्तुओं को यंत्र के समीप अर्पण करें। अब मंगल ग्रह का हाथ जोड़कर ध्यान करें–

### *मंगल ध्यान मंत्र*

ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम।
अपा Ω रेता Ω सिजिन्वति ॐ भौमाय ॐ।।

अब मंगल के अधिदेवता "स्कन्ध देवता" का ध्यान करें –

### *मंगल के सहयोगी - "स्कन्ध देवता" का ध्यान मंत्र*

मंगल ग्रह के अदिदेवता "स्कन्ध कुमार" हैं। ये भगवान शिव के अंश तथा माता पार्वती के ही एक स्वरूप "स्वाहा देवी" के पुत्र हैं। इसी से इन्हें स्कन्ध कुमार कहते हैं। इनके स्वरूप का ध्यान वर्णन इस प्रकार है –

कुमारः षन्मुखः कार्य शिखिखण्ड विभूषणः।
रक्ताम्बरधरौ देवो मयूरवर वाहनः।।
कुक्कुटश्य तथा घण्टा तस्य दक्षिण हस्तयोः।
पताका वैजयन्ती स्वाच्छक्ति कार्या च वामयोः।।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का 11 माला जप करें – (जप में मूगा या रूद्राक्ष की माला का प्रयोग करें।

मंगल यंत्र साधना जप मंत्र –

"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।।"

जप समाप्ति के बाद यंत्र को प्रणाम कर तांबे के ताबीज में भर

कर, लाल धागे के साथ गले में धारण करें, तो मंगल ग्रह के सभी अनिष्टों का शमन हो जाता है।

### बुध ग्रह अनिष्ट निवारक यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| २ | ४ | ११ |
| १० | ८ | ६ |
| ५ | १२ | ७ |

इस यंत्र राज का निर्माण उत्तरा फाल्गुणी नक्षत्र के बुधवार के दिन, अनार की कलम, अष्टगंध की स्याही से भोजनपत्र पर करें। उपरोक्त दिन प्रातःकाल स्नानादि से पवित्र होकर, पूजन स्थल पर, कम्बल के आसन पर बैठें। आम लकड़ी के तख्त (छोटी पीढ़ा) पर एक हरे रंग का वस्त्र बिछावें। धूप–दीप जगावें। तत्पश्चात् यंत्र निर्माण कर तांबे के प्लेट में तख्त सिंहासन पर स्थापित करें।

इसके बाद यंत्र का पंचोपचार पूजन करें। पूजन समाप्त होने के बाद निम्न मंत्र द्वारा बुध का ध्यान करें।

### बुध ध्यान मंत्र

"ॐ उद्बध्यस्वारने प्रतिज्ञा गृहित्वामिष्ठापूर्ते सः Ω सृजेक्षमार्थ च। अस्मिन् धस्थे अध्युत्तर स्मिन विश्वेदेवा बुधाय ॐ।।"

अब बुध के अधिपति देवता का ध्यान करें –

### बुध के सहयोगी "भगवान विष्णु" का ध्यान मंत्र

भगवान विष्णु को बुध ग्रह का अधिदेवता माना गया है। पुराणों में विष्णु को सभी देवतावों में श्रेष्ठ माना जाता है। सृष्टि के संचालक त्रिदेवों में से एक देवता हैं। विष्णु को पालन कर्त्ता माना गया है। इनका ध्यान निम्न मंत्र से करें –

यस्तं विश्वमनायान्तमाद्यं स्वात्मनि संस्थितम्।
सर्वज्ञमगत्वं विष्णुः सदा ध्यानाद् विमुच्यते।।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का रूद्राक्ष की माला से 11 माला जप करे –

"ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सौः सः बुधाय नमः"

मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र राज को प्रणाम करें, तत्पश्चात् यंत्र को तांबे के ताबीज में भरकर हरे धागे के साथ गले में धारण कर लें, तो बुध ग्रह के समस्त अनिष्टों का विनाश,हो जाता है और साधक का जीवन अति सुखद व्यतीत होता है।

### वृहस्पति (गुरू) ग्रह अनिष्ट निवारक यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| १० | ५ | १२ |
| ११ | ९ | ७ |
| ६ | १३ | ८ |

देव गुरू वृहस्पति यंत्र राज का निर्माण भरणी नक्षत्र के गुरूवार के दिन, गोरोचन की स्याही, अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर करें।

उपरोक्त दिन स्नानादि से पवित्र होकर पूजन स्थल पर, पीले आसन पर, पूर्व दिशा

की ओर मुख करके बैठे। आम लकड़ी के तख्त अथवा सिंहासन पर पीले वस्त्र का आसन बिछावें। धूप–दीप जगावें, तत्पश्चात् यंत्र राज का निर्माण करें। यंत्र निर्माण कर तांबे या पीतल के प्लेट में यंत्र को रखकर, सिंहासन पर स्थापित करें, पुष्प, जल, अक्षत, चन्दन, नैवेद्य (मिठाई, फल वगैरह) यंत्र के पास समर्पित करें तत्पश्चात् निम्न मंत्र से "गुरू ग्रह" का ध्यान करें –

### वृहस्पति ध्यान मंत्र

ॐ बृहस्पतये अतियदर्या अर्हाद्युमद्विभति क्रतुमज्जनेषु। यदूदीदयच्छ वस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम ॐ बृहस्पतये ॐ।।

अब बृहस्पति के अधिदेवता का ध्यान करें –

### वृहस्पति के सहयोगी "ब्रह्मा" का ध्यान मंत्र

श्री "ब्रह्मा" बृहस्पति ग्रह के अधिदेवता हैं। त्रिदेवों में से एक, इनके हाथों सृष्टि ब्रह्माण्ड का निर्माण होता है। ये भगवान विष्णु के नाभि कमल से उत्पन्न हुए हैं। इनके मुख से निरन्तर चारों वेद उच्चारित होते रहते हैं। इनका ध्यान निम्न मंत्र से करें –

चतुर्मुखं चतुर्बाहुं चतुर्वेदचुतं विभु।
चर्तुदशांश्च लोकांन च रचयन्तं प्रणमाम्यहम्॥

अब रूद्राक्ष की माला से 11 माला निम्न मंत्र का जप करें –

### बृहस्पति यंत्र साधना मंत्र

"ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः गुरूवे नमः।।"

जप पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करें। फिर तांबे के ताबीज में यंत्र को भरकर, पीले धागे के साथ गले में धारण करें, तो वृहस्पति ग्रह की सभी बाधाएं शुभता में बदल जाती है, और साधक सम्पूर्ण सफलता हासिल कर लेता है। आजमा कर देखें, जीवन सफल हो जायेगा।

### शुक्र ग्रह अनिष्ट निवारण यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| ११ | ६ | १३ |
| १२ | १० | ८ |
| ७ | १४ | ९ |

इस यंत्र राज का निर्माण मृर्गाशिरा नक्षत्र के शुक्रवार के दिन अनार की कलम अष्टगंध की स्याही से भोजपत्र पर करें। प्रातःकाल स्नानादि से पवित्र होकर, पूजास्थल पर, पूर्व मुख होकर बैठे, आम के पीढ़ा या सिंहासन पर पीला वस्त्र बिछाकर रखे तत्पश्चात् यंत्र निर्माण करें। यंत्र निर्माण से पूर्व धूप–दीप अवश्य जगावें। निर्मित यंत्र को तांबे के प्लेट में सिंहासन पर रखें। तत्पश्चात् जल अक्षत, पुष्प, चन्दन व नैवेद्य से शुक्र यंत्र का पूजन करे, फिर दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र द्वारा शुक्र का ध्यान करें–

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापति ऋतेन सत्यमिन्द्रयं विपानं शुक्रमन्थस ऽ इन्द्रयेन्द्रियमिदं पयोमृते मधु शुक्राय ॐ।।

अब शुक्र के अधि देवता का ध्यान करें –

**शुक्र के सहयोगी "इन्द्र देवता" का ध्यान**

चतुर्मुखं चतुर्वाहुं चतुर्वेदयुत विभुं।
चतुर्दशांश्च लोकान् व रचयन्तं प्रणमाम्यहम्।।

अब रूद्राक्ष की माला से 11 माला निम्न मंत्र का जप करे –

"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः"।।

मंत्र जप के पश्चात् यंत्रराज को प्रणाम करें, तत्पश्चात् तांबे के ताबीज में यंत्र को भरकर काले धागे के साथ गले में धारण कर लें, तो शुक्र ग्रह के समस्त अनिष्टों से छुटकारा मिल जायेगा और जीवन सुखमय हो जायेगा।

## सर्व दुःख नाशक सफलतादायक

## शनि यंत्र

**शनिदेव की विशेषता**

समस्त ग्रहों में शनिदेव ही ऐसे ग्रह हैं, जो अत्यन्त क्रोधी होते हुए भी अत्यन्त दयालु कहे गये हैं। इनके विषय में कहा गया है, कि "जब ये किसी पर क्रोधित होते हैं, तो उसका सर्वनाश कर डालते हैं। इसी प्रकार जब ये किसी से प्रसन्न होते हैं, तो रंक को भी राजा बना देते हैं।"

पूर्वकाल के महर्षियों द्वारा रचित वेदों, ग्रन्थों व पुराणों में "शनि" को सूर्यपुत्र, यम का भाई, अपने भक्तों को अभय देने वाला, समस्त विघ्नों को नष्ट करने वाला एवं सम्पूर्ण सिद्धियों का दाता कहा गया है। जबकि ज्योतिष की दृष्टि में शनि एक "क्रूर ग्रह" है। कहा गया है कि यह क्रुर ग्रह एक ही पल में राजा को रंक बना देता है।

अतः जब बात आती है शनि की तो मानव को भयभीत एवं चिन्तित होना स्वभाविक होता है। जिस पर इसकी अनिष्ट दृष्टि पड़ती है, उस पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है।

जब सृष्टि की रचना आरम्भ हुई, तो सृष्टि रचना का कार्यभार ब्रह्मा ने संभाला, विष्णु ने जीवों का पालन एवं उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व लिया और भगवान शंकर को आवश्यकता पड़ने पर सृष्टि का संहार एवं दुष्टजनों के विनाश का कार्य सौंपा गया।

अपने भक्तों की रक्षा एवं पतितों को उनके पापों का दण्ड देने के लिए शिव जी ने अपने गणों की उत्पत्ति की। सूर्य पुत्र यम एवं शनि को भी उनके गणों में सम्मिलित किया गया।

शनि अत्यन्त पराक्रमी होने के साथ उदंड भी थे, तोड़–फोड़, मार–काट एवं विनाशकारी कार्यों में इनकी आरम्भ में ही रूचि थी। यह देखकर शिव जी ने यम को तो मृत्यु का देवता बनाया और शनि को दुष्टजनों को उनके पापों का दण्ड देने का कार्य सौंपा। शनि भगवान शंकर के शिष्य, सूर्य के पुत्र तथा यम के भाई हैं।

शनि सर्वदा प्रभु भक्तों को अभयदान देते हैं और उनकी हर प्रकार की रक्षा करते हैं। शनि समस्त सिद्धियों के दाता हैं। साधना उपासना द्वारा सहज ही प्रसन्न होते हैं।

परन्तु क्रूर दृष्टि में शनिदेव समस्त ग्रहों में महाशक्तिशाली और घातक हैं। कहते हैं कि ''सांप का काटा और शनि का मारा पानी नहीं मांगता।'' जब शनि का क्रूर प्रभाव पड़ा, तो कृष्ण को द्वारिका में शरण लेनी पड़ी भीलों के देश में और श्री राम को, जिनका राजतिलक होने वाला था, सब छोड़कर नंगे पांव वन में दर–दर भटकने को विवश होना पड़ा।

''ब्रह्मवैवर्त पुराण'' में यह वर्णन मिलता है, कि जब माता पार्वती के गर्भ से भगवान गणपति ने जन्म लिया, तो नवजात शिशु को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए समस्त देवी–देवता, ग्रह, नक्षत्र, यक्ष–गन्धर्व आदि उंपस्थित हुए तथा एक–एक कर सभी ने गणपति को अपने सामर्थ्य अनुसार तेजस्विता प्रदान की।

इस क्रम में माता पार्वती का ध्यान ''शनिदेव'' पर गया, जो कि एक किनारे चुपचाप सिर झुकाए खड़े थे। थोड़ी देर तक माता पार्वती इस बात को देखती रही, किन्तु उनकी समझ में न आया, कि शनिदेव आगे बढ़कर शिशु का मुख देखकर उसे आशीर्वाद क्यों नहीं दे रहे हैं। अतः उन्होंने इसका कारण शनिदेव से ही पूछा–

''क्या आपको खुशी नहीं हो रही है ? प्रसन्नता नहीं हो रही है ? आप क्यों नहीं आगे बढ़कर मेरे पुत्र को आशीर्वाद दे रहे है ? मेरे पुत्र की तरफ आप क्यों नहीं दृष्टिपात कर रहे है ?''

यह सुनकर शनिदेव ने सिर झुकाए हुए अत्यन्त विनम्रता से कहा–''मां। ऐसा करने के लिए आप मुझे न कहें, क्योंकि मैं नहीं चाहता हूं कि इस कोमल शिशु का अनिष्ट हो।''

यह सुनकर माता पार्वती को उनकी बात पर भरोसा नहीं हुआ और उन्होंने आज्ञा दी–''तुम आगे आवो और बालक को देखकर आशीर्वाद दो।''

अत्यन्त विवश होकर शनिदेव ने थोड़ा सा सिर उठाकर बालक की ओर देखा, तो उनकी दृष्टि पड़ते ही शिशु का सिर धड़ से अलग हो गया। यह देखकर पार्वती को बहुत कष्ट हुआ और क्रोध भी आया, किन्तु वे शनि को कुछ कह भी नहीं पा रही थीं, क्योंकि आज्ञा उन्होंने स्वयं दी थी। फिर भी उनके मुंह से निकल गया – ''भगवान शिव ही बचाएं, शनि की दृष्टि से।''

एक और प्रसंग है – ''रोहिणी शटक भेदन'' से सम्बन्धित, जो इस प्रकार है – ज्योतिषियों ने जब नीलम सी कांति वाले शनिदेव को कृत्तिका नक्षत्र के अन्तिम चरण में देखा तो भयभीत हो गए।'' रोहिणी शटक भेदन देवताओं के लिए भी दुःखदायी होता है तथा राक्षस भी इससे भयभीत हो जाते है। सभी राजाओं के लिए यह परेशानी का कारण था, राजा दशरथ जो कि महा तेजस्वी व ईश्वर भक्त थे,

उनका रथ नक्षत्र मण्डल को भी पार करने की शक्ति रखता था।

बहुत सोच–विचार कर भी जब कोई हल न निकला, तो वे अपने अलौकिक अस्त्र–शस्त्र लेकर "नक्षत्र मण्डल" की ओर चल दिए। वे सूर्य से भी ऊंचे उठकर रोहिणी पृष्ट की ओर गए। वहां से उन्होंने शनिदेव को कृत्तिका से रोहिणी में प्रवेश को तत्पर जानकर अलौकिक संहाशस्त्र का प्रयोग करने हेतु अपने आप को संयोजित किया। तब शनिदेव आपने सम्पूर्ण दिव्य स्वरूप में प्रकट हुए और उन्होंने राजा दशरथ को साधुवाद देते हुए उनकी वीरता की प्रशंसा की। शनिदेव ने उनसे प्रसन्न होकर उनसे वरदान मांगने को कहा।

राजा दशरथ ने शनिदेव से कहा, कि यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो कृपया मुझे यह वरदान दें, कि "जब तक पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र रहें – आप रोहिणी शटक भेदन नहीं करेंगे।"

शनिदेव ने तुरन्त कहा – "तथास्तु।"

इस प्रकार वरदान प्राप्त कर वे शनिदेव की स्तुति करने लगे। "शनि ने वरदान दिया, कि जो मनुष्य श्रद्धा, भक्तिपूर्वक मेरी विधिवत" यंत्र साधना करेगा उसे कभी कोई दुःख नहीं सतायेगा और वह हमेशा प्रसन्न रहेगा।

इस प्रकार शनिदेव लोभियों का लोभ खत्म करने वाले तथा अपने भक्तों को सुख प्रदान करने वाले हैं। दुष्टों का संहार करना उनका स्वभाव है।

इन प्रसंग से स्पष्ट होता है कि शनि मात्र विध्वंशकारी ग्रह ही नहीं अपितु साधकों पर अपार कृपा करने वाले देव भी हैं।

ऋषि–महर्षियों की परम्परा शास्त्र से ऐसी कुछ दुर्लभ साधना विधियां भी है, जिनसे शनि की तीव्रता को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। जितनी तीव्रता से विंद्धशकारी सिद्ध होते हैं, उतनी ही तीव्रता से– निम्न प्रयोग विधि द्वारा यंत्र साधना के माध्यम से कल्याणकारी भी होते हैं। आप लोगों के जीवन की गति का सही ढंग से निरूपण हो सके, इसी हेतु यह दुर्लभ और सरल, अति सरल यंत्र साधना प्रस्तुत की जा रही है, क्योंकि शनिदेव की उपासना करने का, सिद्ध यंत्र धारण करने का तात्पर्य यही है कि व्यक्ति जीवन में गम्भीरता, पौरूष, साहस और सफलता प्राप्त करें।

## *शनिदेव यंत्र निर्माण व साधना विधि*

| | | |
|---|---|---|
| १२ | ७ | १५ |
| १३ | ११ | ९ |
| ८ | १५ | १० |

इस पवित्र यंत्र राज का निर्माण "रवि पुष्य रोग में" अथवा किसी भी शनिवार को कर सकते हैं। यंत्र निर्माण अनार की कलम, काजल की स्याही द्वारा भोजपत्र पर करें। पूजन प्रातः बह्म मुहुर्त में अर्थात पांच बजे प्रातः प्रारम्भ करें। स्नानादि से पवित्र होकर काले या गहरे नीले वस्त्र धारण करें। पूर्व मुख होकर कम्बल के आसन पर बैठे। सामने आम लकड़ी

का सिंहासन काले रंग में रंगा हुआ रखे और उस पर काले वस्त्र का आसन बिछावें। इसं साधना में गुरू से प्राप्त किया हुआ "सिद्ध शनिदेव यंत्र" प्राप्त करना अति आवश्यक माना गया है क्योंकि साधना में त्रुटि होने पर साधक को जान भी गंवाना पड़ सकता है, गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध शनि यंत्र साधना से पूर्व सिंहासन पर स्थापित रहने से साधक की सदैव रक्षा होती है, उन पर छोटी–छोटी त्रुटियों की कोई सजा नहीं देते बल्कि हर हाल में उन्हें सफलता प्रदान करते हैं, इसलिए किसी भी साधना में, यंत्र साधना से गुरू यंत्र स्थापित करना आवश्यक माना गया है।

गुरू यंत्र लोहे के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित करें। धूप–दीप जगावें। अपने सामने भूमि पर काजल त्रिभुज बनाएं और उस पर एक तांम्र पत्र रखें, ताम्र पत्र पर भोज पत्र रखकर स्वयं यंत्र निर्माण करें। फिर स्वयं निर्मित यंत्र को गुरू यंत्र वाले प्लेट में सिंहासन पर रख दें। यंत्र के ऊपर काजल से रंगे हुए चावल, काले पुष्प अथवा सफेंद पुष्प काजल से रंगा हुआ, गंगाजल, सफेद चन्दन चढ़ावें और हर वस्तु चढ़ाते समय – "ॐ शं ॐ मंत्र का उच्चारण करते रहें। इसके पश्चात् निम्न करन्यास तथा ह्रदयादिन्यास सम्पन्न करें –

### करन्यास

ॐ शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः।
मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः।।
अथोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः।
कृष्णांकाय अनामिकाभ्यां नमः।।
शुष्कोदशय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
छायात्मजाय करतल कर पृष्टाभ्यां नमः।।

### ह्रदयादिन्यास

ॐ शनैश्चराय ह्रदयाय नमः।
मध्यगतये शिरसे स्वाहा।
अथोक्षजाय शिखायै पषट्।
छायात्मजाय अस्त्राय फट्।।

अब शनिदेव के सहयोगी देवता "यम" का ध्यान करें॥

### शनि के सहयोगी देवता "यम देवता" का ध्यान (करजोड़ कर ध्यान करें)

पायः संचुतमे घसन्निभतनुः प्रघोतनस्यात्मजो,
नृणां पुण्यकृतां शुभावहवपुः पापीयसां दुःखकृत।
श्री मर्याक्षिणादिक् पतिमर्हिषणो भूषा भरालंग कृतों,
ध्येयः संयमनिपतिः पितृगण स्वामी यमो दण्डभूत।।

इसके पश्चात् रूद्राक्ष की माला से 24 माला निम्न मंत्र का जप करें–

"ॐ शं शनैश्चराय सशक्तिकाय सूयोत्मजाय नमः।।"

### शनिदेव ध्यान मंत्र

कोणस्थः पिंगलो वभुः कृष्णो रौद्रान्त को यमः।
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्लादेन संस्तुतः।।
एतानि दक्ष नामानि प्रातरूत्थाय यः पठेत।
शनिश्चर कृता पीड़ा न कदाचित भविष्यति।।

अब दोनों अंजुली में पुष्प भरकर भगवान शनि देव को निम्न मंत्र से पुष्पांजलि समर्पित करें–

### पुष्पांजलि मंत्र

नीलद्युतिं भूलधंर किरीटिनं गृघ्रस्थितं त्रासकरं धनुर्द्धरम्।

पुष्पांजलि समर्पित करने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें, तत्पश्चात् यंत्र को तांबे के ताबीज में भरकर, काले या नीले रंग के धागों के साथ गले में धारण करें, तो शनिदेव प्रसन्न हो जाते हैं और जहां अनिष्ट प्रदान करना था वहां सफलता, शुभता, प्रसन्नता और धन जन सुख सम्पति और पुत्र रत्न की प्राप्ति कराते हैं।

उपरोक्त साधना करके अनेकों व्यक्ति सुखी हो चुके हैं।

## शनिदेव की "ढैय्या व साढ़े साती दोष" निवारण हेतु अद्भुत चमत्कारी यंत्र

### ढैय्या व साढ़ेसाती विवरण

साधकों और पाठकों को यह जानकारी अवश्य होनी चाहिए कि "शनि की साढ़ेसाती" का क्या तात्पर्य है और किस राशि पर यह कब विशेष प्रभाव डालती है। इसके लिए आपको किसी ज्योतिषी से सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है, आप स्वयं विवेचन कर यह जान सकते हैं, कि किस पर साढ़ेसती कब प्रारम्भ हो रही है और इसका कब तक प्रभाव है।

आपको यह तो जानकारी है, कि आपकी कौन सी राशि है, आपका जो चलित नाम है, जो कि स्कूल, कार्यालय अथवा व्यापार में प्रयोग में आता है, उस नाम से ही अपनी राशि जानें।

शनि एक राशि पर ढाई वर्ष विचरण करता है। वर्तमान समय में 17/4/98 से यह मेष राशि में आया है और मेष राशि में यह ढाई वर्ष तक लगभग 2000 तक रहेगा।

अक्तूबर 2000 के बाद यह वृष राशि में विचरण करेगा और ढ़ाई वर्ष तक रहेगा, इस प्रकार यह बारह राशियों का भ्रमण उन्नीस वर्ष में सम्पन्न करता है।

शनि का प्रभाव सबसे अधिक जिस राशि पर वह भ्रमण कर रहा है, उस राशि पर तथा उसकी एक राशि पहले और उसकी एक राशि बाद पर भी यह "साढे–साती" के रूप में प्रभावकारी रहता है।

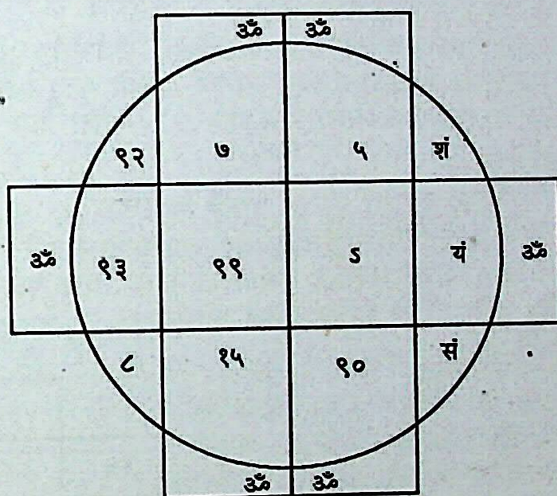
वर्तमान समय में यह मेष राशि में चल रहा है, अतः इसका प्रभाव मीन, मेष और वृष राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष है।

उपरोक्त गणना से आप अपने परिवार के सभी सदस्यों के सम्बन्ध में जान सकते हैं, कि किसकी साढ़े साती चल रही है।

यदि परिवार के किसी भी एक प्रमुख सदस्य पर साढ़े–साती चल रही है, तो उसको होने वाले कष्ट का प्रभाव परिवार के दूसरे सदस्यों पर अवश्य पड़ता है, क्योंकि परिवार अपने आप में एक इकाई है।

यदि "साढे साती" के प्रभाव से पीड़ित हैं तो निम्न यंत्र का निर्माण किसी भी शनिवार को "शनिदेव यंत्र निर्माण व साधना विधि" के अनुसार पूजन व जप करके जीवन सार्थक करें–

## शनि साढ़ेसाती यंत्र स्वरूप




यंत्र जप–पूजन समाप्त होने के पश्चात्–यंत्र को ताबीज (लोहे की धातु से बना हुआ) में भरकर, गले में धारण कर लें, तो साढ़े साती के दोष से साधक को शनिदेव मुक्त कर देते हैं और साधन धन्य–धन्य हो जाता है, फिर क्या मतजाल है जो दुनियाँ वाले उनका कुछ बिगाड़ सके। उपरोक्त यंत्र पूर्व काल के रचित भोजपत्र पर लिखे हुए महर्षि ब्यास की लिखी हुई, संग्राहालय में संयोजित तंत्र शास्त्र से उद्धत की जा रही है, जिनसे हजारों साधक रंक से राजा के समान हो रहे हैं।

## राहु ग्रह अनिवष्वट की निवारक यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| १३ | ८ | १५ |
| १४ | १२ | १० |
| ९ | १६ | ११ |

इस यंत्र राज का निर्माण उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के शनिवार के दिन अष्टगंध की स्याही, अनार की कलम से भोजपत्र पर करें। उपरोक्त दिन प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर काल या नीले आसन पर पूरब मुंह होकर बैठें। धूप–दीप जलावें। आम तख्त (पीढ़ा) या सिंहासन पर नीले वस्त्र का आसन बिछावें।

तत्पश्चात् यंत्र निर्माण कर तांबे के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित करें। फिर निम्न मंत्र पढ़ते हुए, हाथ जोड़कर राहु का ध्यान करें–

### राहु ध्यान मंत्र

"ॐ कयानिश्चत्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कयाश्चिष्ठया वृता राहेव ॐ।।

अब राहु के अधिदेवता "काल" का ध्यान करें–

### राहु के सहयोगी देवता "काल" का ध्यान मंत्र

"काल" राहु ग्रह के सहयोगी देवता हैं। संसार के समस्त पदार्थो पर काल का प्रभाव व्याप्त होता है। प्रत्येक प्राणी काल द्वारा ही संचालित है। काल की वन्दना इस मंत्र से करें :–

स एव कालः भुवनस्य गोप्ता विश्वाधियः सर्वभूतेषुगूढ़।
यस्मिन युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्य त्वमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिन्त्।।

इसके पश्चात् राहु का निम्न मंत्र का 11 माला जप करें :–

### राहु यंत्र साधना मंत्र

"ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः"।

इस जप के पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें, तत्पश्चात् यंत्र को तांबे के ताबीज में भरकर, नीले धागे के साथ गले में धारण करें, तो राहु के अनिष्टों से मुक्ति मिल जाएगी।

### केतु ग्रह अनिष्ट निवारण यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| १५ | १ | १६ |
| १५ | ३१ | ११ |
| १० | १८ | १२ |

इस यंत्रराज का निर्माण पुष्य नक्षत्र के शनिवार के दिन, अष्टगंध की स्याही से, अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर करें। उपरोक्त दिन प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर पूजन स्थल पर, काले रंग के सिंहासन (आम लकड़ी का) पर काले वस्त्र का आसन बिछावें। स्वयं भी कम्बल (काला) के आशन पर बैठे। धूप–दीप जलावें। तत्पश्चात् केतु का पंचोपचार पूजन गंगाजल, अक्षत, पुष्प, चन्दन व नैवेद्य (मिठाई फल आदि) द्वारा करें, फिर यंत्र निर्माण करें। निर्मित यंत्र को तांबे के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित करें। तत्पश्चात् निम्न मंत्र द्वारा केतु का ध्यान करें।

### केतु ग्रह ध्यान मंत्र

"ॐ केतुं कृष्णत्र केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समषद् भिरजा यथा केतवे ॐ।।"

अब केतु ग्रह के सहयोगी देवता "चित्रगुप्त" का ध्यान करें।

### केतु ग्रह के सहयोगी देवता चित्रगुप्त का ध्यान

अपीच्यवेशं स्वाकांर द्विभुंज सौम्यदर्शनम्।
दक्षिणे लेखनीं चैव इदं वामे च पत्र कम्।।
पिंगलश्मश्रु के शाक्षं चित्रगुप्तं विभावयेत्।।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का 11 माला जप रूद्राक्ष की माला से करें।

## राहु यंत्र साधना जप मंत्र

"ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।।"

जप पूर्ण होने के पश्चात् यंत्र को प्रणाम करें, तत्पश्चात् यंत्र को तांबे के ताबीज में भरकर, काले धागे के साथ गले में धारण करें, तो केतु ग्रह के अनिष्टों से मुक्त होकर, सुखी जीवन जियेंगे।

पाठको ! नवग्रह शान्ति जीवन में भाग्योदय के लिए एक श्रेष्ठ उपाय है। ग्रहों के कुप्रभाव के कारण ही व्यक्ति जीवन में कष्ट भोगता है और उन्नति नहीं कर पाता है और अपने लक्ष्य को पाने में असफल सिद्ध होता है। अतः मानव कल्याण हेतु उपरोक्त नवग्रह साधना, यंत्र साधना विधि जो उद्धत किया हूं, वे अत्यन्त ही सरल प्रयोग हैं, जिसे हजारों वर्ष पूर्व महर्षियों द्वार रचित पौरणिक तंत्र शास्त्र से पेश किया हूं। उपरोक्त नवग्रह यंत्र साधना के सभी प्रयोग प्रमाणिक हैं और पूर्ण विश्वसनीय है, जिसका प्रयोग करके हजारों यंत्र धारक जीवन सफल बना चुके हैं। आप भी इन प्रयोगों से लाभन्वित हों, यही हमारी कामना है।

## यंत्र निर्माण में विधि-विधान क्यों आवश्यक? मंत्र-जप, गुरू द्वारा सिद्ध यंत्र की आवश्यकता क्यों?

यंत्र-मंत्र साधना का मार्ग हो या जीवन का कोई अन्य पक्ष, व्यक्ति के मन में तरह-तरह के प्रश्न उमड़ते-घुमड़ते ही रहते हैं, प्रकृति के अनेक रहस्यों को देखता हुआ वह उनके बारे में जानने को उत्सुक रहता है, कि आखिर ऐसा क्यों है ? इसके पीछे क्या कारण है ?

प्रायः परम्परागत तरीके से चाहे वे हमें माता पिता से मिले हों या गुरू से मिले हों, कई बार अनेक क्रियाएँ व संस्कार हमें जीवन में उतार लेने पड़ते हैं। चली आ रही परिपाटी को हम भी अपने जीवन में उतार लेते हैं, फिर भी कहीं न कहीं मन के किसी कोने में यह प्रश्न रह ही जाता है-ऐसा क्यों किया जाता है या अमुक क्रिया क्यों की जाती है ?

इसी क्यों का उत्तर न जानने से जब कोई प्रबुद्ध वर्ग का व्यक्ति कोई प्रश्न करता है कि आपको इन यंत्र-मंत्र साधनात्मक क्रियाओं से क्या हो जायगा, तो आपके पास कोई ठोस उत्तर नहीं होता । और वह इन क्रियाओं को मात्र ढकोसला कह कर आपको हतोत्साहित कर देता है। आपके मन में भी संशय की एक हल्की सी रेखा खिंच जाती है।

गीता में भी कहा गया है-"संशयात्मा-विनश्यति" अतः इस संशय का, और यंत्र-मंत्र साधना सम्बन्धी प्रत्येक क्यों का "निदान करने हेतु ही इस स्तम्ब को प्रारम्भ किया जा रहा है, जिससे नए साधक अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

# यंत्र-मंत्र साधना में गुरू द्वारा प्राप्त सिद्ध यंत्र सिंहासन पर स्थापित करना, व मंत्र जप की आवश्यकात क्यों?

सद्गुरूदेव के स्वरूप एवं लीला को जानना-"सहज नहीं कहा जा सकता।" गुरू तत्व, गुरू शिष्य सम्बन्ध, गुरू यंत्र कृपा, गुरू योग इत्यादि क्रियाओं की-विशद विवेचना से भारतीय संस्कृति की आर्य परम्परा में, उपनिषदों में गुरू की परम महत्ता स्वीकार की गई है। माया से आवद्ध इस संसार के दुःखों से त्रस्त जीवों के उद्धार हेतु गुरू ही एकमात्र गति हैं। शास्त्रों में गुरू को शंकर स्वरूप माना गया है, क्योंकि वे ही वास्तव में "शं" अर्थात् "कल्याण" आत्मोद्धार एवं "कर" अर्थात् करने वाले हैं। वस्तुतः श्री भगवान की अनुग्रह शक्ति ही शुभ योग, शुभ आग्रह और शुभ सन्धि द्वारा केन्द्री भूत होकर शुरू शक्ति के रूप में मूत हो अभिव्यक्त होती है।

गुरूदेव की उपस्थिति बिना, उनकी छत्रछाया के बिना कोई भी यंत्र-मंत्र सिद्धि मिल ही नहीं सकती। सभी साधकों की यंत्र-मंत्र सिद्धि काल में गुरू का उपस्थित होना भी मुश्किल है अतः इसी समस्या का समाधान हेतु गुरू द्वारा सिद्ध यंत्र सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। गुरू द्वारा दिए गये-"सिद्ध यंत्र राज" में गुरू की शक्ति छिपी रहती है, जो सिंहासन पर स्थापित होकर, "रिमोट कंट्रोल बनकर" साधक के तन-मन ज्ञान व मस्तिष्क को संचालित करते हैं और साधना काल में आने वाली समस्त त्रुटियों का नाश करते रहते हैं, परिणाम स्वरूप साधक "प्रथम बार में ही" साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है, इसीलिए "गुरू द्वारा सिद्ध यंत्र" यंत्र मंत्र साधना काल में, पूजन स्थल के सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है।

सिद्ध गुरू यंत्र को शक्ति सिंहासन पर स्थापित होकर, साधक के प्राण तत्व में समाहित हो जाता है और शिष्य अर्थात् साधक के मन को साधना में लीन कर देता है।

सद्गुरूदेव जानते हैं, कि साधक के भीतर ऊर्जा है और जब उसका संचारण बाहर की दिशा में होता है, तो वह ऊर्जा हजार दिशावों से बाहर निकलकर छिन्न भिन्न हो जाती है, उसका प्रभाव तीव्रतम नहीं हो सकता। सिद्ध गुरू यंत्र उस ऊर्जा को भीतर से उर्ध्वगति प्रदन करता है, उसे संयोजित करके साधना सफलता की दिशा में मोड़ देता है। गुरू यंत्र इस ऊर्जा के वर्तुल को निरन्तर नहीं होने देता है। यंत्र की शक्ति साधक के ह्दय में अवस्थित "आज्ञा चक्र" को स्पर्श करता है, तब आज्ञा चक्र शरीर में स्थित नीचे पुर, अनाहत, विशुद्ध चक्रों में ऊर्जा का प्रवाह, शक्ति का प्रवाह जहां भी अवरूद्ध हो गया है, उसे हटाकर आज्ञा चक्र की ओर ऊर्ध्वगति देता है और यह आज्ञा चक्र से सहस्त्रार में स्थापित हो जाता है, तो साधना काल के रोग, शोक, अनिष्ट, ब्याधि आदि समाप्त हो जाते हैं और साधक अपनी साधना में प्रथम बार में ही सफल हो जाता है।

पाठको ! मंत्र जप की आवश्यकता यंत्र सिद्धि काल में आवश्यकता क्यों पड़ती है ? इसे ऐसे समझें।

मनुष्य के मुख से जो भी शब्द निकलता है, वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है। वह शब्द निकलता है, वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है। वह शब्द या ध्वनि कभी मिटता नहीं है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। महाभारत काल में भी जो ध्वनि संवाद हुए थे, वे आज भी वायुमण्डल में व्याप्त है, आवश्यकता है उस "FREQUENCY" को पकड़ने की जिसके माध्यम से हम उस ध्वनि को सुन सकें।

वैज्ञानिकों के अनुसार ध्वनि कम्पनों के माध्यम से जो कार्य सामान्यतः असम्भव लगते हैं, उन्हें भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु ध्वनि कम्पनों में विशिष्ठ गुण हों।

डॉ० फ्रिस्टलोव ने ध्वनि कम्पनों के माध्यम से शरीर के परमाणुवों में कम्पन उत्पन्न कर दिखाया। इसी कम्पन से शारीरिक रोगों को ध्वनि तरंगों द्वारा दूर करने में सफलता मिली है। जेट विमान के तीव्र ध्वनि तरंगों से ही खिड़कियों के शीशे चटक जाते हैं या टूट जाते हैं, इस प्रकार ध्वनि तरंगों का प्रभाव पड़ता है और निर्विवाद रूप से होता है।

मंत्र का उच्चारण करने से भी एक विशिष्ठ ध्वनि कम्पन उत्पन्न होता है "ईथर" ("ईथर" ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त एक माध्यम या पदार्थ है, जटां वायु भी नहीं है वहां यह ईथर है ही) में फैल जाता है। इसी ईथर में ध्वनि तरंगें चलती है। जब सांधक या मंत्र साधना में "मंत्र" का जप करता है तो मंत्र से उत्पन्न कम्पन ऊपर उठते हुए "ईथर" के माध्यम से कुछ ही क्षणों में यंत्र या मंत्र देव तक पहुंच कर लौट आतें हैं लौटते समय उन कम्पनों में यंत्र देव की सूक्ष्म शक्ति, तेजस्विता एवं प्राणवत्ता व्याप्त हो जाती है, जो पुनः साधक के शरीर से टकरा कर उसमें उन गुणों को बढ़ा देती है। जिससे साधक है। इसी लिए शास्त्रों में मंत्र जप की महत्ता निर्धारित की गई है।

## यंत्र-मंत्र साधना में कितने साधकों को "सफलता" पहली बार ही क्यों नहीं मिलती?

यहां एक ध्यान देने योग्य और भी बात है, कि "साधक" उपहास का पात्र तब ही बनता है, जब तक उसे कोई यंत्र–मंत्र सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती और यही बात प्रसिद्ध बैज्ञानिकों के जीवन में भी लागू हुई है, जब तक उन्होंने कोई आविष्कार कर नहीं लिया, लोगों ने उपहास ही किया, कि क्या पागलों की तरह हर समय अपनी प्रयोगशाला में बन्द रहता है। होता यह है कि जब तक व्यक्ति प्रयासरत रहता है, वह उपहास का पात्र, ईर्ष्या यह अलग हटकर करना चाह रहा है, इसी कारण से वे उसे हतोत्साहित करने लगते हैं, वे शुभ चिन्तक नहीं

अशुभचिन्तक होते हैं और जब एक दिन व्यक्ति प्रसिद्धि पा लेता है, तो वही लोग यशोगान करते हैं, कि अमुक को मैंने अथक परिश्रम करते देखा है, अमुक अपनी प्रयोगशाला में घण्टों जुटे रहते थे, या साधन में बैठे रहते थे, भूख–प्यास की सुध–बुध छोड़कर।

आज भी हजारों लोग हैं, अनेकों मेरे शिष्य ही हैं, जिन्होंने यंत्र–मंत्र साधनाओं में सफलता प्राप्त की है इन्हीं साधनात्मक विधि–विधान को अपनाकर और जब यंत्र–मंत्र–तंत्र को विज्ञान कह रहे हैं, तो ऐसा हो ही नहीं सकता, कि वही विधि एक व्यक्ति अपनाए उसे सफलता मिले और दूसरे को न मिले।

सफलता तो इसलिए नहीं मिलती, क्योंकि साधक पूर्ण रूप से अनुभवी नहीं होता है। गुरू यंत्र का उपयोग नहीं करता है। रेडियो में जब गाने सुनने होते हैं, तो उसकी सूई को एक निश्चित आवृति (FREQUENCY IN MHZ O KHZ)पर टयून (TUNE) किया जाता है। यदि 500 KHZ का स्टेशन है तो किसी अन्य FREQUENCY पर आवाज नहीं आयगी या साफ नहीं आयगी और कई बार यह सेट्टिंग ठीक से नहीं हो पाती 499 KHZ या 501 KHZ ही रह जाती है। यही हाल साधनाओं में भी होता है, हमारे मन की भी सेटिंग ठीक ढंग से नहीं हो पाती है, कभी घर में अशान्त वातावरण होता है, तो कभी मंत्र का उच्चारण अस्पष्ट, अशुद्ध होता है या यंत्र प्रामाणिक नहीं होते आदि।

इन सब कारणों से साधना में कई बार साधक लक्ष्य के बिल्कुल निकट भी पहुंचकर सफल नहीं हो पाता। वह 499 या 501 पर पहुंचकर निराश हो जाता है, परन्तु कुछ बार–बार प्रयास करने पर, जिस तरह वह 499 पर पहुंचा था 500 पर भी पहुंच सकता है, वह पहुंचाने की विधि गुरू यंत्र रूपी शक्ति रिमोट कंट्रोल के पास होता है, जो इसे प्राप्त कर साधना आरम्भ करता है तो उस साधक के समक्ष ''सिद्धि''हाथ बांधे खड़ी हो जाती है।

पाठको ! अब इस परम पवित्र पतित पावन पुस्तक को यहीं विराम देता हूँ। पुस्तक में वर्णित समस्वत गंडे, ताबीज, टोटके, नवग्रह यंत्र, सप्तमाता (सप्तग्रहों की माताएँ) यंत्र आदि समस्त यांत्रिक साधनाएँ प्रामाणिक है, इस पर स्वयं मैंने पूर्ण रिसर्च किए हैं, अतः भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं, बेझिझक उपयोग करें, यंत्र सिद्ध करें, आपका जीवन सुखद हो, इन्हीं शुभ कामनावों के साथ।

तांत्रिक
वाई. एन. झा ''तूफान''

॥ इति शुभम ॥






अमित पॉकेट बुक्स



